

सिरि उसहदेव सामिस्स णमो । सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदयपासणाहाणं णमो । नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स । सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो । सिरि सुगुरु - देवाणं णमो । ५५५ ३८ जीयकप्प - सुत्तं पंचम छेयसुत्तं कय - ५५५ पयवण-प्पणामो वोच्छं पच्छित्तदानं - संखेवं जीयव्वहार - गंय जीयस्स विसोहणं परमं ॥१॥ संवर - विनिज्जराओ मोक्खस्स प्हो तवो प्हो तासिं तवसो य पहाणं पच्छित्तं जं च नाणस्स ॥२॥ सारो चरणं तस्स वि नेव्वाणं चरण - सोहणत्थं च पच्छित्तं तेण तयं नेयं मोक्खत्थिणाऽवस्सं ॥३॥ तं दसविहमालोयण पडिकमणोभय विवेग वोस्सग्गे तव छेय - मूल - अणवक्कया य पारंचिए चेव ॥४॥ करणिज्जा जे जोगा तेसुवउत्तस्स निरइयारस्स छउमत्थस्स विसोही जइणो आलोयणा भणिया ॥ ५ ॥ आहाराइ - ग्गहणे तह बहिया निग्गमेसुऽणेगेसु उच्चार - विहारावणि - चेइय - जइ - वंदणाईसु ॥६॥ जं चऽन्नं करणिज्जं जइणो हत्थ - सय - बाहिरायरियं अवियडियम्मि असुद्धो आलोएंतो तयं सुद्धो ॥७॥ कारण - विणिग्गयस्स यस - गणाओ पर - गणागयस्स वि य उवसंपया - विहारे आलोयण - निरइयारस्स ॥ ८॥ गुत्ती - समिइ - पमाए गुरुणो आसायणा विनय - भंगे इच्छाईणमकरणे लहुस मुसाऽदिन्न - मुच्छासु ॥९ ॥ अविहीइ कास - जंभिय - खुय - वायासंकिलिट्ठ - कम्मसेसु कंदप्प - हास - विगहा - कसाय - विसयाणुसंगेसु ॥ १० ॥ खलियस्स य सव्वत्थ वि हिंसमणावज्जओ जयंतस्स सहसाऽणाभोगेण व मिच्छाकारो पडिक्कमणं ॥ ११ ॥ ओभोगेण वि तणुएसु नेह - भय - सोग - वाउसाईसु कंदप्प - हास - विगहाईएसु नेयं पडिक्कमणं ॥ १२ ॥ संभम - भयाउरावइ - सहसाऽणभोगऽप्प - वसओ वा सव्व - वयाईयारे तदुभयमासंकिए चेव ॥ १३ ॥ दुच्चिंतिय - दुब्भासिय - दुच्चेट्ठिय - एवमाइयं बहुसो उवउत्तो वि न जाणइ जं देवसियाइ - अइयारं ॥ १४ ॥ सव्वेसु वि बीय - पए दंसण - नाण - चरणावराहेसु आउत्तस्स तदुभयं सहसक्कराराइणा चेव ॥१५॥ पिंडोवहि - सेज्जाई गहियं कडोगिणोवउत्तेण । पच्छा नायमसुद्धं सुद्धो विहिणा विगिंचंतो ॥ १६ ॥ कालऽद्धाणाइच्छिय - अनुग्गयत्थमिय - गहियमसद्धो उ कारण - गहि - उव्वरियं भत्ताइ - विगिंचियं सुद्धो ॥ १७॥ गमणागमण - विहारे सुयम्मि सावज्ज - सुविणयाईसु नावा - नइ - संतारे पायच्छित्तं विउस्सग्गो ॥ १८ ॥ भत्ते - पाणे सयणासणे य अरिहंत - समण - सेज्जासु उच्चारे पासवणे पणवीसं होंति ऊसासा ॥ १९ ॥ हत्थ - सय - बाहिराओ गमणाऽऽगमणाइएसु पणवीसं पाणिवहाई - सुविणे सयमट्ठसयं चउत्थम्मि ॥ २० ॥ देसिय - राइय - पक्खिय - चाउम्मास - वरिसेसु परिमाणं सयमद्धं तिन्नि सया पंच - सयऽट्ठत्तरसहस्सं ॥ २१ ॥ उद्देस - समुद्देसे सत्तावीसं अनुणवणियाए । अट्टेव य ऊसासा पट्टवण - पडिक्कमणमाई ॥ २२ ॥ उद्देसऽज्जयण - सुयक्खंधंगेसु कमसो पमाइस्स कालाइक्कमणाइसु नाणायाराइयारेसु ॥ २३ ॥ निव्विगइय - पुरिमइडेगभत्त - आयंबिलं चणागाढे पुरिमाई खमणंतं आगाढे एवमत्थे वि ॥ २४ ॥ सामन्नं पुण सुत्ते मयमायामं चउत्थमत्थम्मि अप्पत्ताऽपत्ताऽवत्त - वायणुद्देसणाइसु य ॥ २५ ॥ कालाविसज्जणाइसु मंडलि - वसुहाऽपमज्जणाइसु य निव्वीइयमकरणे अक्ख - निसेज्जा अभत्तट्टो ॥ २६॥ आगाढाणागाढम्मि सव्व - भंगे य देस - भंगे य जोगे छट्ट - चउत्थं चउत्थमायंबिलं कमसो ॥ २७ ॥ संकाइएसु देसे खमणं मिच्छोवबूहणाइसु य पुरिमाई खमणंतं भिक्खु - प्पभिईण व चउणहं ॥ २८ ॥ एवं चिय पत्तेयं उवबूहाईणमकरणे जइणं आयामंतं निव्वीइगाइ पासत्थ - सइडेसु ॥ २९॥ परिवाराइ - निमित्तं ममत्त - परिपालणाइ वच्छल्ले साहम्मिओ त्ति संजम - हेउं वा सव्वहिं सुद्धो ॥ ३० ॥ एगिंदियाण घट्टणमगाढ - गाढ - परियावणुद्वणे । निव्वीयं पुरिमइढं आसणमायामं कमसो ॥ ३१ ॥ पुरिमाई खमणंतं अनंत - विगलिंदियाण पत्तेयं पंचिंदियम्मि एगासणाइ कल्लाणयमहेगं ॥ ३२ ॥ मोसाइसु मेहुण - वज्जिएसु दव्वाइ - वत्थु - भिन्नेसु हीणे मज्झुकुकोसे आसणमायाम - खमणाइं ॥ ३३ ॥ लेवाडय - परिवासे अभत्तट्टो सुक्क - सन्निहीए य इयराए छट्ट - भत्तं अट्टमगं सेस - निसिभत्ते ॥ ३४ ॥ उद्देसिय - चरिम - तिगे कम्मसे पासंड - स - घर - मीसे

सौजन्य :- श्री हंसराज गेलाभाई शाह परिवार नवावास (डरह) प्रेरणा - बीकेशकुमार (रायछा)

य बायर - पाहुडियाए सपच्चवायाहडे लोभे ॥ ३५ ॥ अइरं अनंत - निक्खित्त - पिहिय - साहरिय - मीसयाईसु संजोग - स - इंगाले दुविह - निमित्ते य खमणं तु ॥ ३६ ॥ कम्मुहेसिय - मीसे धायाइ - पगासणाइएसुं च पुर - पच्छ - कम्म - कुच्छिय - संसत्तालित्त - कर - भत्ते ॥ ३७ ॥ अइरं परित्त - निक्खित्त - पिहिय - साहरिय - मीसयाईसु अइमाण - धूम - कारण विवज्जए विहिय मायामं ॥ ३८ ॥ अज्झोयर - कड - पूईय - मायाऽनंते परंपरगए य मीसानंतानंतरगया इए चे गमासणयं ॥ ३९ ॥ ओह - विभागुहेसोवगरण - पूईय - ठविय - पागडिए लोउत्तर - परियट्टिय - पमिच्च - परभावकीए य ॥ ४० ॥ सग्गामाहड - दहर - जइन्नमालोहडोइरे पढमे सुहुम - तिगिच्छा - संथव - तिग - मक्खिय - दायगो वहए ॥ ४१ ॥ पत्तेय - परंपर - ठविय - पिहिय - मीसे अनंतराईसु पुरिमइढं संकाए जं संकइ तं समावज्जे ॥ ४२ ॥ इत्तर - ठविए सुहुमे ससणिद्ध - ससरक्ख - भक्खिए चेव मीस - परंपर - ठवियाइएसु बीएसु याविगई ॥ ४३ ॥ सहसाऽणाभोगेणव जेसु पडिक्कमणमभिहियं तेसु आभोगओत्ति बहुसो - अइप्पमाणे य निव्विगई ॥ ४४ ॥ धावण - डेवण - संघरिस - गमण - किड्डा - कुहावणाईसु उक्कुट्टि - गीय - छेलिय - जीवरुयाईसु य चउत्थं ॥ ४५ ॥ तिविहोवहिणो विच्चुय - विस्सारियऽपेहियानिवेयणए निव्वीय - पुरिममेगासणाइ सव्वम्मि चायामं ॥ ४६ ॥ हारिय - धो - उग्गमियानिवेयणादिन्न - भोग - दानेसु आसण - आयाम - चउत्थगाइ सव्वम्मि छट्टं तु ॥ ४७ ॥ मुहनंतय - रयहरणे फिडिए निव्वीययं चउत्थं च नासिय - हारविए वा जीएण चउत्थ - छट्टाइं ॥ ४८ ॥ कालऽद्धाणाईए निव्विइयं खमणमेव परिभोगे अविहि - विगिंचणियाए भत्ताईणं तु पुरिमइढं ॥ ४९ ॥ पाणस्सासंवरणे भूमि - तिगापेहणे य निव्विगई सव्वस्सासंवरणे अगहण - भंगे य पुरिमइढं ॥ ५० ॥ एयं चिय सामन्नं तवपडिमाऽभिग्गहाइयाणं पि निव्वीयगाइ पक्खिय - पुरिसाइ - विभागओ नेयं ॥ ५१ ॥ फिडिए सयमुस्सारिय - भग्गे वेगाइ वंदणुस्सग्गे निव्वीइय - पुरिममेगासणाइ सव्वेसु चायामं ॥ ५२ ॥ अकएसु य पुरिमासण - आयामं सव्वसो चउत्थं तु पुव्वमपेहिय - थंडिल - निसि - वोसिरणे दिया सुवणे ॥ ५३ ॥ कोहे बहुदेवसिए आसव - कक्कोलगाइएसुं च लसुणाइसु पुरिमइढं तन्नाई - बन्ध - मुयणे य ॥ ५४ ॥ अज्झुसिर - तणेसु निव्वीइयं तु सेस - पणएसु पुरिमइढं अप्पडिलेहिय - पणए आसणयं तस - वहे जं च ॥ ५५ ॥ ठवणमणापुच्छाए निव्विसओ विरिय - गूहणाए य जीएणेक्कासणयं सेसय - मायासु खमणं तु ॥ ५६ ॥ दप्पेणं पंचिंदिय - वीरमणे संकिलिट्ट - कम्मे य दीहऽद्धाणासेवी गिलाण - कप्पावसाणे य ॥ ५७ ॥ सव्वोवहि - कप्पम्मि य पुरिमत्ता पेहणे य चरिमाए चाउम्मासे वरिसे य सोहणं पंच - कल्लाणं ॥ ५८ ॥ छेयाइमसइहओ मिउणो परियाय - गविवयस्स वि य छेयाईए वि तवो जीएण गणाहिवइणो य ॥ ५९ ॥ जं जं न भणियमिहइं तस्सावतीए दान - संखेवं भिन्नाइया य वोच्छं छम्मासंताय जीएणं ॥ ६० ॥ भिन्नो अविसिट्ठो च्विय मासो चउरो य छच्च लहु - गरुया निव्वियगाई अट्टमभत्तं दानमेएसिं ॥ ६१ ॥ इय सव्वावतीओ तवसो नाउं जह - कम्मं समए जीएण देज्ज निव्वीइगाइ - दानं जहाभिहियं ॥ ६२ ॥ एयं पुण सव्वं चिय पायं सामन्नओ विणिट्टिट्टं दानं विभागओ पुण दव्वाइ - विसेसियं जाण ॥ ६३ ॥ दव्वं खेत्तं कालं भावं पुरिस - पडिसेवणाओ य नाउमियं चिय देज्जा तम्मत्तं हीनमहियं वा ॥ ६४ ॥ आहाराई दव्वं बलियं सुलहं च नाउमहियं पि देज्जा हि दुब्बलं दुल्लहं च नाऊण हीनं पि । ॥ ६५ ॥ लुक्खं सीयल - साहारणं च खेत्तमहियं पि सीयम्मि लुक्खम्मि हीनतरयं एवं काले वि तिविहम्मि ॥ ६६ ॥ गिम्ह - सिसिर - वासासुं देज्जऽट्टम - दसम - बारसंताई । नाउं विहिणा नवविह - सुयववहारोवएसेणं ॥ ६७ ॥ हट्ट - गिलाणा भावम्मि - देज्ज हट्टस्स न उ गिलाणस्स जावईयं वा विसहइ तं देज्ज सहेज्ज वा कालं ॥ ६८ ॥ पुरिसा गीयाऽगीया सहाऽसहा तह सढाऽसढा केई परिणामाऽपरिणामा अइपरिणामा य वत्थूणं ॥ ६९ ॥ तह धिइ - संघयणोभय - संपन्ना तदुभएण हीणा य आय - परोभय - नोभय - तरगा तह अन्नतरगा य ॥ ७० ॥ कप्पट्टियादओ वि य चउरो जे सेयरा समक्खाया सावेक्खेयर - भेयादओ वि जे ताण पुरिसाणं ॥ ७१ ॥ जो जह - सत्तो - बहुत्तर - गुणो व तस्साहियं पि देज्जाहि हीणस्स हीणतरगं झोसेज्ज व सव्व - हीणस्स ॥ ७२ ॥ एत्थ पुण बहुतरां भिक्खुणो त्ति अकयकरणाणभिगया य जंतेण जीयमट्टमभत्तं निव्वियाईयं ॥ ७३ ॥ आउट्टियाइ दप्प - प्पमाय - कप्पेहि वा निसेवेज्जा दव्वं खेत्तं कालं भावं वा सेवओ पुरिसो । ॥ ७४ ॥ जं जीय - दानमुत्तं एयं पायं पमायसहियस्स एत्तो च्विय ठाणंतरमेगं वइडेज्ज दप्पवओ ॥ ७५ ॥ आउट्टियाइ ठाणंतरं च सट्टाणमेव वा देज्जा कप्पेण पडिक्कमणं

तदुभयमहवा विणिद्धिं ॥ ७६ ॥ आलोयण - कालम्मि वि संकेस - विरसोहि - भावओ नाउं हीणं वा अहियं वा तम्मत्तं वा वि देज्जाहि ॥ ७७ ॥ इति दव्वाइ - बहु - गुणे गुरु - सेवाए य बहुतरं देज्जा हीणतरे हीणतरं हीणतरे जाव झोस ति ॥ ७८ ॥ झोसिज्जइ सुबहुं पि हु जीएणऽन्नं तवारिहं वहओ वेयावच्चकरस्स य दिज्जइ साणुग्गहतरं वा ॥ ७९ ॥ तव - गव्विओ तवस्स य असमत्थो तवमसद्दहन्तो य तवसा य जो न दम्मइ अइपरिणाम - प्पसंगी य ॥ ८० ॥ सुबहुत्तर - गुण - भंसी छेयावत्तिसु पसज्जमाणो य पासत्थाई जो वि य जईण पडितप्पिओ बहुसो ॥ ८१ ॥ उक्कोसं तव - भूमिं समईओ सावसेस - चरणो य छयं पणगाईयं पावइ जा धरइ परिआओ ॥ ८२ ॥ आउट्टियाइ पंचिंदिय - धाए मेहुणे य दप्पेणं सेसेसुक्कोसाभिक्ख - सेवणाईसु तीसुं पि ॥ ८३ ॥ तव - गव्वियाइएसु य मूलुत्तर - दोस - वइयर - गएसु दंसण - चरित्तवन्ते चियत्त - किच्चे य सेहे य ॥ ८४ ॥ अच्चन्तोसन्नेसुय परलिंग - दुगे य मूलकम्मे य भिक्खुम्मि य विहिय - तवेऽणवट्ट - पारंचियं पत्ते ॥ ८५ ॥ छेएण उ परिआएऽणवट्ट - पारंचियावसाणे य मूलं मूलावत्तिसु बहुसो य पसज्जओ भणियं ॥ ८६ ॥ उक्कोसं बहुसो वा पउट्ट - चित्तो वि तेणियं कुणइ पहरइ जो य स - पक्खे निरवेक्खो घोर - परिणामो ॥ ८७ ॥ अहिसेओ सव्वेसु वि बहुसो पारंचियावराहेसु अणवट्टप्पावत्तिसु पसज्जमाणो अणेगासु ॥ ८८ ॥ कीरइ अणवट्टप्पो सो लिंग - क्वेत्तर - कालओ - तवओ लिंगेण दव्व - भावे भणिओ पव्वावणाऽणरिहो ॥ ८९ ॥ अप्पडिविरओ - सन्नो न भाव - लिंगारिहोऽणवट्टप्पो जो जत्थ जेण दूसइ पडिसिद्धो तत्थ सो खेत्ते ॥ ९० ॥ जत्तियमित्तं कालं तवसा उ जहन्नएण छम्मासा संवच्छरमुक्कोसं आसायइ जो जिणाईणं ॥ ९१ ॥ वासं बारस वासा पडिसेवी कारणेण सव्वो वि थोवं थोवतरं वा वहेज्ज मुंचेज्ज वा सव्वं ॥ ९२ ॥ वंदइ न य वंदिज्जइ परिहार - तवं सुदुच्चरं चरइ संवासो से कप्पइ नालवणाईणि सेसाणि ॥ ९३ ॥ तित्थयर - पवयण - सुयं आयरियं गणहरं महिद्धियं आसायंतो बहुसो आभिणिवेसेण पारंची ॥ ९४ ॥ जो य स - लिंगे दुट्ठो कसाय - विसए हिं राय - वहगो य राय ग्गमहिसि - पडिसेवओ य बहुसो पगासो य ॥ ९५ ॥ थीणद्धि - महादोसो अन्नोऽन्नासेवणापसत्तो य चरिमट्टाणावत्तिसु बहुसो य पसज्जए जो उ ॥ ९६ ॥ सो कीरइ पारंची लिंगाओ - खेत्तर - कालओ - तवओ य संपागड - पडिसेवी लिंगाओ थीणगिद्धी य ॥ ९७ ॥ वसहि - निवेसण - वाडग - साहि - निओग - पुर - देस - रज्जाओ खेत्ताओ पारंची कुल - गण - संघालयाओ वा ॥ ९८ ॥ जत्थुप्पन्नो दोसो उप्पज्जिस्सइ य जत्थ नाऊणं ततो ततो कीरइ खेत्ताओ खेत्त - पारंची ॥ ९९ ॥ जत्तिय - मेत्तं कालं तवसा पारंचीयस्स उ स एव कालो दु - विगप्पस्स वि अणवट्टप्पस्स जोऽभिहिओ ॥ १०० ॥ एगागी खेत्त - बहिं कुणइ तवं सु - विउलं महासत्तो अवलोयणमायरिओ पइ - दिणमेगो कुणइ तस्स ॥ १०१ ॥ अणवट्टप्पो तवसा तव - पारंची य दो वि वोच्छिन्ना चोदस - पुव्वधरम्मी धरंति सेसा उ जा तित्थं ॥ १०२ ॥ इय एस जीयकप्पो समासओ सविहियाणुकम्माए कहिओ देयोऽयं पुण पत्ते सुपरिच्छिय - गुणम्मि ॥ १०३ ॥

श्री पंचकल्पभाष्यम्

श्रीपंचकल्पभाष्यम् वंदामि भद्दबाहुं पाईणं चरिमसगलसुयनाणीं । सुत्तत्थकारगमिसिं दसाण कप्पे य ववहारे । व्याख्येयं १॥१॥ कप्पंति णामणिप्फणं, महत्थं वत्तुकामतो । णिज्जूहगस्स भत्तीय, मंगलट्टाए संथुतिं ॥२॥ तित्थगरणमोक्कारो सत्थस्स तु आइए समक्खाओ । इह पुण जेणऽज्जयणं णिज्जूढं तस्स कीरति तु ॥३॥ सत्थाणि मंगलपुरस्सराणि सुहसवणगहणधरणाणि । जम्हा भवंति जंति य सिस्सपसिस्सेहिं पचयं (खाइं) च ॥४॥ भत्ती य सत्थकत्तरि तत्तो(तं कय) उवओगगोरवं सत्थे । एएण कारणेण कीरइ आदी णमोक्कारो ॥५॥ वदि अभिवादथुतीए सुभसद्दो णेगहा तु परिगीतो । वंदण पूयण णमणं थुणणं सक्कारमेगट्टा ॥६॥ भद्दन्ति सुंदरन्ति य तुल्लत्थो जत्थ(स्स) सुंदरा बाहू । सो होति भद्दबाहू गोणं जेणं तु बालत्ते ॥७॥ पाएणं लक्खिज्जइ पेसलभावो तु वाहुजुवयलस्स । उववणमतो णामं तस्सेयं बद्दबाहुत्ति ॥८॥ अण्णेवि भद्दबाहू विसेसणं गोत्त(ण्ण)गाहण पाईणं । अण्णेसिं पडविस्सिहे(पिय सिद्धे)विसेसणं चरिमसगलसुतं ॥९॥ चरिमो अपच्छिमो खलु चोदस पुव्वा उ होतिसगलसुतं । सेसाण वुदासट्टा सुत्तकर ऽज्जयणमेयस्स ॥१०॥ किं तेण कयं ? सुत्तं, जं भण्णति तस्स कारतो सो उ? भण्णति गणधारिहिं

सव्वसुयं चेष पुव्वकतं ॥११॥ तत्तोच्चिय णिज्जूढं अणुगहट्टाय संपयजतीणं । सो(तो)सुत्तकारओ कलु स भवति दसकप्पववहारे ॥१२॥ वंदे तं भगवंतं बहुभद्दसुभद्दसव्वओभद्दं । पवयणहियसुय(ह)केतुं सुयणाणपभावगं धीरं ॥२॥ लघुभाष्यं १॥१३॥ वदिसद्दो पुव्वभणिओ तदिती तं चेष णामगोत्तेहिं । इस्सरियाइ गुण भगो सो से अत्थित्ति तो भगवं ॥४॥ भद्दं कल्लाणंति य एगट्ठं तं च सुबहुयं जस्स । सो होति सुबहुभद्दो सोभणभद्दो सुभद्दोति ॥५॥ खीरामसवमदीणि तु सुभाणि भद्दाणि तस्स तु बहूणि । सव्वउ इह परलोए भद्दं तो सव्वतोभद्दो ॥६॥ आमोसहादि इह तह परलोए होंतऽणुत्तरसुरादी ।सुकुलुप्पत्ती य तओ ततो य पच्छा य णेव्वाणं ॥७॥ भात्तित्ति भद्दमहवा भद्दमहवा भाई णाणादीएहिं सोजम्हा । सो होति भद्दणामो कुणेति भद्दाणि वा जम्हा ॥८॥ पवयण दुवालसंगं तस्स हितो जं करेतऽवोच्छित्तिं । संघो तु पवयणं तू हितोवदेसं अतो तस्स ॥९॥ केतूसद्दो उसियं तुंगं तु तस्स तु सुहं तु । इहलोए परलोए सो भगवं होति परमसुही ॥२०॥ वायणय पभावणया सुतणाणगुणा य जे वदति लोए । विउसपरिसाएँ मज्झे सुतणाणपभावणा एसा ॥१॥ किं कारण तस्स कओ महया भत्तीय तू णमोक्कारो ? जम्हा तेणं जूढा अम्ह हियट्टाय सुत्त इमे ॥२॥ आयारदसा कप्पो ववहारो णवमपुव्वणीसंदो । चारित्तक्खणट्टा सूयकडस्सुप्परिं ठविता ॥३॥ अंगदसा अण्णावि हु उवासगादीण तेण उ विसेसो । आयारदसा उ इमा जेणेत्यं वण्णियाऽऽयारा ॥४॥ दसकप्पववहारा एगसुतक्खंध केइ इच्छंति । केई व दसा एकं कप्पववहार बीयं तु ॥५॥ रयणागरथाणीयं णवमं पुव्वं तु तस्स णीसन्दो । परिगाल परिस्सावो एते दसकप्पववहारा ॥६॥ किं कारण णिज्जूढा चरित्तसारस्स रक्खणट्टाए । खलियस्स तहिं सोही कीरइ तो होति निरुवहयं ॥७॥ सूयकडुवरि ठविता जम्हा तू पंचवासपरियाए । सूयकडमहिज्जति तू तो जोगो होति सो तेसिं ॥८॥ अणुकंपाऽवुच्छेदो कुसुमा भेरी तिगिच्छ पासिच्छा कप्पे परिसा य तहा दिट्ठंता आदिसुत्तम्मि ॥९॥ ओसप्पिणि समणाणं हाणिं णारुण आउगबलाणं । होहिंतुवग्गहकरा पुव्वहकरा पुव्वगतम्मी पहीणम्मि ॥३॥३०॥ खेत्तस्स य कालस्स य परिहाणिं गहणधारणाणं च । बलविरिए संघयणे सद्धा उच्छाहतो चेष ॥४॥१॥ किं खेत्तं काला वा संकुयती जेण तेण परिहाणी । भन्नइ न संकुयंती परिहाणी तेसि तु गुणेहिं ॥२॥ भणियं तु दूसमाए गामा होहिंति तू समाणसमा । इय कारण(खेत्ते) गुणहाणी कालेवि उ होतिमा हाणी ॥३॥ समए समए णंता परिहायंते उ वण्णमादीया । दव्वादीपज्जाया अहोरत्तं तत्तियं चेष ॥४॥ दूसमअणुभावेणं साहुजोग्गा उ दुल्लभा खेत्ता । कालेविय दुब्बिक्खा अभिक्खणं होंति इमरा य ॥ल० २॥५॥ दूसमअणुभावेण य परिहाणी होति ओसहिबलाणं । तेणं मणुयाणंपि तु आउगमेहादिपरिहाणी ॥ल० ३॥६॥ संघयणंपिय हीयइ ततो य हाणी य धित्तबलस्स भवे । विरियं सारीरबलं तंपिय परिहाति सत्तं च ॥ल० ४॥७॥ हायंति य सद्धाओ गहणे परिव(य)ट्टणे य मणुयाणं । उच्छाहो उज्जोगो अणालसत्तं च एगट्टा ॥ल० ५॥८॥ इय णाउं परिहाणिं अणुगहट्टाएँ एस साहूणं । णिज्जूढडणुकंपाए दिट्ठंतेहिं इमेहिं तु ॥९॥ पगरणचेडऽणुकंपा दड्ढविदहेहिं होयगारीणं । जह ओमे बीयभत्तं रण्णा दिण्णं जणवयस्स ॥५॥४०॥ एवं अप्पत्तच्चिय पुव्वगतं केइ मा हु मारिहंति । तो उद्धरिऊण ततो हेट्टा उत्तारियं तेहिं ॥१॥ मा य हु वोच्छिज्जिहित्ति चरणगुओगोत्ति तेण णिज्जूढं । वोच्छिण्णे बहु तम्मि चरणाभावो भवेज्जाहि ॥२॥ कह पुण तेण गहेतुं दिण्णाइं तत्थिमो तु दिट्ठंतो । जह कोइ दुरारोहो सुसुरभिकुसुमो तु कप्पदुमो ॥३॥ पुरिसा केइ असत्ता तं आरोढूण कुसुमगहणट्टा । तेसिं अणुकंपट्टा केइ ससत्तो समारुज्जे ॥४॥ घेत्तुं कुसुमा सुहगहणहेतुं गथिउं दले तेसिं । तह चोदसपुव्वतरुं आरूढो भद्दबाहू तु ॥५॥ अणुकंपट्टा गथिउं सूयगडस्सुप्परिं ठवे धीरो । तं पुण सुतोवएसेण चेष गहितं ण सेच्छाए ॥६॥ अण्णह गहिए दोसो असाहगं णाणमाईणं । केसवभेरीणातं वक्खातं पुव्वसामइए ॥७॥ अहवा तिगिच्छओ तु ऊणहियं वावि ओसहं दिज्जा । तेहिं तु(तहिं तू)ण कज्जिसिद्धी सिद्धी विवरीयए भवति ॥८॥ पारिच्छ पारिच्छित्तू पकप्पमादी दलंति जोग्गस्स । परिणामादीणं तू दारूगमाहिं णातेहिं ॥६॥४९॥ पारिच्छ अदिसुत्ते पुव्वं भणिया तु जा उ विहिसुत्ते । सेलघणादी परिसा पूरंताई य भण्णिहति ॥५०॥ परिसादारं भणितं कप्पदारं कमेण हु इदाणिं । किं पुण उक्कमकरणं बहुवत्तवंति णारुणं ॥१॥ किं पुण कप्पज्झयणे वन्निज्जति भण्णती सुणसु ताव । जे अभिहिता उ अत्था तहियं ते ऊ समासेणं ॥२॥ कप्पे पकप्पिए चेष, कप्पणिज्जेत्तिआवरे । फासुए एसणिज्जे य,

संजमे इत्तियावरे ॥७ ॥३॥ वालए वागए चव चम्मए पट्टए तहा । पम्हए किमिए चव धातुए मीसतेति य ॥८ ॥४॥ उवसंपया चरित्तस्स, चरित्ते कइविहे इय?। णियंठा कति पण्णत्ता ?, कहं समोतारणातिय ॥९ ॥५॥ ववहारे कस्स पण्णत्ते ?, कहं पडिसेवणाविय ?। देसभंगे कहं वुत्ते ?, सव्वभंगेत्तियावरे ॥१० ॥६॥ पच्छित्ते कइविहे वुत्ते, छट्ठाणित्तियावरे । पंचट्ठाणे चतुट्ठाणे, तिट्ठाणे इत्तियावरे ॥११ ॥७॥० छट्ठाणे दंसणे वुत्ते, संजमे इत्तियावरे । गाहणा य चरित्तस्स, एमेता पडिवत्तिओ ॥१२ ॥८॥ कप्पो उ होति दुविहो जिणकप्पो चव थेरकप्पो य । दुविहो उ कप्पिओ खलु दव्वे भावे य णायव्वो ॥९॥ आगमणोआगमओ दव्वम्मी कप्पिओ भवे दुविहो । आगमतोऽणुवउत्तो णोआगमतो इमो होति ॥६०॥ जाणगसरीर भविए तव्वतिरित्ते य होति णायव्वो । जाणग भयगसरीरं भविओ पुण सिक्खिही जो तु ॥१॥ वतिरित्तो एगभवो बद्धाऊ अभिमुहो य बोद्धव्वो । भावेवि होति दुविहो आगमणोआगमे चव ॥२॥ आगमओ उवउत्तो णोआगमओ य पिंडमाईणं । गहणंमि कप्पिओ खलु पव्वावेतुं च सेहाणं ॥३॥ जं जं जोग्गं जतीणं आहारादी तहेव सेहा य । एयं तु कप्पणिज्जं अपरिग्गहणा अकप्पम्मि ॥१३ ॥४॥ आहारि पलंबादी सलोममजिणादि होति उवहीए । सेज्जाए दगसाला अकप्प सेहा य जे अत्ते ॥५॥ केरिसयं कप्पणिज्जं ? फासुयंगं, फासुयं तु केरिसगं ?। जीवजढं जं दव्वं तंपि य जं एसणिज्जं तु ॥६॥ दसदोसविप्पमुक्कं गहिय चसद्देण उग्गमादीवि । एयं तु साहुजोग्गं गिणहंतो संजतो होति ॥७॥ अहवा सत्तरसविहो संजम जं वावि सुत्तछंदेणं । भुंजति आहाराती विवरीयमसंजमो होइ ॥८॥ आहारस्स उ भेदो उसणादी उवहिणो उ वालादी । एतंसि तु परूवण वालयममादीणिमा होति ॥१४ ॥९॥ वालेहिं णिप्फण्णं वालयमोण्णोद्वियादिगं होति । वक्केहि तु णिप्फण्णं वागज सणवक्कमादीगं ॥७०॥ चम्मं चम्मपडीए पट्टो उण होतिमो मुणेयव्वो । पल्लत्थोग्गहपट्टा तिरीउपट्टो य एमादी ॥१॥ पम्हज हंसगब्भादि अहवा कप्पासियं मुणेयव्वं । कोसेज्जपट्टमादी जं किमियं तू पवुच्चति ॥२॥ छुब्भति वंसकरिल्लो कंमिवि देसंमि तरुणते घडए । वट्ठं तो पूरयती तं घडयं चिप्पिए तंमि ॥३॥ संकोहेऊण कणयं तेहिं तम्हा उ किज्जए सुत्तं । तेणं वुयं जं वत्थं भण्णति तं धातुतं णाम ॥४॥ दुगसंजोगादीहिं एएसिं चव वालयादीणं । तं मीसयंति भण्णति जह ऊमक्खो(दुणहं खो)म्हियादीयं ॥५॥ वत्तव्व चसद्देण भेयपभेदा उ जेत्तिया तेसिं । सुद्धेहेतेहिं तू उवसंपण्णो हु सचरिती ॥६॥ अहवा पंचविहातो उवसंपय होतिमा समादेणं । सुय सुहदुक्खे खेत्ते मग्गे विणए य बोद्धव्वा ॥७॥ अहवा तिविहुवसंपय णाणे तह दंसणे चरित्ते य । चरितं च कतिविहं तू पंचविहं तं इमं होति ॥८॥ सामइयं छेदुवट्टावणं च परिहारसुद्धियं चव । तत्तो य सुहुमरागं अहखायं चव बोद्धव्वं ॥९॥ अहवा वयसमितादी सराग तह वीतरागमहवावि । खाइग खओवसमितं उवसमियं वा भवे तिविहं ॥८०॥ भेदा उ चसद्देणं होति इमे णाणदंसणाणं तु । खाइय खओवसमियं दुविहं णाणं मुणेयव्वं ॥१॥ खइयं केवलनाणं खओवसमियाइं सेसणाणाइं । खइयं खओवसमियं उवसमियं दंसणं तिविहं ॥२॥ कस्सेतं चारित्तं ? णियंठ तह संजयाण, ते कतिहा ?। पंच णियंठा पंचेव संजया होंतिमे कमसो ॥३॥ पुलए बउस कुसीले होति णियंठे तहा सिणाए य । एएसिं एक्केक्को पंचविहो होति बोद्धव्वो ॥४॥ णाणपुलाए तह दंसणे य चारित्त लिंग अहसुहुमे । एसो पंचविहो खलु पुलयणियंठो मुणेयव्वो ॥५॥ आभोगमणाभोगे तह संवुडऽसंवुडे अहासुहुमे । एसो पंचविहो तू बउसणियंठो मुणेयव्वो ॥६॥ दुविहो होति कुसीलो पडिसेवणया तहा कसाए य । एक्केक्का पंचविहो परूवणा तेसिमा होति ॥७॥ णाणपडिसेवणाए दंसण चरणे य लिंगे अहसुमुहे । पडिसेवणाकुसीलो पंचविहो एस णायव्वो ॥८॥ णाण कसायकुसीले दंसण चरणे य लिंग अहसुहमो । एस कसायकुसीलो पंचविहो तू मुणेयव्वो ॥९॥ पढमगसमयनियंठे अपढम चरिमे व तह अचरिमे य । तत्तो य अहासुहुमे पंचमए होति णायव्वो ॥९०॥ पंचविहे सिणाए तू अच्छवी तह असबले अकम्मंसे । संसुद्धणाणदंसणधरे य होती चउत्थे तु ॥१॥ अरहा जिणे य केवलि अप्परिस्सावी य होति पंचमए । एते पंच विकप्पा सिणायस्सा तु होंति णायव्वा ॥२॥ पंचविह संजतावी सामाइय छेउवट्ट परिहारे । सुहुमे य अहक्खाए एक्केक्के ते पुणो दुविहा ॥ल० १७०॥३॥ इत्तरिए आवकाही सामाइयसंजए भवे दुविहो । दुविहे य छेउवट्टो सऽतियारे णिरतियारे य ॥ल० १७१॥४॥ परिहारविसुद्धीए णिव्विसमाणे तहेव निव्विट्ठे । दुविहे य सुहुमरागे संकिस्संतं विसुज्झंतं ॥ल० १७२॥५॥ अहखाओविय दुविहो छउमत्थो चव केवली

चेव । एसो तु संजतो खलु पंचविहो होति णायव्वो ॥ल० १७३॥६॥ सामाइयम्मि उ कए चाउज्जामं अणुत्तरं धम्म । तिविहेण फासयंतो सामाइयसंजतो स खलु ॥ल० १७४॥७॥ छेतूण तु परियागं पोरणं तोठवेति अप्पाणं । धम्मम्मि पंचजामे छेओवट्ठावणा स खलु ॥ल० १७५॥८॥ परिहरति जो विसुद्धं पंचजामं अणुत्तरं धम्मं । तिविहेण फासयंतो परिहारियसंजतो स खलु ॥ल० १७६॥९॥ लोभमणुं वेदितो जो खलु उवसामओ व खवओ वा । सो सुहुमसंपराओ अहखाया ऊणओ किंचि ॥ल० १७७॥१००॥ ०उवसंते खीणम्मि व जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्जम्मि । छउमत्थो व जिणो वा अहखाओ संजतो स खलु ॥ल० १७८॥१॥ एतेसि समोतारो दुविहो सट्ठाण तह परट्ठाणे । वोच्छामि आणुपुव्विं जो जत्थ समोयरति तेसिं ॥२॥ जहणुवसंपज्जणता सव्वेसिं चेव पपुच्छियव्वा उ । वाकरण जहाकमसो तेसिं इणमो उ वोच्छामि ॥३॥ पुलगो तु पुलागत्तं जहमाणो जहइ सो पुलागत्तं । उवसंपज्जे असंजम अहवावि कसायसीलं तु ॥४॥ बउसो उ बउस्सत्तं जहती पडिसेवणं कसायं वा । संजऽसंजम अस्संजमं तु पडिवज्जती सो तु ॥५॥ पडिसेवणाकुसीलो विजहति पडिहति पडिसेवणाकुसीलत्तं । बउस कसायकुसीलं पडिवज्ज असंजमं वावि ॥६॥ अहवावि संजमासंजमं तु पडिवज्जती ततो सो उ । जोवि कसायकुसीलो विजहति सो तू कसायत्तं ॥७॥ पुलगं व बाउसं वा अहवा पडिसेवणाकुसीलं तु । पडिवज्ज णियंठं वा अहवावि असंजमं वावि ॥८॥ अहवा संजमसंजम उवसंपज्जे तुसो चुतो तत्तो । णिगंठे उ णियंठत्त विजहति तत्तो चुतो संतो ॥९॥ उवसंपज्ज कसायं सिणाय अहवा असंजमं वावि । विजहति सिणायगत्तं सिणायवो ऊ चुतो तत्तो ॥११०॥ उवसंपज्जति तत्तो सिद्धिगतिंसो पहीणकम्मंसो । एसो तु णियंठाणं समुयारो संजयाणेत्तो ॥१॥ सामादिसंजतो तू सामइयत्तं जहन्त किं जहति । किं वा उवसंपज्जे ? एवं पुच्छा उ सव्वेसिं ॥२॥ सामाइयत्तं जहती सामाइयसंजते चुते तत्तो । छेदुवठावणियं वा पडिवज्जति सुहुमरागं वा ॥ल० १७९॥३॥ अहवावि संजमासंजमं च अस्संजमं च पडिवज्जे । छेदुवठावणीए पुण विजहति से छेदुवट्ठवणं । ल० १८०॥४॥ विसुद्धीयं अहवावी सा तु सुहुमरागंतु । अस्संजम संजमऽसंजमंच पडिवज्जती अहवा ॥ल० १८१॥५॥ परिहारविसुद्धीओ विजहति तत्तो चुत्तोवि तं चेव । उवसंपज्जति छेदं अहवावि असंजमं सो तु ॥ल० १८२॥६॥ विजहति सुहुमसरागो ततो चुतो सुहुमसंपरायत्तं । उवसंपज्जति सामातिसंजमं छेदमहवावि ॥ल० १८३॥७॥ अहव अहक्खायं तू अस्संजममहव सो तु पडिवज्जे । अहखातसंजमो पुण अहखायत्तं विजहमाणो ॥ल० १८४॥८॥ जहति अहक्खायत्तं उवसंपज्जति सो चुतो तत्तो । सुहुमं च संपरागं अस्संजम सिद्धिगतिमहवा ॥ल० १८५॥९॥ एस समोतारो खलु अहवावि णियंठसंजएसुं तु । संजयनिग्गंथेसु य अवरोप्परतो समोतारो ॥१२०॥ पुलगबउसाण दुण्हवि सामइछेदेसु तू समोतारो । ओतरति कुसीलो पुण आदिल्लेसुं चऊसुंपि ॥१॥ णिगंथसिणाता पुण समोतरंते तु ते अहक्खाते । एवं तु णियंठा तू ओतरिया संजतेसुं तु ॥२॥ पुलबउसकुसीलेसुं सामइछेदा समोतरंती तु । परिहारसुहुमरागा ओतरति कुसीलएसुं तु ॥३॥ ओतरति अहक्खाओ णिगंथसिणातएसु दोसुंपि । एमेत समोतरिता अण्णोण्णसुं जहाकमसो ॥४॥ उत्तारे सव्वमहव्वयाणि णियमा तु सव्वदव्वेसु । ण तु सव्वपज्जवेहिं जम्हा सामादिए उदितं ॥५॥ पढमम्मि सव्वजीवा बीते चरिमे य सव्वदव्वाइं । सेसा महव्वता पुण (खलु) तदेक्कदेसेण दव्वाणं ॥६॥ एतेसि णियंठाणं आवण्णाणं तु संजयाणं च । ववहारो होति दुहा पच्छित्ते आभवंते य ॥७॥ पच्छित्ते पंचविहो आगममादी उ होति णायव्वो । कस्साभवति ण वावी ? सच्चित्तादी तु आभव्वो ॥८॥ सावराहिस्स ववहारो, अवराहो पडिसेवणा । पडिसेवणा य कतिहा ?, तीसे भेदा इमे भवे ॥९॥ दप्पिया कप्पिया चेव, दुविहा पडिसेवणा । जयणाऽजयणा कप्पी, जयणा सुद्धो तु सेवतो ॥१३०॥ जयणासेवी कप्पो जयणाएँ अजयणाए य । आवज्जति सट्ठाणं वण्णिज्जति वित्थरो कप्पे ॥१॥ पडिसेवगस्स होति देसभंगो य सव्वभंगो य । अवराहे केरिसए देसे दव्वेऽवि सो होति ? ॥२॥ पणगादी छेदो एसो खलु होति देसभंगो तु। मूलादि उवरिमेसू णायव्वो सव्वभंगो उ ॥३॥ तस्स उ विसुद्धिहेतुं पच्छित्तं तस्स केत्तिया भेदो ? छट्ठाणादीया खलु परूवणा तेसिमा होति ॥४॥ छसु काएसु वएसु य छव्विह एगिंदियादि पंचविहं । संघट्टण परितावण उद्ववणे चेव निप्फणं ॥५॥ चउहा तु णाणवंते दंसणवंते चरित्तवंते य ॥ तत्तो चियत्तकिच्चे अहवा दव्वासयं चउहा ॥६॥ अहवा अतिक्रमादी चउहा कोहाइयं च चउहा

तु । णाणादियारमादी होती तिविहं च पच्छित्तं ॥७॥ अहवा आहारोवहिसिज्जितियारे होति तिविहं तु । उग्गम उप्पायण एसणा य तिविहं तु एक्केक्के ॥८॥ आलोयण पडिक्कमणे तदुभयमेवं तु होति तिविहं तु । सच्चित्ताचित्तमीसग तिविहं चेदं मुणेयव्वं ॥९॥ अहवा सत्तट्टविहं नव दसहा वावि होति पच्छित्तं । आलोय पडिक्कमणे मीस विवेगे य वोसग्गे ॥१४०॥ छट्टग तवे य तत्तो सव्वे तुवरिल्ल सत्तमं छेदो । अट्टविह छेद दुविहो देसे सव्वे य बोद्धव्वो ॥१॥ णवविह सव्वच्छेदो दुह संजमुवट्टविज्जती मूलं । कालंतरमित्तरे पुण खेत्ततो बहिं च दसभेदं ॥२॥ अहवऽण्ह दुविहेदं एगविहं वावि होज्ज णायव्वं । रागद्दोसा दोष्णी एगविहोऽसंजमो होति ॥३॥ छट्टाणे दंसणेत्ती जो काए छव्विहे सदहती । णत्थि ण णिच्चादी वा छव्विहमेयं तु मिच्छत्तं ॥४॥ धम्मत्थिकायमादी कालंतादिं तु छत्तु दव्वातिं । जो ताइं ण सदहती छव्विहमेयं तु मिजच्छत्तं ॥५॥ संजमो सतरसविहो उ सामाइयमादि अहव पंचविहो । गाहणता व चरित्तस्स गहणं चिय गाहणा होति ॥६॥ किह पुण चरित्तगहणं होज्जाही ? भण्णती इमेहिं तु । वेरग्गेणं अहवा मिच्छत्ता होइ सम्मत्तं ॥७॥ सम्मत्ताउ चरित्तं अहवा होज्जा इमेहिं गहणं तु । सवणे णाण विणाणे एमादी गाहण चरित्ते ॥८॥ अहवावी उवएसो एगट्टं होति गाहणाउत्ति । तह उवदिस्सति जह ऊ चारित्तं गेण्हती सा तु ॥९॥ अविराहणम्मि य गुणा दोसा य विराहणे चरित्तस्स । तह गाहिज्जति जह तं (तू) आगाढो होति चारित्ते ॥१५०॥ णाणे तह दंसणे य जातिग्गहणेण संसुया एया । एयातिं गाहिंते गाहणता वण्णिता एसा ॥१॥ एमेता जा भणिता अहवा अवहारणे चसद्दो तु । पडिवत्ती उवगारो वागरणं वावि पडिवत्ती ॥२॥ एतं कप्पे वण्णिज्जतीउ अन्ने य बहुविहा अत्था । अत्थेसु अणेगेसु य कप्पभिधाणं मुणेयव्वं ॥३॥ सामत्थे वण्णणा काले, छेयणे करणे तहा । ओवंमे अहिवासे य, कप्पसद्दो वियाहिओ ॥१५॥ल० ६॥४॥ सामत्थे अट्ट मासे वत्तीकप्पो तु होति गब्भगतो । वण्णण अज्झयणं तू कप्पिय जहमेगसाहूणं ॥५॥ काले हेमंताणं जह तु सदरायकप्पतिक्कंते । छेदेणे जह केसे तू चउरंगुलवज्ज कप्पेहि ॥६॥ करणे वत्तीकप्पिय अहो इमेणं जहा तु पुरिसेणं । आइच्चचंदकप्पा हवंति जह साहुणा धम्मो ॥७॥ सोहम्मकप्पवासी अहिवासे जह तु होति देवा तु । एते सामत्थादी जोएयव्वा इहं कप्पे ॥८॥ कप्पज्झयणमधीतुं अतियारविसोहणं समत्थे उ । कतिविहपायच्छित्तस्स परूवणा वण्णणा होति ॥९॥ काले उडुबद्धाणं वासावासं च वुडुवासं वा । वसती जहाविहं खलु उस्सग्गववायसंजुत्तं ॥१६०॥ तवसोहिमतिक्कंत्तं छिंदति पणगादिएहिं परियागं । कुणइ य तहा पयत्तं जह तं दिण्णं वहइ सम्मं ॥१॥ ओवम्मे जिणकप्पो जाणणगहणे य सो हवति गीतो । अहिवासे सामादिसु ऊणतिरित्ते विभासा तु ॥२॥ सव्वेसिं कप्पाणं पण्णवण परूवणा ऊ णवमंमि । आसज्ज उ सोयारं पुव्वगते वा इहं वावि ॥१६ ॥३॥ एतेसिं सव्वेसिं छव्विह कप्पाइयाण कप्पाणं । पण्णवण परूवणता णवमे पुव्वम्मि णिद्धिडा ॥४॥ सोतारं पुण आसज्ज होज्ज इह कप्पि अहव णवमम्मि । धारणगहणसमत्थे तहितं असमत्थे इहइं तु ॥५॥ कप्पाणं वक्खाणं पुव्वगते वण्णितं समत्तं तु । इह थोवगन्तिकाउं ण हु बहु माणो ण कायव्वो ॥६॥ दव्वे खेत्ते काले उग्गहसंघयणधारणगुरूणं । तंपी बहु मण्णिअव्वं जं एगपदे पदं अत्थि ॥१७ ॥७॥ दुस्समअणुभावेणं हाणी विरियस्स ओसहीणं तु । दुलभाणि य दव्वाइं जाइं जोग्गाइं तणुभावे ॥८॥ खेत्ताणि प (य) हायंती विरंजोग्गाइं तदणुभावेण । दुब्भिक्खपउरकालो तेणुभावेण मणुयाणं ॥९॥ लद्धी उग्गहणम्मि संघयणं धारणा य परणिति । ण य सीसायरियाणं सत्ती वत्तुं च सोतुं वा ॥१७०॥ ण य संति बहु गुरवो जे वत्तारो य हुंति अत्थस्स । तेवि ण सव्वस्स लहुं पसादसुहुमा (मुदा) भवंती तु ॥१॥ ?इह णातुं परिहाणीं जं एगपदेवि एगमत्थपदं बहु मंतव्वं तंपि हु किं पुण संतेसु गेगेसु ॥२॥ तो ण पमाएयव्वं ण य भत्ती तू तहिं ण कायव्वा । सट्टतरं उज्जोग्गो कायव्वो तम्मि धित्तव्वे ॥३॥ सो पुण पंचविकप्पो कप्पो इह वण्णिओ समासेणं । वित्थरतो पुव्वगतो तस्स इमे होति भेदो तु ॥४॥ छव्विह सत्तविहे य दसविह वीसतिविहे य बायाले । जस्स तु णत्थि विभागो सुव्वत्त जलंधकारो सो ॥१८ ॥५॥ विभयण विभाग भण्णति जहेरिसो छव्विहो य सत्तविहो । णामादिविभागो वा जस्सेसो ण विदितो होति ॥६॥ सुव्वत्त सुट्टु वत्तं तस्स निबुडस्स वा जलमगाहे । होती सचक्खुयस्सवि जहंधकारो मणुस्सस्स ॥७॥ अहवा जलंधकारो मेहोत्थइयंमि होति गगणम्मि । अहवा जलंधकारो जत्थादिच्चो ण दीसति तु ॥८॥ एवं तु अंधकारो कप्पपकप्पं पडुच्च तस्स भवे । अहवा सो चव जलो भवइ य से अंधकारं तु ॥९॥ छव्विहकप्पस्सिणमो णिक्खेवो छव्विहो मुणेयव्वो । णामं ठवणा दविए खेत्ते काले य भावे य ॥१८०॥ जेण परिग्गहिणं दव्वेणं कप्पो होति णाऽकप्पो । तं दव्वमेव

कप्पो कारणकज्जोवयारातो ॥१॥ सो तिविहो बोद्धव्वो जीवमजीवे य मीसतो चेव एतेसिं तु विभागं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥२॥ तिविहो य जीवकप्पो दुपय चउपपय तहेव अपदेहिं । अहिगारो दुपदेहिं तत्थवि य मणुस्सदुपदेहिं ॥३॥ तत्रव य कम्मभूमतुसंखिज्जगवासआउएहिं तु । पव्वइतुकामएहिं तत्थवि तू होति अहिगारो ॥४॥ सो होति छव्विहो तू बोद्धव्वो मणुयजीवकप्पो तु । वोच्छामि तस्स इणमो भेदविकप्पं समासेणं ॥५॥ पव्वावण मुंडावण सिक्खावणुवट्ट भुंज संवसणा । एसो त्थ (तु) जीवकप्पो छब्भेदो होति णायव्वो ॥१९॥ल० ७॥६॥ अब्भुवगमो पव्वावण मुंडावण होति लोयकरणं तु । गहणासेवणसिक्खं सिक्खाविन्तंमि सिक्खवणा ॥ल० ८॥७॥ वयठवणमुवट्टवणा संभुंजण मंडलीएँ सह भोगो । एगततो सह वासो संवसणा होति णायव्वा ॥ल० ९॥८॥ णाऽपव्वावित मुंडावणा तु ण यऽमुंडिए तु सिक्खवणा । एमादी तु विभासा पव्ववयती तु केरिसगो ? ॥९॥ सुत्तत्थदुभयविसारयस्स संगहउवायकुसलस्स । कप्पति पव्वावेतुं संवेगसुवट्ठितमतिस्स ॥२०॥१९०॥ सुत्तत्थेण विसारए चउभंगो एत्थ होति कायव्वो । तं चेव तदुभयं खलु विसारतो जाणतो तस्स ॥१॥ दव्वे भावे संगह दव्वे आहारमादिएहिं तु । सिक्ख वणं अगिलाए गेलण्णे यावि करणं तु ॥२॥ भावम्मि संगहो खलु णाणादी तं तु होति बोद्धव्वो । जाणइ वट्टावेतुं गच्छं तु उवायकुसलो तु ॥३॥ संसारभउव्विग्गो संविग्गो सो तु होइ णायव्वो । एतेसिं तु पदाणं चउभंगो होति एक्केक्को ॥४॥ तदुभयविसरदो खलु ण संगहे कुसलो एत्थ चउभंगो । तदुभयउवायकुसलो एत्थंपि तु होति चउभंगो ॥५॥ तदुभयसंविग्गेहिवि चउभंगो एव होति कायव्वो । एवगुणजातियस्सा पव्वावेतुं तु कप्पति तु ॥६॥ पव्वाविंता भणिता अहुणा पव्वावणिज्ज वोच्छामि । पव्वज्जाए जोग्गा जे वा होंती अजोग्गा तु ॥७॥ पव्वाणारिहा कलु जातीकुलरूवविणयसंपण्णा । तव्विवरीयगुणा खलु होंति अपव्वावणाजोग्गा ॥८॥ तेसिं तु जे विवक्खा तव्विवरीया हवंति ते णियमा । अहवावि इमे वीसं वज्जित्ता सेसगा जोग्गा ॥९॥ बाले वुड्ढे नपुंसे य जड्ढे कीवे य वाहिए । तेणे रायावगारी य, उम्मत्ते य अदंसणे ॥२१॥२००॥ दासे दुट्टे य मूडे य, अणत्ते जुंगितेइ य । ओबद्धए य भयए, सेहणिप्फेडितेति य ॥ २२॥१॥ गुव्विणी वालवच्छा य, पव्वावेतुं ण कप्पए । एसिं परूवणा दुविहा, उस्सग्गववायसंजुता ॥२३॥२॥ कारणमकारणे अहव कारण जयरेतरा पुणो दुविहा । एस परूवण दुविहा एत्तो बालादि वोच्छामि ॥३॥ तिविहो य होति लो उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य । एतेसिं तिण्हंपी पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥४॥ सत्तट्टगमुक्कोसो छप्पण मज्झो य चतुतिय जहण्णशे । एयं वयनिप्फणं सभावओ होंति णव भेदा ॥५॥ जहणो जहणसभावो मज्झसभावो तहेव उक्कासो । एवं मज्झिम तिण्णी उक्कोसावी भवे तिण्णि ॥६॥ छिंदतंमछिंदंता तिन्निवि हरितादि वारिता संता । पुणरविय छिंदमाणा जति दिट्ठं गुरूण वऽण्णेणं ॥७॥ उक्कोसो दट्टुणं मज्झिमतो ठाति वारितो संतो । जो पुण जहण्णबालो हत्थे गहिओवि णवि ठाति ॥८॥ दाहिणकरम्मि गहितो यामकरेणं स छिंदती ताइं । मंडलंगंमि व धरितो चिट्टइ एवं च भणितो तु ॥९॥ जह भणितो तह तु ठितो पढमो बीएर फेडियं ठाणं । तइओ न ठाति ठाणे अह रूब्भ (व्व) ति विस्सरं रूयति ॥२१०॥ एतेसिं बालाणं पव्वाविंतस्सिमं तु पच्छित्तं । तिण्हंपि कमेणं तू वोच्छामी आणुपुव्वीए ॥१॥ अउ णत्तीसा वीसा उगुवीसा चेव तिविहबालम्मि । तव छेद वीसु पढमे बिति मिस्सा ततिय छेदाती ॥२॥ अउणत्तीसं दिवसे सिक्खविंतस्स मासियं लहुयं । उक्कोसगम्मि बाले सो चेव असिक्खणे गुरूगो ॥३॥ अण्णे अउपाउत्तीसं गुरूओ सिक्खे असिक्खि चउलहुया । पुणरवि अउणत्तीसं लहुगा सिक्खेतरे गुरूगा (गुरूगा सिक्खे य छल्लहुगा) ॥४॥ अण्णे अउणत्तीसं गुरूगा सिक्खे सिक्कि छल्लहुगा । (अण्णे उ अउणत्तीसं सिक्खाविंतस्स होति पच्चित्तं ।) छल्लहुगा सिक्खम्मि य असिक्खि गुरूगा अउणत्तीसं ॥५॥ अज्जे सिक्खासिक्खे छग्गुरू तवो छेद छग्गुरू चेव । मूलऽणवट्ट पारंचिगं च एक्केक्कं तत्तो ॥६॥ अहवा सो चेव तवो छेदादी मासमादिया होंति । सिक्खाविंतमसिक्खे मूलेक्कदूगं तहेक्केक्कं ॥७॥ अहवा सो चेव तवो छेदो पणगादि जाव छम्मासा । सिक्खाविंतमसिक्खे लहु गुरू एक्केक्क उगुतीसा ॥८॥ मूलऽणवट्टं च तओ पारंचियमेव होति एक्केक्कं । सिक्खासिक्खपगारा उक्कोसे होंति बोलेते ॥९॥ अहवा सो चेव गमो दिणेहिं सिक्खितरवज्जिए होति । मासादितवच्छेदा मूलाईया दिणेक्केक्कं ॥२२०॥ एमेव मज्झिमेऽवी णवरं दिवसा तु वीस वीसं तु । एमेव जहण्णेऽवि उगुवीसुगुवीस दिवसा तु ॥१॥ अहवा

मज्झे मीसा जहण्णछेदादि अन्नपरिवाडी । तवछेदेगंतरिया मज्झि जहण्णे तु भयणाए ॥२॥ मज्झिमि वीसं लहुओ सिक्खमसिक्खस्स मासिओ छेदो । वीसण्ण चेद लहुओ सिक्खमसिक्खे गुरूग तवो (गो जो) ॥३॥ अद्धोक्कंती एवं तवछेदेगंतरा तु णेयव्वा । जा छम्मासा ताव तु परओ मूलादि एक्केक्कं ॥४॥ अउणावीसजहण्णे सिक्खा विंतस्स मासि छेदो । सो च्विय असिक्खि गुरूओ जा छग्गुरू तिण्णि परओ तु ॥५॥ अहवा ण होइ छेदो ठाणे च्विय मूल तह य अणवट्ठो । पारंचिए य तत्तो एवं भयणा जहण्ण स्स ॥६॥ अहवा पढमे छेदो तद्विसे चेव हवइ मूलं वा । एमेव होति ए तइए पुण होति मूलं तु ॥७॥ किं कारण सोधेसा ? दोसा तहियं इमे समक्खाता । पव्वाविएसु तेसु तु उड्डा हाई मुणेयव्वा ॥८॥ बंभस्स वयस्स फलं अयगोले चेव होंति छक्काया । णिसिभत्तंमंतराए चारग अजसो य पडिबंधो ॥ २४॥९॥ लोगो बेती पेच्छह इणमो बंभव्वईण तु फलं तु । अयगोलोविव तत्तो डहती सो जित्तिए मुक्को ॥२३०॥ भत्त णिसि मग्गमाणे दिंते तू रातिभत्तभंगो तु । हवइ अदिंत्तमि तऽतराइयं बेइ लोगो य ॥१॥ चारगपाला हु इमे जे बालाईं तु एव रूभंति । लोगे जायति अजसोअहो इमे णिरणुकंपत्ति ॥२॥ तेण य पडिबंधेणं पडिबद्धा णवि कहिंचि विहरंति । जे दोस णीयवासे ते पावंते य अच्छंता ॥३॥ ऊणट्ठे णत्थि चरणं पव्वाविंतोऽवि भस्सई चरणा । मूलावराहिणी खलु णारभते वाणिओ चेदं ॥४॥ उग्घायमणुग्घायं णारुणं छव्विहं तवोकम्मं । एमेव छेद छव्विह जिणचोदसपुव्विए दिक्खा ॥ २५॥५॥ उग्घायमणुग्घातो मासो चउ छव्व छव्विह तवेसो । एमेव छव्विहोच्चिय छेदो सेसाण एक्केक्कं ॥६॥ एयं पायच्छित्तं णाउ ण पव्वावए तओ बालं । णवरं पव्वाविंतीजिणचोदसपुव्विअतिसेसी ॥७॥ ते जाणित्तं गुणागुण बहुगुण णारुण तेण दिक्खंति । के पुण जिणमादीहिं दिक्खिय बाला ? इमे सुणसु ॥८॥ सत्ताए अतिमुत्तो मणओ सिज्जंभवेण पुव्वविदा । अतिसेसिणा य वतिरो छम्मासो सीहगिरिणावि ॥९॥ एते अव्ववहारी जह पव्वविंतिह गच्छवासी तु । एयं इच्छं णाउं भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२४०॥ उवसंते व महाकुलें णातीवग्गे व सन्निसिज्जतरे । अज्जाकारणजाते बाले पव्वज्जऽणुणाया ॥ २६॥१॥ पव्वज्जाए परिणए विउलकुले तत्थ बाल होज्जाहि । मासव्वे तेसि कते अच्छंतू तेण पव्वावे ॥२॥ णातीवग्गे य तहा छेव(थेर)गमादी मयम्मि संतम्मि । जणवादरक्खतो । सारवेइ आसण्णवालाईं ॥३॥ एवं ससन्नितराणवि अज्जायवि डिंडिबंध पडिणीए । कज्जं करेमि सचिवो जदि मे पव्वावतह बालं ॥४॥ एतेहिं कारणेहिं पव्वाविज्जहि गच्छवासी तु । पव्वावियाण तेसिं इमेण विहिणा उ सारवणा ॥५॥ भत्ते पाणे धोवण सारणया वारणा निओजणया । चरणकरणसज्झायं गाहेयव्वो पयत्तेणं ॥ २७॥६॥ निद्धमहुरेहिं आउं पुस्सति देहम्मि पाडवं मेहा । अच्छति जत्थ ण णज्जति सट्ठादिसु पीहगादीया ॥७॥ ठावेति सालवाडा पडिलेहणमादि सारणमभिकखं । वारिज्जए अभिकखं हरियादी छिंदमाणो य ॥८॥ सामायारिं सव्वं सज्झायं चेव ऊ पयत्तेणं । गाहिज्जति सो एवं जयणा एसा तु बालस्स ॥९॥ तिविहो य होइ वुड्डो उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य । एतेसिं तिण्हंपी पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥२५०॥ दस आउविवागदसा दसभागे आउयं विभत्तिरुणं । दसभागे दसभागे होति दसा ता इमा होंति ॥१॥ बाला किड्डा मंदा बला य पण्णा य हायणि पवंचा । पब्भार मुम्मूहीविय सयणी दसमा य णायव्वा ॥२८॥२॥ तहियं पढमदसाए अट्टमवरिसादि होति दिक्खा तु । सेसासु छसुवि दिक्खा पब्भारादीसु साण भवे ॥३॥ वुड्डऽदसुक्कोसो मज्झो णवमि दसमी य तु जहण्णो । जं तुवरिं तं हेट्ठा भयणाऽप्पबलं समासज्ज ॥४॥ केसिंचि पवंचादी वुड्डो उक्कोसगो उ जा सतरिं । अट्टदसाए मज्झो णवमीदसमीसु य जहण्णशे ॥५॥ कुरुकुयमादि णिसिद्धो जह माबीयं करेहिं एवंति । पुणरवि पकरेमाणो दिट्ठो साहूहिं ताहे तू ॥६॥ उक्कोसो दट्ठुणं मज्झिमओ ठाति वारिओ संतो । जो पुण जहण्णवुड्डो हत्थे गहिओ णवरि ठाति ॥७॥ ठाणे य चिट्ठसुत्ती जह भणियो तह ठिओ भवे पढमो । बीएण फेडियं तं तइओ णवि ठायइ ट्ठाणे ॥८॥ एगुणतीसा वीसा अउणावीसा य तिविह वुड्डम्मि । पत्तेयं तवछेदा पढमे बिति मीस तवछेदा ॥९॥ तह चेव विभागो तू जह बालाणं तु होति तिण्हंपि । किं पुण एसाऽऽरूवणा ? भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२६०॥ आवस्सय छक्काया कुसत्थ सोए य भिकख पलिमंथो । थंडिल अप्पडिलेहा पमज्ज पाढे करणज्जो ॥ २९॥१॥ आवस्सयं णं सक्को गाहेतुं जड्डयाएँ सो वुड्डो । छक्काय ण सदहती ण तरति ते यावि परिहरितुं ॥२॥ कुद्धिट्ठिकुसत्थेहिं तु भावितो निच्छच तगं मोत्तुं । लोगस्स अणुग्गहकरा चिरंपुराणत्ति अम्हे मो ॥३॥ अतिसोयवादणं

पुढविं गिण्हति बहुं-दुबं छड्डे । अपरीहत्थो भिक्खायरियं पलिमंथ पातवहो ॥४॥ थंडिल्लं णवि पासइ दुब्बलगहणी य गंतु ण चएइ । अण्णस्सवि वक्खेवो चोदण इहरा विराहणता ॥५॥ पडिलेहणं ण गिण्हति पमज्जणे यावि सो भवति जड्डो । नवि तीरति पाढेतुं दुमम्मेहो जड्डुबुद्धी य ॥६॥ भंजति अभिक्खमालावगं च अण्णेसि वावि दलिमंथो । उवही वीसारेती छड्डेइ व पंथि वच्चंतो ॥७॥ उट्ठित्तिणिवेसिंते चंक्कमंते अवाउडियदोसा । चरणकरणसज्झाए दुक्खं वुड्डो ठवेतुं जे ॥८॥ उग्घायमणुग्घायं छव्विह पच्छित्त कारणे तेणं । तम्हा वुड्ड ण दिक्खे जिणचोद्दसपुव्विए दिक्खा ॥९॥ पव्वाविंति जिणा खलु चोद्दसपुव्वी य जे य अतिसेसी । जिणमादीहिं तेहिं कयरे ते दिक्खिया वुड्डा ? ॥२७०॥ सत्थाए पुव्वपिता चोद्दसपुव्वीण जंबुणा सपिता । तंमग्गेणं जरतो तु दिक्खितो रक्खियज्जेणं ॥१॥ एते अव्ववहारी इच्छामी णतु अणतिसेसी य । जह दिक्खंतं ? भण्णति सुणसू जह तेवि दिक्खंतं ॥२॥ उवसंतं व महाकुल्ले णातीवग्गे व सणिणसेज्जतरे । अज्जाकारणजाते वुड्डस्सेवं भवे दिक्खा ॥३॥ जह चेव य बालस्सा विभास तह चेव होति वुड्डस्स । णवरं इमो विसेसो अज्जाणं कारणा होति ॥४॥ अज्जाण णत्थि कोती संचारिंतो तु खेतमादी तु । तेणं तेसिऽट्ठाए वुड्डं संकप्प (हतसंक) पव्वावे ॥५॥ एतेहिं कारणेहिं जति णामं होज्ज दिक्खितो वुड्डो । ताहे य तस्स सारण कायव्व इमीय तु विहीय ॥६॥ भत्ते पाणे सयणासणे य उवही तहेव वंदणए । चरणकरणसज्झायं अणुयत्तणया य गाहणता ॥३०॥७॥ जारिसतभत्तपाणेण समाही दिज्जते सि तारिसगं । सयणीय महा(समा)भूमी पाउंछणमादि आसणयं ॥८॥ जतियं तरए वोढुं सीयत्ताणं व जत्तिणं से तत्तियमेत्तो उवही दिज्जति सेऽणुगहट्ठाए ॥९॥ वंदणए अणुकंपा कीरति ण य सारियम्मि वंदावे । चरणकरणसज्झायं अणुकूलेउं चरण गाहे ॥२८०॥ उवउंजिउं णिमित्ते दोण्हंपिय कारणा दुवग्गाणं । होहिंति जुगप्पवरा दुण्हवि अट्ठा दुवग्गाणं ॥३१॥१॥ ओहि मणो उवउंजिय परोक्खणाणी णिमित्त धित्तूणं । जदि पारगतो दिक्खा जुगप्पहाणा व होहिंति ॥२॥ दोण्णित्ति बालवुड्डा पुणरवि दोवग्ग इत्थिपुरिसा य । सुत्तत्थदुग्घाए कालियपुव्वगयअट्ठा वा ॥३॥ पुणरवि दोवग्गा खलु सणा समणी य होंति णायव्वा । तेसिं अट्ठा दिंती आहारो तेसि होहिंति ॥४॥ एतो वुच्छ णपुंसं सो किह णज्जेज्ज जह णपुंसोत्ति ? भण्णति ण चेव कप्पपति दिक्खितुं विहि अजाणंते ॥५॥ तम्हा दिक्खा गीते दिक्खंतं चउगुरू अगीयस्स । गीतेवि अपपुच्छित्ता गुरुगा पुच्छा उवाएणं ॥६॥ अम्हं णपुंसगादी ण कप्पते एव भणित्तं साहेज्जा । को वा णिव्वेदो ते ? भणिज्ज भगवं ! अहं ततिओ ॥७॥ अहवाविय मेत्ता से णिव्वेदं पुच्छिया हु साहेज्जा । अहवावि लक्खणेहिं इमेहिं णाउं परिहरेज्जा ॥८॥ महिलासभावो सरवणभेदो, मेंढं महंतं मउया य वाणी । ससद्दगं मुत्तमफेणगं च, एताइं छप्पंडगलक्खणाइं ॥९॥ गती भवे पच्चवलोइयं च, मिदुत्तदा सीतलयत्तया य । धुवं भवे दुक्खरणामधेज्जो, संकारपच्चंतरिओ ढकारो ॥२९०॥ गतिहत्थवत्थकडिभुमयभासदिट्ठी य केसलंकारो । पच्छन्नमज्जणाणि य पच्छण्णतरं च णीहारो ॥३२॥१॥ मंदा गती विक्खवे वामहत्थं, लंबं णियंसेति जहेव इत्थी । कडिथंभगं वावि करे अभिक्खं, सवब्भमं उक्खिवए भुमाओ ॥२॥ भासंतो यावि करं वत्थि णिव्वेसिंति इत्थिया चेव । हीणस्सरो य जायइ दिट्ठी य सविब्भमा तस्स ॥३॥ केसे इत्थी व जहा आमोडति इत्थिमंडणं चेव । णहायति एगंते या पच्छन्नं आयरच्चारं ॥४॥ पुरिसेसु भीरु महिलासु संकारो पमयकम्मकरणो य । एयं बाहिरलक्खण णपुंसवेदो भवे अंतो ॥५॥ सो पुण णपुंसवेदो लिंगे तिव्वेहो होति बोद्धवो । कह लिंगं तिए ? भण्णति एत्थं एक्केक्क वेदत्तिगं ॥६॥ उस्सग्गलक्खणं खलु थीपुरिसणं षपुंसगाण वेदाणं । फुंफमदवग्गिमहणगरदाहसरिसा जहाकमसो ॥७॥ एक्केक्के तिह भयणा इत्थी थीसरिस पुरिस अपुमे य । इय पुरिसणपुंसे या एक्केक्के होति वेदत्तिगं ॥८॥ सो पुण णपुंसगो तू सोलसहा होति तू मुणेयव्वो । पंडग कीवे वातिय कुंभी ईसालु सउणी य ॥९॥ तक्कम्मसेवि पक्खियमपक्खिए तह सुगंधि आसित्ते । विद्धित चिप्पिय मंतोसहीहिं वा उवहए जे य ॥३००॥ इसिसत्त देवसत्ते एतेसि परुवणा इमा होति । तहियं पंडो तिव्वेहो लक्खण दूसी च उवघाओ ॥१॥ पंडगलक्खण जस्सा जायाअवलोयणेण तु गहा(ग्गह)णं । सो लक्खणतो पंडो दूसीपंडो इमो होति ॥२॥ दूसियवेदो दूसी दोसु य वेदेसु सज्जते दूसी । दो सेवइ वा वेदे दोसु च दूसिज्जदी दूसी ॥३॥ दूसेति सेसए वा सो दुह आसित्तो तह य तूसित्तो । सावच्चो आसित्तो अणवच्चो होति ऊसित्तो ॥४॥ उवघाओविय दुविहो वेदे य तहेव होति

उवकरणे । वेदोवघायपंडो इणमो तहियं मुणेयव्वो ॥५॥ पुव्विं दुच्चिण्णाणं कम्माणं असुहफलविवागणं । उदया हम्मति वेदो जीवाणं पावकम्माणं ॥६॥ जह हेमकुमारो तू इंदमहे बालियाणिमित्तेणं । मुच्छिय गिद्धो अतिसेवणेण वेदोवघात मतो ॥३३॥७॥ एयस्स विभास इमा जह एगो रायपुत्त वण्णेणं । तवियवरहेमसरिसो तो से णामं कतं हेमो ॥८॥ सो अन्नदा कदाई इंदमहे इंदठाणपत्ताओ । णगरस्स बालियाओ पुप्फादीहत्य दड्डुणं ॥९॥ पुच्छति सेवगपुरिसे किं एया आगा उ इहइति ? । ते बिंती सोहग्गं मग्गंतेता वरत्थीओ ॥३१०॥ तो ई एयासिं इंदेण वरो हु दिण्ण अहमेव । घेत्तूणं ता तेणं छूढा अंतेउरे सव्वा ॥१॥ तो णागरगा रण्णो उवट्ठिता मोयवेह एताउ । तो बेति मज्झ पुत्तो किं जामाता ण रुच्चे भे ? ॥२॥ तो तासु अतिपसत्तस्स तस्स णिग्गलियसव्वबीयस्स । वेदोवघातो जातो सागारीयं ण उट्ठेति ॥३॥ तो ताहिं रुसियाहिं सो अद्दागेहिं घातित्तो ताहे । वेदोवघातपंडो एसोऽभिहितो समासेणं ॥४॥ उवहत उवगरणम्मी सेज्जातरभूणियाणिमित्तेणं । तो कविलगरस्स वेदो ततिओ जातो दुरहियासो ॥३४॥५॥ उवहयउवगरणम्मी एवं होज्जा णपुंसवेदो उ । दोसा स वेदुदिण्णं धारेतुं न चयइ णायमिणं ॥६॥ जह पढमपाउसम्मी गोणो धातु तु हरियगतणस्स । अणुमज्जति कोडिच्चं वावण्णं दुब्धिगंधीयं ॥७॥ एवं तु केइ पुरिसा भोत्तूणं भोयणं पतिविसिद्धं । ताव ण भवंति तुट्ठा जाव ण पडिसेविवो वेदो ॥८॥ लक्खणदूसियउवघायपंडगं तिविहमेव जो दिक्खे । पच्छित्त तिसुवि मूलं दोसा तहियं इमे होंति ॥९॥ तरुणादीहिं सह गओ चरित्तसंभेदिणी करे विकहा । इत्थिकहाउ कहित्ता तासि अवण्णं पगासेइ ॥३२०॥ समलं आविलगंधिं खेदो य ण ताणि आसए होंति । सागारियं णिरिक्खइ मलित्तु हत्थेहिं जिग्घइ य ॥१॥ पुच्छति सोऽवि यऽपुव्वो णपुंसगो णविति अतिसुहं एवं । आसय पोसे य तथा दुहावि सेवी अहं चेव ॥२॥ एवं पुच्छित्तु तओ अहवावि अपुच्छिरुण सह सेवे । गेण्हेज्जा ही समणं तेण कहेयव्व तो गुरुणं ॥३॥ छंदिय कहिय गुरुणं जो ण कहेति कहिएवि य उवेहि । परपक्ख सपक्खे वा जं काहिति सो तमावज्जे ॥४॥ सो समणसुविहिहं पवियारं कत्थती अलभमाणो । तो सेवितुं पवतो गिहिणो तह अण्णतित्थी य ॥५॥ अजसो य अकित्ती य तंमूलागं तहिं पवयणस्स । तेसिंपि होति संका सव्वे एतारिसा मण्णे ॥६॥ एरिससेवी एतारिसावि एतारिसो चरति सहो । सो एसो णवि अण्णो असंखडं घोडमादीहिं ॥७॥ जम्हा एते दोसा तम्हा णवि दिक्खणिज्जो पंडो हु । एसो पंडोऽभिहिओ एत्तो किलिवं पवक्खामि ॥८॥ किलिवस्स गोण्णणामं तदभिप्पओ कलिज्जए जस्स । सागरियं से गलती किलिवोत्ती भण्णती तम्हा ॥९॥ सो हू णिरुम्भमाणो कम्मदएणं तु जायए तइओ । तम्मिवि सो चेव गमो पच्छित्तं चेव जह पंडो ॥३३०॥ उदएण वातियस्सा सविगारं जा ण होति संपत्ती । तच्चणियअसंबुडित दिद्धंतो तत्थिमो होति ॥३५॥१॥ णावारूढो तच्चणितो तु दड्डुं असंबुडमगारिं । ओवतिओ पुरिसेहिं झडित्ति धारिज्माणोऽवि ॥२॥ एसो तु वातिगो हू अलभंतो सेवितुं अणायारं । कालंतरेण सोऽवि हु णपुंसगत्तेण परिणमति ॥३॥ दुविहो य होति कुंभी जातीकुंभी य वेदकुंभी य जातीकुंभी वायण्हिओ हु सो भइए दिक्खाए ॥४॥ होइ पुण वेदकुंभी असेवओ सुज्झते सि सागरियं । सोऽविय णिरुद्धबत्थी णपुंसगत्ताए परिणमति ॥५॥ वेदुक्कडता ईसालुगो हु सेविज्जमाण दड्डुणं । ण चएती धारेतुं णिरुद्धमाणो भवे ततितो ॥६॥ सउणी उक्कडवेओ चडओव्व अभिक्ख सेवए जो तु । सोऽविय णिरुद्धबत्थी णपुंसगत्ताए परिणमति ॥७॥ तक्कम्मसेवि जो खलु सेविय तं चेव लिहति साणव्व । सोऽविय अपडियरंतो णपुंसगत्ताए परिणमति ॥८॥ एगे पक्खे उदओ एगे पक्खम्मि जस्स अप्पो तु । सो पक्खपक्खिओ हू सोवि णिरुद्धो भवे अपुमं ॥९॥ सागारियस्स गंधं जिघति सोगंधिओ भवे स खलु । कालंतरेण सोऽवी अलभंतो परिणमे अपमं ॥३४०॥ विग्गह अणुप्पवेसिय अच्छति सागारियंसि आसत्तो । ण य से भावोवसमो अलभंतो सोवि अपुम भवे ॥१॥ गालिय दो भाऊगा जस्स हु सो वद्धिओ मुणेयव्वो । चिपिप्पय बालस्सेव तु चिप्पित्तु विराहितो जस्स ॥२॥ मंतेणुवहतवेदो अहवावी ओसहीहिं जस्स भवे । इसिसत्तदेवसत्तो इसिणा देवेण वा सत्ता ॥३॥ वद्धियमादि उवरिमा छच्च णपुंसा हवंति भयणिज्जा । जदि पडिसेवि ण दिक्खे अह णवि पडिसेवि तो दिक्खे ॥४॥ आदिल्लेसु दससस्सुवि पव्वावित्तो हु पावए मूलं । जो पुण पव्वावेहा वदतेवं तस्स चउगुरुगा ॥५॥ जे पुण छत्तुवरिमगा पव्वावित्तस्स चउगुरु तेसु । वदमाणेऽविय गुरुगा किं वदतेसो इमं सुणसु ॥६॥ थीपुरिसा जह उदयं धरिति झाणोववासणियमेहिं । एवमपुमंपि उदयं धरेज्ज जदि को तहिं दोसो ? ॥७॥ अहवा ततिए दोसो जायति इयरेसु किं न सो भवति ? । एवं खु नत्थि दिक्खा सवेदगाणं ण वा तित्थं ॥८॥

भण्णति थीपुरिसा खलु पत्तेयं दोसरहियठाणसु । णिवसंती इयरो पुण कहिं छुब्भति दोसुवी दोसा ॥९॥ संवासफासदिट्ठीदोसा हू तस्स उभयसंवासे । अप्पत्थंबगदिट्ठंत जह राय मतो अवारंतो ॥३५०॥ एत्थंबगदिट्ठतो अहवा जह वच्छो मातरं दट्ठुं । अभिलसती मायाविय वच्छं दट्ठुण पण्हयति ॥१॥ अंबं वा खज्जंतं दट्ठुं अहिलासो होति अण्णस्स । सागारियादि दट्ठुं एव णपुंसे भवे दोसा ॥२॥ तम्हा हु ण दिक्खिज्जा एवं णाऊणमेत दोसगणं । बितियपदे दिक्खिज्जा इमेहिं अह कारणेहिं तु ॥३॥ असिवे ओमोदरिए रायददुट्ठे भए व आगाढे । गेलन्न उत्तिमट्ठे णाणे तह दंसण चरित्ते ॥३६॥४॥ रायददुट्ठभयेसुं ताणऽट्ठ णिवस्स चैव गमणट्ठा । वेज्जो व सयं तस्स व तप्पिस्सति वा गिलाणस्स ॥५॥ पडिचरगस्सऽसतीए एगागी उत्तिमट्ठपडिवण्णे । अहवावी अ (कु) सहाए वेयावच्छता दिक्खे ॥६॥ गुरूणो व अप्पणो वा णाणादी गिण्हमाणे तप्पिहिति । अचरणदेसा णितं तप्पे ओमासिवेहिं वा ॥७॥ एतेहिं कारणेहिं आगाढेहिं तु जो तु णिक्खामे । पंडादी सोलसगं कयकज्जविंगिचणट्ठाए ॥८॥ तस्स विही होति इमो दिक्खिज्जंतस्स कारणज्जाए । सो पुण जाणिमजाणि जाणति जाणी तहा ततिओ ॥९॥ णवि कप्पति दिक्खेतुं तमुवट्ठित पण्णवेति अह एवं । तुज्झ ण कप्पति दिक्खा नाणादिविराहणा मा ते ॥३६०॥ जो पुण न जाणएवं तस्स विहि होतिमा करेयव्वा । जणपच्चयट्ठताए जाणंतमजाणए वावि ॥१॥ कंडिपट्ट भंड छिहली कत्तरि खुर लोय परमतं पाढे । धम्मकह सन्नि राउल ववहार विंगिचंण कुज्जा ॥३७॥२॥ कडिपट्ट भंड छिहली कीरति ण विधम्म अम्ह चेवासी । कत्तरि खुरेणऽणिच्छे हाणी एक्केक्क जा लोओ ॥३॥ लोएवि कए पच्छा भिक्खुगमादीमताइं पाढिंति । तंपिय अणिच्छमाणो पाढिंती छलियकव्वाइं ॥४॥ ताणिवि अणिच्छमाणे धम्मकहा ताऽवि हू आणिच्छंते परतित्थिय वत्तव्वंदिज्जति ताहे ससमहेवि ॥५॥ तंपिय अणिच्छमाणे उक्कमतो तस्स दिज्जए सुत्तं । अण्णणसुत्त पल्लव पुव्वावरओ असंबद्धं ॥६॥ वीयारगोयरे थेरसंजुतो रत्ति दूर तरूणाणं गाहेह ममंपि ततो थेरा जत्तेण गाहिंति ॥७॥ वेरगकहा विसयाण णिंदणा उट्ठणिसियणे गुत्ता । चुक्खलितम्मि बहुसो सरोसमिव तज्जए तरूणा ॥८॥ कतकज्जा से धम्म कहिंति मुंचाहि लिंगमेयंति । मा हण दुएवि लोए अणुव्वता तुज्झ णो दिक्खा ॥९॥ इय पण्णविओ संतो जइ मुंचति लिंग तो उ रमणिज्जं । अह णवि मुंचति ताहे भेसिज्जति सो इमेहिंतो ॥३७०॥ सण्णि खरकम्मितो वा भेसेइ कओ इहेस किंचिव्वो । तेसासति रायकुले यदि सो ववहार मग्गिज्जा ॥१॥ एतेहिं दिक्खिओऽहं जतिविय लोगो ण याणते कोति । जह एतेहिं दिक्खितो तो ते बिंती ण दिक्खेमो ॥२॥ अज्झाविओवि एतेहिं चैव पडिसेह किं वऽहीयं ते ? छलियकहादी कट्ठति कत्थ जई कत्थ छलिताइं ? ॥३॥ पुव्वावरसंजुत्तं वेरगकरं सतंतमविरूद्धं । पोरणमद्धमागहभासाणियतं हवति सुत्तं ॥४॥ जे सुत्तगुणाऽभिहिता तव्विवरीयाइं गाहिओ पुव्विं । तेहिं चैव विवेगो जह एरिसयं भवति सुत्तं ॥५॥ णिववल्लह बहुपक्खम्मि वावि वुडुंचगम्मि पव्वइए । वोसिरणं वोच्छामि विहीएँ जह कीरए तस्स ॥६॥ भण्णिकहाओ भट्टं बिंती ण घडति इहं खु एरिसयं । परतित्थिगादि वयसू यदि बेती तुज्झ समयंति ॥७॥ इय होतुत्ती वोत्तूण णिग्गतो भिक्खमादिलक्खेणं । भिक्खुगामदी छोढुं विपलायंती पुणो तत्तो ॥८॥ कावालिए सरक्खे तच्चणियलिंगमादि वसभा तु । तं णितु देउलादिसु सुत्तं छडित्तु वसभेन्ति ॥९॥ तिविहे होति य जड्ढो भास सरीरे य करणजड्ढो य । भासाजड्ढो चउहा जल एलग मम्मण दुमेहो ॥३८॥३८०॥ जह जलवुड्ढो । भासति जलमूओ एव भासइ अवत्तं । जह एलगोव्वं एवं एलगमुगो बलबलेति ॥१॥ मम्मणमूओ बोब्बड खलेइ वाया हु अविस्सा जस्स । दुम्मेहस्स ण किंची घोसंतस्सावि ठायइ हु ॥२॥ दंसणणाणचरित्ते तवे य समितीसु करणजोगे य । उवइट्ठपि ण गेण्हति जलमूगो एलगुगो य ॥३॥ णाणादिऽट्ठा दिक्खा भासाजड्ढो अपच्चलो तस्स । सो य बहिरो य णियमा गाहण उट्ठाह अहिकरणं ॥४॥ तिविहो सरीरजड्ढो पंथे भिक्खे तहेव वंदणए । एतेहिं कारणेहिं सरीरजड्ढं ण दिक्खेज्जा ॥५॥ अद्धाणे पलिमंथो भिक्खायरियाए अपरिहत्थो य । उडुस्सासऽपरक्कम अहिअग्गीउदगमादीसु ॥६॥ आगाढगिलाणस्स य असमाही वावि होज्ज मरणं वा । जड्ढे पासेवि ठिए अण्णे य भवे इमे दोसा ॥७॥ सेदेण कक्खमादी कुच्छण धुवणुप्पिलावणे दोसा । णत्थि गलओ य चोरो णिदियमुंडा य जणवादो ॥८॥ णेगे सरीरजड्ढे एमादीया हवंति दोसा तु । तम्हा तं णवि दिक्खे गच्छ महल्ले वऽणुण्णाए ॥९॥ इरियासमिईभासेसणासु आदाणसमिइगुत्तीसु । णवि ठाति चरणकरणे कम्मदुएणं करणजड्ढो ॥३९०॥ जलमूग एलगुगो अतिथूरसरीर करणजड्ढो य । दिक्खंतस्सेते खलु चउगुरू सेसेसु मासलहू ॥१॥ भासाजड्ढं मम्मण सरीरजड्ढं च णातिथूरं च । जावज्जिय परियट्ठे

करणे जडुं तु छम्मासे ॥२॥ मोत्तुं गिलाणकज्जे दुम्मेहं वावि पाढि छम्मासे । ताहे तं दुम्मेहं जोऽविय करणम्मि सो जडुो ॥३॥ छणहुवरि तेसि दोणहवि आयरिओ अण्ण गाहं छम्मासा । पच्छ । अण्णो ततिओ सोऽविय छम्मास परियट्ठे ॥४॥ जोऽविय तं गाहेती सिस्सो तस्सेव सो हवति ताहे । तहवि ण गिण्हे जदि हू कुलगणसंघे विगिंचणता ॥५॥ दुविहो य होति कीवो अभिभूओ चेव अणभिभूतो य । अभिभूतोऽविय दुविहो आलिद्धनिमंतणाकीवो ॥६॥ दुविहो य अणभिभूओ दिट्ठीकीवो य सद्दकीवो य । एतेसि विसेसमिणं वुच्छामि अहाणुपुववीए ॥७॥ आलिद्धो जो णिवडति इत्थीहिं एस पढमओ कीवो । जो पुण पडति णिमंतिउ सो होति णिमंतणाकीवो ॥८॥ दुव्वियडदुण्णिसण्णं णिगिणमणायारसेविणिं वावि । दट्ठूणं जो खुब्भति दिट्ठीकीवं तयं बिंति ॥९॥ अह साहम्मीणं तहऽण्णधम्मिणं अहव वावि गिहियाणं । इत्थीओ दट्ठूणं खुब्भति दिट्ठीय कीवो सो ॥१०॥ भासाभूसण तह गीतसद्द परियारसद्दमहवावि । सोऊणं जो खुब्भति सो भण्णति सद्दकीवोत्ति ॥१॥ मोहुक्कडताए ते करेज्ज दोसे इमे णिरुभंता । सज्जं इत्थिग्गंहणं मरणं अहवावि ओहाणं ॥२॥ आलिद्धणिमंतणदिट्ठिसद्दकीवाण होति आरूवणा । चउगुरू छग्गुरू छेदो मूलं च जहक्कमेणं तु ॥३॥ एत्थं दो आदिल्ले जदि दिक्खे तो हु एव परियट्ठे । जावज्जीवं णियमियचरित्तसंघातसहिण्हिं ॥४॥ दिट्ठी य सद्दकीवो णवरं दिक्खेज्ज उत्तिमट्ठम्मि । अण्णह ण तेसि दिक्खा एवं कीवो समक्खातो ॥५॥ रोगेण व वाहीण व अभिभूयस्सा ण कप्पती दिक्खा । गंडीकोढादीओ सोलसहा हवति रोगो उ ॥६॥ वाही पुण अट्ठविहो कोट्ठा (ढा) दीओ तु होति णायव्वो । तं रोगवाहिघत्थं दिक्खंते ऊ इमे दोसा ॥७॥ छक्कायसमारंभो णाणचरित्ताण चेव परिहाणी । घंसण पीसण पयणं दोसा एवंविहा होति ॥८॥ जाता अणांसाला समणाविय दुक्खिया तिगिच्छंता । तेविय पउणा संता होज्ज व समणा ण वा होज्जा ॥९॥ अक्कंतिओ य तेणो पागइओ गामदेसअद्धाणे । तक्करखाणगतेणो परूवणा तेमिसा होति ॥१०॥ अक्कंतिओ अडाडा पागइओ छिराय अहव पागतियं । हरती गामाईणं अंतर अहवावि तेसिं तु ॥१॥ तेणेव कम्मणं जीवति णऽण्णेण तक्करो स खलु । खत्ताइं जो खणती खाणगतेणो भवे स खलु ॥२॥ सो पुण तेणो चउहा दव्वे खित्ते य काल भावे य । एतेसि चउण्हंपी पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥३॥ सच्चित्ते अच्चित्ते सीमेऽविय होति दव्वतेणो हु । सच्चित्ते दुपयादी दुपदे दासाइयं होति ॥४॥ गोमादी य चउप्पय अपदं फलधण्णमादियं होति । अच्चित्त हिरण्णादी दुपयादि सभंड मीसम्मि ॥५॥ एमादि दव्वतेणो साहम्मियण्णधम्मियागिहीणं । तेणितो सो तिविहो उक्कोसो मज्झिम जहण्णो ॥६॥ हयगतमाणिक्काणि य तेणितो तेणतो उ उक्कोसो । खत्तखणकणहवन्नियगोणीतेणो तु मज्झिमओ ॥७॥ गंठीभेदग पहियजणदव्वहारी जहण्णतेणो तु । एक्केक्कस्स य एत्तो पडिच्छगपडिच्छगो चेव ॥८॥ सगदेसपरविदेसे अंतर तेणे य होति खित्तम्मि । राइंदियावि काले भावम्मि य णाणतेणादी ॥९॥ गोविंदज्जो णाणे दंसणसुत्तट्ठ हेत्तुसट्ठा वा । पारंचिगउवचरगा उदायिवहगादओ चरणे ॥१०॥ दव्वादितेण एसो पव्वावेतुं ण कप्पए सव्वो । समणाण व समणीण व पव्वाविते इमे दोसा ॥१॥ बंधण रोहण तालण दासत्तं मारणं च पाविज्जा । णिव्विसयं व णरिंदो करेज्ज संघंपि सो रूट्ठो ॥२॥ अजसो य अकित्ती या तंमूलागं तहिं पवयणस्स । ठाति गिहीणवि एवं सव्वे एयारिसा मण्णे ॥३॥ सग्गामपरग्गामे सदेसपरदेस अंतो बाहिं वा । दिट्ठमदिट्ठुक्कोसा मज्झिमजहणे इम सोही ॥४॥ मूलं छेदो छग्गुरू छल्लहु चत्तारि लहुगुरूगा य । गुरूग लहुगो य मासो एएसिं चारणा उ इमा ॥५॥ सग्गामंतो दिट्ठे उक्कोसो मूल छेदो अदिट्ठे । बाहिं दिट्ठे छेदो अदिट्ठे होंत छग्गुरूगा ॥६॥ परगामंतो दिट्ठे उक्कोसो छेदो छग्गुरूमदिट्ठे । बाहिं दिट्ठे छग्गुरू अदिट्ठे होंति छल्लहुगा ॥७॥ सद्दंसंतो दिट्ठे छग्गुरू अदिट्ठे होंति छल्लहुगा । बहिदिट्ठे छल्लहुगा । अदिट्ठे होंति चउगुरूगा ॥८॥ परदेसंतो दिट्ठे छल्लहुगा अदिट्ठे होंति चतुगुरूगा । बहिदिट्ठे चतुगुरूगा अदिट्ठे होंति चउलहुगा ॥९॥ एवं ता उक्कोसे मज्झे छेदादि ठाति गुरूमासे । छग्गुरूगादि जहण्णे ठायइ अंतम्मि लहुमासे ॥१०॥ तियपद मुक्कमोचिय अहवा वीदज्जितो णरिदेणं । अद्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्ठं वा ॥१॥ रत्तो उवरोहादिसु संबद्धे तह य दव्वजोगम्मि । अब्भुट्ठिओ विणासाय होइ रायावकारी तु ॥२॥ सच्चित्तअचित्तमीसगमवकारे दूतलेह उवकरणं । समणाण व समणीण व न कप्पते तारिसे दिक्खा ॥३॥ आसो हत्थी खरिया वाहीतं कतकतं च कळागादी । अहवा सभंडमत्ता खरियादी अवहिता होज्जा ॥४॥ दोच्चविरूद्धं च कतं होज्जाहि पउत्तकुडलेहो वा । पिउपुत्तभाउगादी कोई वहिओ व से होज्जा ॥५॥ तं तु अणुद्धियदंडं जो पव्वावेति होति मूलं से । एगमणेग पओसा होज्जा पत्थारदोसा वा ॥६॥

बितियपद मुक्कमोचिय अहवा वीसज्जितो णरिदेणं । अब्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्टे वा ॥७॥ उम्मदो खलु दुविहो जक्खादेसो य मोहणिज्जो य । दुविहंपि ण दिक्खिज्जा दोसा तु भवे इमे तस्स ॥८॥ अगणी आलीवणता आयवयविराहणा य उड्डाहो । छक्काय र सद्धहती सज्झायज्झाणजोगे य ॥९॥ पडिलेहणादि वितहं करेति समितीसु असमितया वावि । उवदिट्ठपि ण गिण्हति तम्हा णवि दिक्खे उम्मत्तं ॥१०॥ दुविहो अदंसणो खलु जातिउ उवघाततो य णायव्वो । उवघातो पुण तिविहो वाही उवघाउ अंजणता ॥१॥ एयपसंगेणं चिय अवरो थीणद्धिओ मुणेयव्वो । एतेसिं सोहि इमा जहक्कमेणं मुणेयव्वा ॥२॥ उद्धियणयणे तह सेसएसु थीणद्धितो तु कमसो तु । छग्गुरू चउग्गुरू चरिमे दोसा तहिं दिक्खिते इणमो ॥३॥ छक्कायविउरमणता आवडणं खानुकंटादीसु । थंडिलअप्पडिलेहा अंधस्स ण कप्पती दिक्खा ॥४॥ आवहति महादोसं दंसणकम्मोदएण थीणद्धी । एगमणेगपओसेजं काही तं तु आवज्जे ॥५॥ गब्भे कीए अणए दुब्भिकखे सावराहि रूद्धे य । एमादि होंति दोसा ण कप्पती तारिसे दिक्खा ॥६॥ राया व रायमच्चो कितिकम्मं संजताण कुव्वंतो । दट्ठूण दुवक्खरयं सव्वे एयारिसा मण्णे ॥७॥ वह बंधं उद्ववणं खिंसण दासत्तमेव पावेज्जा । णिव्विसयंपि णरिंदो करेज्ज संघंपि सो रूद्धो ॥८॥ अजसो य अकिती या तंमुलागं तहि य पवयणस्स । लोगस्स होति संका सव्वे एयारिसा णूणं ॥९॥ मुक्को व मोइओ वा अहवा वीसज्जितो णरिदेणं । अद्दाण परविदेसे दिक्का से उत्तिमट्टे वा ॥१०॥ दुविहो य होति दुट्ठो कसायदुट्ठो य विसयदुट्ठो य । दुविहो कसायदुट्ठो सपक्खपरपक्खचउभंगो ॥१॥ सासवणाले मुहणंतए य उलुगच्छि सिहगिणि सपक्खे । सासवणाल संसुभिय एणेण गुरूणमुवणीयं ॥२॥ सव्वं गुरूरा कइयं कयरे कोवो य खामणागुरूणा । अणुवसमंते उ गणे गणिं ठवेत्ताऽन्नहिं परिच्चा ॥३॥ पुच्छंतमणक्खाए सोव्वइ अण्णस्स (सवणातो गंतु) कत्थ से देहं । गुरूणो पुव्वं कहिते दाई पडियरण दंतवहो ॥४॥ मुंहणंतगस्स गहणे एमेव य गंतु णिसि गलग्गहणं । संमूढेणियरेणवि गलए गहितो मया दोवि ॥५॥ अत्थं गतेवि सिव्वसि उलुगच्छी उक्खणामि तुह अच्छी । पढमगमो णवरि इहं उलुगच्छीउत्ति ढोंकेइ ॥६॥ सिहरिणि लुद्ध णिवेदे गुरूण सव्वादितंति उगिरणा । भत्तपरिण्णा अण्णहिं ण गच्छती सो इहं णवरि ॥७॥ परपक्खम्मि सपक्खे उदातिणिवमारतो जह व दुट्ठो । सो पवयणरक्खणट्ठा णिच्छुब्भति लिंग हातूणं ॥८॥ परपक्खि सपक्खे पुण जउणारायव्व सो तु भयणिज्जो । तं पुण अतिसयणाणी दिक्खंतंऽधिगारिणं णाउं ॥९॥ परपक्खे परपक्के दंडियमादी पदुट्ठ परदेसे । उवसंते वाऽन्नत्थ उ दमगादि पदुट्ठ भयितो वा ॥१०॥ तिविहो य विसयदुट्ठो सलिंग गिहिलिंग अण्णलिंगे य । अहवा सव्वेवि दुहा सपक्खपरपक्खचउभंगो ॥१॥ परपक्खविसयदुट्ठो सपक्ख पारंचिओ तु आउट्ठो । अठियम्मि लिंगहंरणं एमेव सपक्ख परपक्खे ॥२॥ परपक्खं तु सपक्खे विसयपदुट्ठ ण तं तु दिक्खंति । सज्जि (ज्झि) यादिपदुट्ठं ण य परपक्खं तु तत्थेव ॥३॥ दव्वदिसखेत्तकाले गणणा सारिक्ख अभिभवे वेदे । वुग्गाहणमण्णाणे कसायमत्ते य मूढपदा ॥४॥ दव्वि दुहा बहि अंतो अंतो धत्तुरगादि बहि धूमो । जावदवियं ण याणति घडियावोद्वव दिट्ठति ॥५॥ दिसमूढो पुव्वमवरं मण्णति खेत्तम्मि खेत्तवच्चासं । दियरातिविवच्चासो काले पिंडारदिट्ठंतो ॥६॥ जह कोई पिंडारो खीर णिसट्ठाए पाउ (रत्ति) पासुत्तो । अब्भच्छण्णे उट्ठिओ मण्णति जह वट्टए रत्ती ॥७॥ महिसीओ पविसंतो दिट्ठो लोएण हसियतो ताहे । किं एयंतिय भणियं एमादी कालमूढेसो ॥८॥ ऊणहियं मण्णंतो उट्टारूढो व गणणतो मूढो । सारिक्ख थाणुसरिसो महतरसंगामदिट्ठंतो ॥९॥ जह एक्के गामम्मि चोरो पडिया तु तत्थ जुद्धम्मि । सेणावति तहिं वहिओ सारिक्खो महतरो व णितो ॥१०॥ सो णीय चोरपल्लिं इयरो दट्ठो य तेण गामेणं । बेति य चोरे महतरो णाहं सेणावती तुज्झं ॥१॥ तो ते चोरा बिंती गहिओ एसो रणपिसायीते । तो णासिऊण तत्तो गामगतो बेति यो नियगा ॥२॥ दट्ठो सी अम्हेहि किं देवेहिं जियावितो तं सी ? । इय सारिक्खविमुढा दोण्णिवि गामेल्ल चोरा य ॥३॥ अभिभूतो संमुज्झति सत्थग्गीवात (चोर) सावयादीहिं । अब्भुदय अणंगरती वेदंमी रायदिट्ठंतो ॥४॥ जह कोति रायपुत्तो बालो अच्छीसु दुक्खमाणासु । मादुगहसारिसारियसंफुसण ठितो तु तुण्हिक्को ॥५॥ लद्धोवाउत्ति तओ एवमभिकखं तु ताहे सा कुणति । सोऽविय विवद्धमाणो सत्तो तीए तु पासम्मि ॥६॥ तीयवि अणुप्पियं चिय पितुउवरमणे य तस्स रायत्तं । तहवियं तं पडिसेवति सचिवादिणिसिज्झमाणोवि ॥७॥ वुग्गहितो परेणं कज्जमकज्जं

च ण मुणती जो तु । सो वुगाहणमूढो दिट्ठंता दीवजातादी ॥८॥ वणिदारग पियमहिलो तीय समं गमण वारिजाणेणं । गब्भिणि पोतविवत्ती समुद्धमज्झे फलगलगा ॥९॥ अंतरदीवुत्तिणा पसूयदारग विवद्धितो कमसो । तेण सह लग्ग वितिरिच्छपोतरूढा गता सपुरं ॥१०॥ वुगाहिय तीय सुतो ण मुणति लोणेण भण्णमाणोऽवि । जह जणणि तवेसत्ती अगम्मगमणं ण वट्ठति उ ॥१॥ जह वा अणंगसेणो ण मुणति वुगाहियऽच्छराहिं तु । मित्तवयणं हियंपी जह वावि सुवण्णगारीणं ॥२॥ वुगाहितो तु बोद्धो मा हीरेज्जा सुवण्णकारेणं । तुज्झं तु मोरगाइं छाएमी तंबएण अहं ॥३॥ लोगो य तुमं भणिहिति हरियाइं मोरगाइं बोद्ध ! तुहं । तं मा हु पत्तियाही एवं च भणिज्जसी लोगं ॥४॥ जो एत्थं भूतत्थो तमहं जाणे कला य मासो य । सोऽविय एवं भणती वुगाहिय अहव अंधलगा ॥५॥ अंधलग्गभत्तणिवे सयणासणभत्तवसहिमादीहिं । सुपरिग्गहितंधलगा तेवि य धुत्तेण भणिता य ॥६॥ अहयम्मि अंधदासो अम्हं राया य अंधलग्गभत्तो । इह दुक्खिय तहिं वच्चह जह कयपुण्णोव्व दियलोयं ॥७॥ इय होतुत्ति य णेहिं णेतुं रत्तिं तु डोंगरंतेण । वेढेऊण पुरिल्लो लाविउ मग्गिलपट्टीए ॥८॥ आणह भे जं अत्थि एत्थ चोराण पतिभयं ठाणे । गेणह य पत्थर मा य हु कासति देहित्थ अल्लियितुं ॥९॥ भणिहिंति चोर तुब्भे केणेते अंधला वरागा तु । गिरिडोंगरा चढाविय पहणह ते पत्थरेहिं तु ॥१०॥ इय वोत्तूण पलाओ धित्तूणं अत्थजातयं तेसिं । ते य पभाते दिट्ठा गोवादीएहिं भणिता य ॥१॥ केणेते एव कता इय वुत्ते पत्थरेहिं ते पहया । णवि दिंति अल्लियावं वुगाहिय एवमादीया ॥२॥ वणिमहिल मूढु दव्वे वेयम्मि य मूढु होति राया ऊ । वुगाहणमूढा पुण दीवादी सेस दव्वेवि ॥३॥ अण्णाणमूढ इणमो दाइज्जंतं पि कारणसतेहिं । जो सप्पहं ण याणति जच्चंधो चेव जह चंदं ॥४॥ कोहादिकसाओदयमूढो णवि जाणती मणूसो तु । इह य परम्मि य लोए हिताहितं कज्जऽकज्जं वा ॥५॥ दव्वेण य भावेण य दुविहो मत्तो तु होति णायव्वो । मज्झदादी दव्वे माणट्टविहेण भावम्मि ॥६॥ मोत्तूण वेदमूढं आदिल्लाणं तु णत्थि पडिसेहो । वुगाहण अण्णाणे कसयमूढो पडिक्कुट्टो ॥७॥ सच्चित्तं च अचित्तं मीसगं जो अणं तु धारेति । समणाण व समणीण व ण कप्पते तारिसे दिक्खा ॥८॥ अयसो य अकिती या तंमूलागं तहिं पवयणस्स । अणचोप्पडझंझडिया सव्वे एतारिसा मण्णे ॥९॥ बितियपद दाणतोसिय अहवा वीसज्जितो पभुणं तु । अब्धाण परविदेसे दिक्खा से उत्तिमट्टे वा ॥१०॥ चउरो य जुंगिया खलु जाती कम्मे य सिप्प सारीरे । जातीय पाणवरूडाडोंबाणिक्कारमादीया ॥१॥ पोसगसंवरणडलंखवाहसोयरियमच्छिगा कम्मे । पडकारा य परीहर (सह) रजगा कोसेज्जगा सिप्पे ॥२॥ करपादकण्णणासियओट्टविहूणा य वामणा वडभा । खुज्जा पंगुलकुंटा काणा एते अदिक्खेया ॥३॥ पच्छा य होंति विगला आयरियत्तं ण कप्पए तेसिं । सीसो ठावेयव्वो काणगमहिसोव्व णिण्णम्मि ॥४॥ जे पुण जातीजुंगित कम्मे सिप्पे य तिण्णिवि ण दिक्खे । बितियपदे दिक्खेज्जा एएहिं कारणेहिं तु ॥५॥ जाहे य माहणेहिं परिभुत्तो कम्मसिप्पडिविरतो । अब्धाण परविदेसे दिक्का से अब्भणुण्णाया ॥६॥ कम्मे सिप्पे विज्जा मंते जोगेण चेव ओबद्धे । समणाण व समणीण व ण कप्पए तारिसे दिक्खा ॥७॥ कम्मं तु उड्डुमादी सिप्पं सिक्खिज्जते गुरुविदेसा । लोहारादी तं पुण विज्जकलालेहमादीओ ॥८॥ अहवा विज्ज ससाहण मंतो पुण होति पढियसिद्धो तु । वसिकरणपादलेवादि ततो उ जोगा मुणेयव्वा ॥९॥ गोवालादी कम्मे ओबद्धा छिण्णऽछिण्ण कालेणं । दिण्णा अदिण्णभतिया दिण्णभतीया ण कप्पंति ॥१०॥ सिप्पादी सिक्खंतो सिक्खावित्तस्स देंति जा सिक्खा । गहितम्मिवि सव्वंपी जच्चिरकालं तु ओबद्धा ॥१॥ बंध वहो रोहो वा हविज्ज परिताव संकिलेसो वा । ओबद्धगम्मि दोसा अवन्न सुते य परिहाणी ॥२॥ मुक्को व मोइओ वा अहवा विसज्जितो णरिदेण । अब्धाण परविदेसे दिक्खा से अब्भणुण्णाया ॥३॥ दिवसभयए व जतामतीय कव्वालभयग उच्चते । भयओ चतुव्विहो खलु ण कप्पते तारिसे दिक्खा ॥४॥ दिवसभयओ उ धिप्पइ छिण्णेण धण्णेण दिवसदेवसियं । जत्ता तु होति गमणं उभयं वा एत्तियधणेणं ॥५॥ कव्वाल उड्डुमादी हत्थमितं कम्ममेत्तियधणेणं । एच्चिरकाले ध (व) ते कायव्वं एत्तियधणेणं ॥६॥ कतजत्तगहियमोल्लं दिक्खे अकयाय होति पडिसेहो । पव्ववित्ते गुरुगा गहिए उड्डाहमादीणि ॥७॥ छिण्णमछिण्णे य धणे वावारे काल इस्सरे चेव । सुत्तत्थजाणएणं अप्पाबहुयं तु णायव्वं ॥८॥ वावारे काल धणे छिण्णमछिण्णे य होंति भंगट्टु । साहिय गहिते य कते मोत्तुं सेसेसु दिक्खेंति ॥९॥ गहिए व अगहिते वा छिण्णधणे साधिते ण दिक्खंति ।

अच्छिण्णधणे कप्पति गहिते व अगहिते वावि ॥५२०॥ जत्थ पुण होति छिण्णं थोवो कालो य होति कम्मस्स । तत्थ अणिससरदिक्खा इस्सरो बंधंपि कारेज्जा ॥१॥
 घेतुं समय समत्थो रायकुले अत्थहाणि कहुंते । फेल्लस्स तं ण कप्पति रोद्दोरसवीरिए भयणा ॥२॥ सेहस्सा णिप्फेडिय जो सेहं घेतु आसियाडेति । सो पुण वतेण केरिसो
 ण कप्पती आसियाडेतुं ॥३॥ अप्पडुपण्णो बालो सोलसवरिसूणो अहव अणिविट्ठो । अम्मापितुअविदिण्णो ण कप्पती तत्थ वऽण्णत्थ ॥४॥ ततियवतअतीयारो
 णिप्फेडण तेणसद्द भइणिज्जो । तेणे य तेणतेणे पडिच्छगपडिच्छगे चउहा ॥५॥ ततियवतस्सऽतियारो णिक्खाविंतस्स सेहमविदिण्णं । भयणा तेणगसद्दे होती
 इणमो समासेणं ॥६॥ जो सो अप्पडुपण्णो बिरट्ठवरिसूण अहव अणिविट्ठो । तं दिक्खितऽविदिण्णं तेणो परतो अतेणो तु ॥७॥ अहवा मुंडित ससिहे भइयव्वो होति
 तेणसद्दो तु । एक्केक्कस्स य इत्तो चउभंगो होइमो कसमो ॥८॥ मुंडपभुपेल्लए या चउभंगो पढमतिय अणुण्णाया । ते हरमाणो अतेणो सेसेसु तु तेणओ होति ॥९॥
 एव पभुससिहपिल्लग चउभंगो णूण एत्थवि तहेव । एतेण कारणेणं तेणगसद्दो तहिं भजितो ॥५३०॥ अहवऽण्णो चउभंगो ससिहेगं एक्को णेति इति एक्को । असिहम्मि
 होति बितिओ तेणा चत्तारि तत्थ इमे ॥१॥ जो गन्तु सयं णेती सो तेणो होति लोगउत्तरिओ । भिक्खादिगते तम्मि तु हरमाणो तेणतेणो तु ॥२॥ तं पुण पडिच्छमाणो
 पडिच्छओ तस्स जो पुणो मूला । गिण्हति एगंतरिओ पडिच्छगपडिच्छगो स खलु ॥३॥ तइयव्वताइयारो एवं णिंतस्स होइ सेहं तु । अण्णे य इमे दोसा गहणादीया
 भवे तस्स ॥४॥ अम्मपितरो कस्सति विपुलं घेतूण अत्थसारं तु । रायादीणं कहते कहियम्मि य गिण्हणादीया ॥५॥ विप्परिणमे व सण्णी केई संबंधिणो भवे तस्स ।
 विप्परिणया य धम्मं मुएज्ज कुज्जा व गहणादी ॥६॥ आयरियउवज्झाया कुल गण संघो तहेव धम्मो य । सव्वेवि य परिचत्ता सेहं णिप्फेडयंतेणं ॥७॥ तम्हा तु ण
 हायव्वो बतियपदेणं हरेज्ज व कयादि । होही जुगप्पहाणो ण य दोसा तत्थ केति भवे ॥८॥ तो अतिसेसी दिक्खे ओहीमादी अमूढहत्यो वा । थिरहत्यो व अमूढो
 दिक्खेज्जा सो तहिं चेव ॥९॥ केति पुण मंदधम्मा बितियपदणिसेवियं ववदिसंति । वडपादवोविव जहा मूलविणट्ठा णहविलग्गा ॥५४०॥ णिप्फेडियमिच्छंता
 रक्खियमालंबणं ववदिसंति । मूलविणट्ठो व वडो जह चिट्ठति लग्गपादेसु ॥१॥ एवं तु मूलसुत्तं छड्ढेतुं ते तु लग्ग साहासु । साकारण णिप्फेडी णिक्कारणओ य
 पडिकुट्ठो ॥२॥ जे केइ सेहदोसा बालादीता मए समक्खाता । ते चेव य सविसेसा गुव्विणि तह बालवच्छासु ॥३॥ कह ते तु संभवती गब्भम्मी तम्मि चेव बाले य ।
 दिट्ठा तु बालदोसा होज्ज कदादी णुपुंसो वा ॥४॥ एवं अवसेसावी णवरं मोत्तूणिमे तहिं अणले । वुड्ढं जडुसरिरं तेणं रायावकारिं च ॥५॥ दासमणत्तं च तहा ओबब्भं
 भतग सेहणिप्फेडिं । अवसेस अणलदोसा भइयव्वा गुव्विणीए उ ॥६॥ अहवावि गुव्विणीए अन्ने दोसा इमे भवती हु । कायभवत्थो बिंबं चतिफिति वयणम्मि व
 मरेज्जा ॥७॥ कवि तेणे रायावकारि दुट्ठे य सेहणिप्फेडे । गुव्विणीए य जहक्कम वोच्छं आरोवणं इणमो ॥८॥ मूलं चतुगुरू पारंचिया दुवे चउगुरुं तओ मूलं ।
 अहवाऽवकारि मोत्तुं सेहं वा सेस मूलं तू ॥९॥ पारंची मूलं वा अवकारिणं सेहे होंति चउगुरूगा । सेसेसु ठाणएसुं चउगुरूगा हू मुणेयव्वा ॥५५०॥ बाले वुड्ढे कीवे
 जड्ढे मत्ते अदंसणे चेव । करमादिजुंगिए वा जदि पच्छा होज्ज णिक्खंतो ॥१॥ गच्छे संगहियाणं संवासो तेसि होति णिदिट्ठो । ण विड (उ) ताणं णियमा एगट्ठाणे य
 पाएण ॥२॥ होज्जाहि गुव्विणीयवि जह पउमवतिव्व खुडुमाया वा । तं तू उवस्सयम्मी भावियसद्देसु वा गोवे ॥३॥ जिणपवयणपडिकुट्ठो जो पव्वावेति लोभदोसेणं ।
 चरितट्ठितो तवस्सी लोवेइ तेमव तु चरित्तं ॥४॥ पव्वाविओ सियत्ती सेसं पणगं अणायरणजोग्गं । अदुवा समायरंते पुरिमपदऽणिवारिया दोसा ॥५॥ पव्वावण
 मुंडावण सिक्खावणुवट्ठ भुंज संवसणा । पढमपदहीण सेसा पंच पदा तेहिं वज्जेन्ति ॥६॥ पव्वज्जा तु अभिहिया सा पुण होज्जा कहं तु पव्वज्जा ? । तं वत्तुमणाऽयरिओ
 गाहासुत्तं इमं आह ॥७॥ छंदा रोसा परिजुण्णा, सुविण्णाणा पडिस्सुता । सारणिया रोगिणिया, अणाढिया देवसण्णत्ती ॥३९॥ल० १०॥८॥ (व) च्छाणुबंधिया
 (१०) अजणियकणिया बहुजणस्स सम्मुदिया । अक्खाता संगारा वेयाकरणे सयंबुद्धा ॥४०॥ल० ११॥९॥ पल्लि सुराऽभय देवी वड तेतलि मूग वासुदेवे य ।
 उद्दायण मण (१०) केसी जंबु पभव मल्लि सोम जिणा ॥४१॥ल० १२॥५६०॥ गामेगो चोर पडिया वत्थहिरण्णादि गेण्हितुं ते य । संपट्टिते य पल्लिं रूववती

महिलिया भणति ॥१॥ किं न हरह महिलाओ ? चोरा चिंतंति इच्छिया महिला । गेतुं पल्लीवतिणो उवणीया तेण पडिवण्णा ॥२॥ तीय धवो सयणेणं भणितो किं बंदिगं ण मोएसि ? । गंतूण चोरपल्लिं थेरीं ओलगाए पयओ ॥३॥ किं ओलगासि पुत्ता ! चोरेहिं भारिया इहाणीया । विरहे तीएँ कहेती इहागतो तुज्झ भत्तत्ति ॥४॥ कहिए तु चोरअहिवम्मि पउत्थे भणति अज्ज रत्तीए । पविसतु चोरहिवोकं पविट्ठे (पच्छा) सेणावती आओ ॥५॥ हेट्ठा आसंदि पवेस चोरहिवं भणति धुत्ति इणमो तु । जदि एज्ज मज्झ भत्ता तस्स तुमं किं करिज्जासि ? ॥६॥ चोराहिवाह सक्कारइत्त तुम देज्ज तो करे भिउडिं । आह ततो चोरहिवो दारे थंभम्मि उल्लंबे ॥७॥ वद्धेहिं वेढेज्जा तुट्ठा सण्णेति हेट्ठु संदीए । णीणेतुं चोरहिवा कंभे वद्धेहिं वेढेइ ॥८॥ सुणाएण खइय वद्धे पासुत्ताणं च चोरअहिवस्स । सगअसिणा छेतूणं सीसं गहिइत्थिओ भण (चल) ति ॥९॥ णीणीज्जंती सीसं चोरहिवस्स तु सा गहेऊणं । गालंती ऊ रूहिरं अह गच्छति मग्गतो तस्स ॥१०॥ जाहे जातब्भासं ताहे सीसं तयं पमोत्तूणं । दसियाचीराईणि य साडिंति य जाति चिंधट्ठा ॥१॥ जाहे य णिट्ठिताइं ताहे तणपूलियाओ बंधंती । वच्चति अवयक्खंती पुणो पुणो मग्गतो सा तु ॥२॥ गोसे य पभायम्मि सेणहिवं घाइयं ततो दट्ठुं । लगा कुढेण चोरा पासंति य ताणि चिंधाणि ॥३॥ रूहिरदसिगादियासं अणिच्छिया णिज्जइत्ति मण्णंता । तुरियं धावे कुढिया ताणिविय पभायकालम्मि ॥४॥ पंथस्स एगपासे ठियाणि कुढिएण जाव दिट्ठाइं । तं खीलेहि वितड्डिय महिलं घेतूण ते य गता ॥५॥ ते चोरा तं णेउंचारोहिवभाउगस्स उवणिंति । सा तेणं पडिवण्णा चोराहिवपट्टबंधम्मि ॥६॥ इतरोवि खीलएहिं वितडडिओ अच्छती तु अडवीए । जूहाहिवणिज्जूढो अह एति अणीहुतो तहियं ॥७॥ तो कवितो दट्ठुणं कहिं मण्णे एस दिट्ठुपुवोत्ति चिंतंऊणं सुचिरं संभरिता णियगजाती तु ॥८॥ अहमेतस्स तिगिच्छी आसि विसल्लोसहीय तं मोए । संरोहिणीएँ ततो संरोहेत्ता वणे तस्स ॥९॥ लिहतिऽक्खरा अणिहुओ सोऽहं वेज्जो तवासि पुव्वभवे । संभारिय संभिण्णाणऽतो उ ते वाणरो कहते ॥१०॥ जह जुहा णिच्छूढो साहिज्जं मज्झ कुणसु वरमिन्ता ! आमंति तेण भणितो जूहं गंतूण ते लगा ॥१॥ दोण्ह विसेसमणातुं ण किंचि कासीय सो हु साहिज्जं । णट्ठो लुत्तविलुत्तो लिहति ततो अक्खरा पुरतो ॥२॥ किं साहिज्जं ण कतं ? पुरिसाह ण जाण दोण्हवि विसेसं । तो तुट्ठो वाणरतो वणमालं अप्पणो विलए ॥३॥ लगे सेग पहारेण मारितुं चोरपल्लिमतिगंतुं । रत्तिं मारिय चोराहिवं तुं तं गिण्हितुं इत्थिं ॥४॥ सग्गामं आणेत्ता इत्थि उवणेति सयणवग्गस्स वेरग्गसमाजुत्तो धिरत्थु इत्थीइ जो भोगो ॥५॥ मज्झत्थं अच्छंतं सयणो जंपति तु झायसे किण्णु ? । किं वाऽसि कडुयकामो ? भणती काहऽप्पणो छंदं ॥६॥ थेराणंतिय धम्मं सोतुं पव्वज्जमब्भुवेसी य । एसा छंदा भणिता अहुणा रोसा तु पव्वज्जा ॥७॥ सीसारक्खो रण्णो धम्मं सोऊण सावओ जातो । मा मारेही कंची उज्झित्तु असिं धरे दारूं ॥८॥ तप्पडिणिरायकहिए पिच्छामि असिंति सावएणुत्तं । सम्मद्विटीदेवयसारक्खिज्जोत्ति तो कट्ठं ॥९॥ दिव्वप्पभावमायसमयं तु दट्ठुण कुट्ठो तो राया । णिज्जंति पच्चणीए सट्ठो तेसिं तु रक्खट्ठा ॥१०॥ बेति णरिंदं अह सो मा एतेसिं तु रूसहा तुब्भे । जं जंपियमेतेहिं तं सव्वं णरवर ! तहेव ॥१॥ ताहे छोढूण पुणो णिक्कुट्ठ असी तु णवरि दारूमओ । दिट्ठो णरवसभेणं विम्हइओ बेति किं एयं ? ॥२॥ जंपति सट्ठो ताहे णरवर ! देवप्पसाद इच्चेसो । पावविवज्जी उ णरा हवंति देवाणऽवी पुज्जा ॥३॥ तो तुट्ठो भणति णिवो सेवसु एमेव दारूअसिणा उ । कडगादीहि य पुजितो पावितो सुमहंतमिस्सरियं ॥४॥ कालगयम्मि सट्ठे पुत्तो णामेण चंडकण्होत्ति । पडिवण्णो तं भोगं सामंते पुणऽणमंतम्मि ॥५॥ पेसेति चंडकण्हं गंतूणं घेतू सजियमाणेति । तुट्ठो य भणति राया किं देमि अहाह सो इणमो ॥६॥ जं खज्जपेज्जभोजजं गेणहेज्ज पुरिम्मि तं तु सुग्गहियं । इय होतुत्ति य भणिय वारूणिपाणप्पमादेणं ॥७॥ रत्तिं चिरस्स सगिहं आगच्छति भज्जमातरो तस्स । दुहिया जग्गंतीओ उण्णिहा अण्णदा रत्ति ॥८॥ चिरकत दारं पिहए अह वदती आगाते तु सो दारं । उग्घाडंतो जणणिं वएंसु जत्थेरिसे वेले ॥९॥ उग्घाडिय दाराइं तहियं वच्चत्ति मातु रूसितो तु । सरा हुग्घाडियदारुत्ति गन्तु साहूणमल्लियओ ॥१०॥ पव्वावेह लवेई तेऽविय मत्तोत्तिकातु वक्खेवं । बिंती गोसग्गम्मी पभाते पव्वावइस्सामो ॥१॥ सयमेव कुणति लोयं ताहे लिंगं दलंति जतिणो तु । पव्वाविंती विहिणा एसा दोसा तु पव्वज्जा ॥२॥ दमगं भइयं कम्मं कुणमाणं दट्ठु सावओ पुच्छे । केवतिभतीय कम्मं करेसि ? पाएण पच्चाह ॥३॥ दाहामी

पतिदिवसं तव पादं गंतु साहुणो बुहि । सावेण पेसिओ हं करेज्ज जं आणवे साहू ॥४॥ साहू भणंति दमगं जो पव्वइउं करेति कम्मऽम्हं । तं कारवेमु ण गिहिं पव्वइओ दव्वओ ताहे ॥५॥ साहू भणंति दिवसं पढियव्वं जं च देमु उवएसं । एयं कम्मं अम्हं सिक्खं दुविहंपि गाहितिं ॥६॥ कतिवय दिवस गतेहिं अह सद्धो भणति तं भतिं गेणह । उक्कोसगभत्तेणं सुहित्तो रत्तो लवे इणमो ॥७॥ अच्छतु तुभं हत्थे जति ता मग्गे तदा दलेज्जाहि । कतिवय दिवसेहिं ततो अभिगयधम्मो उवट्ठियओ ॥८॥ परिजुण्णेसा भणिता सुविणे देवीएँ पुप्फचूलाए । नरगाण दंसणेणं पव्वज्जाऽऽवस्सए वुत्ता ॥९॥ चतुरो तु गोणपाला सत्था हीरं जतिं तु अडवीए । पडिलाभिंति पहट्ठा दोहिं दुगुछाइयं तहियं ॥६१०॥ दियलोगगता तत्तो चइतु दुगुंछा दसणि दासत्तं । तत्तो मिगा य हंसा सोवागा चित्तसंभूता ॥१॥ अदुगुंछी तित्थगरं पुच्छति किं सुलभदुलभबोहीऽम्हे । तित्थंकराह विग्घं अम्मापितरो करेहिंति ॥२॥ तो ओहीनाण पासित्तु माहणपुत्तत्त णगरमुसुगारे । सो माहणो अपुत्तो पुच्छति णेमिच्चि ए वहवे ॥३॥ ते काउ समणरूवं उसुगारपुरम्मि आगता कहए । बहुजण तीतादीणिं तो पुच्छे महाणो ते उ ॥४॥ होज्जऽम्ह किं चऽवच्चं पच्चाह चुया दिया तु होहिंति । दो जमलदारगा तू कुमारगा पव्वइस्संति ॥५॥ मा तेसि करेज्जासी विग्घमवस्सं च तेसि पव्वज्जा । होही वोत्तूण गता चइउं उववन्नया तेसिं (सु) ॥६॥ बालत्तऽम्मापितरो भणंति समणाण सरिसरूवेणं । रक्खस माणुसखागा भमंति दट्ठुण ते पुत्ता ॥७॥ मा तेसि अल्लिएज्जह दूरंदूरेण परिहरिज्जा ह । मा भक्खेज्जा ते भे तेसिं वयणं पडिसुणेंति ॥८॥ रत्थादि जत्थ पासंति संजते ते तओ पलायंति । अह अन्नया नगर बहिं चेडे पासंति वंदंते ॥९॥ बिंति य अम्मापितरो दिट्ठऽम्हे चेड वंदमाणा तु । णवि समणरूवि रक्खस भक्खिंति व चेडरूवाइं ॥६२०॥ चित्तेतऽम्मापितरो अतिवीसत्था इमे हु जायत्ति । मा पव्वएज्ज इहतिं अल्लियमाणा तु समणाणं ॥१॥ सउवज्झाया एते वइयं णिज्जंतु तत्थऽहिज्जंतु । इय संचित्तेऊणं वइयं णीता ततो तेहिं ॥२॥ वइयाएँ समीवम्मी मणाभिरामो तु अत्थि वडरूक्खो । अह अण्णदा कदाई ते तु रमंता गता तहियं ॥३॥ सत्था हीणा य जती तिसियकिलंता तु आगता तहियं । एत्थ करेमो भिक्खं वडहेट्ठा पट्ठिता तत्तो ॥४॥ तो ते भयाभिभूता चेड विलग्गा तमेव वडरूक्खं । जतिणोऽविय तस्स हेट्ठा ठातुं पविसंति भिक्खट्ठा ॥५॥ णवरि पवत्ति गुरु तहियं अज्झयण णलिणगुम्मति । ता ते सरंति जातिं ओयरितुं वंदितुं बिंति ॥६॥ अम्मापितरो पुच्छित्तु पव्वज्जं अब्भुवेमो सेसं तु । जह उसगारज्झयणे वक्खातं सुत्तआलावे ॥७॥ एसा पडिस्सुता खलु पव्वज्जा सारणी तु ळातेसु । चोइसमे अज्झयणे जह तेतलि पोट्टिला बोहे ॥८॥ पतिठाणे जुवराया राहायरियाण पासि णिक्खंतो । तगराएँ तस्स भगिणी दिण्णा जितसत्तुरायस्स ॥९॥ तगरगताण कदायी उज्जेणीओ य आगतो साहू । राहगुरुपुच्छऽणाबाह बेंति बाहेति रायसुतो ॥६३०॥ पुत्तो पुरोहियस्स य दोऽवेते णिवघरम्मि बाहंति । तं सोतुं जुवणिवमुणी बेती मम नत्तुओ सो तु ॥१॥ सासेमि तं दुरप्पं आपुच्छिय गुरु गतो उ उज्जेणिं । णिरूवसग्गं तु पुट्ठा तं चेव कहिंति से जतिणो ॥२॥ भिक्खट्ठ णिग्गयम्मि य भणितो अच्छाहि आणइ स्सामो । भत्तट्ठ अत्तलाभीति बेति दंसेह णिवओकं ॥३॥ दंसेतूण णियत्तो खुड्ढो इयरो व गंतु णिवओकं । सद्देण महंतेणं अह कुणती धम्मलाभं तु ॥४॥ तो तेहिं सो तु दिट्ठो परितुट्ठेहिं च णेहिं सो गहिओ । भळितो त णच्चसुत्ती इय होतू तेण ते भणिता ॥५॥ गायह तुब्भे हि ततो ते तु पगीता पणच्चिओ साहू । ता ते उवद्वित्ता साधुणा खित्तिया दोवि ॥६॥ पुणरवि बेंती गायसु तुमं तु अम्हे उ णच्चिमो इण्हिं । इय होत्तुत्ति य भणिते पणच्चिता ताहे ते दोवि ॥७॥ पुणरविय विद्वेत्ता गोवालग ! विद्वेह किं एयं । भणिता ते साधूणं बिंति य किं सवसिं तं अम्हे ? ॥८॥ देहिं तु जुब्बं अम्हं लविता साहूण दोण्णिवि समगं । आगच्छहत्ति सिग्घं तो ते आधाविता तुरितं ॥९॥ आधावेता य तत्तो घेतुं बाहासु दोवि साहूणं । तह विहुताऽणेण दुतं जह संधि विसंधिता सव्वे ॥६४०॥ उत्ताणए महीए पाडेतुं णिग्गतो तु सो तत्तो उज्जाणं गंतूणं झायति झाणं गुणसमग्गो ॥१॥ अह ते दट्ठुं णिहते संभंतो परिजणो कहे रत्तो । रायाविय संभंतो आगतुं णियच्छती ते तु ॥२॥ पुच्छे तेऽवीय जती बिंति य णेत्यऽम्ह पविसते कोई । णवरिक्को पाहुणओ आगतो ण य तं तु जाणामो ॥३॥ ताहे उज्जाणादिसु रण्णा गविसाविओ य दिट्ठो य । गंतूण सयं राया चलणेसु णिवडिओ जतिणो ॥४॥ बेई य जं इमेहिं अवरद्धं तं खमाहिसी भंते ! जंपति साधू जदि णिक्खमंति मोक्खामि तो णवरं ॥५॥ सण्णाओ अवरहेहिं एस कुमारस्स माउलो

सो उ । बहुसो निब्बंध कते पडिवण्णा जाहे ते दोवि ॥६॥ ताहे गंतूण तहिं दोण्णिवि घेत्तूण तेण बाहासु तह णं खलंखलीकीत जह संधी सिं पुणो लग्गा ॥७॥ णिक्खामेतुं दोण्णवि सूरिसगासं तु णीणिया तेणं । चिंतेइ रायतणओ साधु कतं मातुलेण ममं ॥८॥ मम हियमिच्छंतेणं (२६९) रूदमाणे पीहकोव्व बालस्स । तह मज्झे सेयन्ती अतियारविवज्जितो विहरे ॥९॥ इतरो जातिमदेणं अविणयमादीणि अविगडेत्ताणं । दुल्लभबोही बंधित्तु गतो तु दियलोयं ॥६५०॥ कोसंबीइ य इणमो सेट्ठी णामेण तावसो णामं । मरिऊण सूयरोरग जातो पुत्तस्स पुत्तो तु ॥१॥ जातो जाति सरंतो विचिंतती किण्णु सुण्ह अम्मत्ति । पुत्तोऽविय बप्पोत्ती भणामि मूयत्तण वरं मे ॥२॥ मरूदेवो तित्थकरं पुच्छति किह सुलभदुलभबोहिऽहं ? भणितो दुल्लभबोही तं सी गुरूपरिभवकएणं ॥३॥ कह बुज्जेज्जामित्ति य ? भणितो कोसंबिमूगमातूए । उववज्जिहिसी तहियं मूगा अब्भुत्थितो बोहो ॥४॥ ताहे आगंतूणं साहू समायत्ति (गामंति) भणति सो देवो । अहगं चइऊण इतो तुज्झं मातूए उदरम्मि ॥५॥ उववज्जीहं अइरा होहिति अंबेहिं डोहलोऽकाले । अविरिज्जंते तम्मि य किच्छप्पाणा य होहिति तु ॥६॥ अहगं गिरिणीतंबे सव्वोतुय अंबगं करेहामि । अंबालंभे वज्जसि दे अंबे देह यदि गब्भं ॥७॥ अब्भुवगते ससक्खे अंबे देज्जासि बालभावे य । साहूणं चलणेसुं पाडेज्जाही अणिच्छंपि ॥८॥ किं बहुणा ? तह कुज्जा जहऽहं साहुत्तणे दढो होमि । संबोहिकरओ खलु लभति अजत्तेण बोहिं तु ॥९॥ मूगेण अब्भुवगति देवो णमिऊण सालयं पत्तो । चइऊण य उववन्नो कुच्छीए मूगमाऊए ॥६६०॥ अंबगडोहल जाते अविणिज्जंतम्मि देहहाळीए । अहण्णपरिजणाणं मूगो लिहत्तऽक्खराणिणमो ॥१॥ यदि देह मेय गब्भं मज्झं तो अंभगाणि आपोमि । देमित्ति अब्भुवगेत ससक्खमाणेति अंबाइं ॥२॥ तो पुण्णडोहलाए जातो दिण्णो य ताहे से तस्स । उत्ताणसायगं तं जतिणो पादेसु पाडेति ॥३॥ अतिविस्सरं परोच्छी जाहेविय पाडिओ उ पादेसु । सुहचलणेसु जतीणं मूगेणुत्तो तु णेच्छीया ॥४॥ घेत्तुं गीवाएँ तओ मूगेणं पाडिओ रूवे बहुसो । परितंतु ततो मूओ निक्खंतो गतो य दियलोयं ॥५॥ ओहीए दड्डुणं सुविणादिसु बोहिओ जति ण बुज्जे । ताहे करेति रोगी देवोऽवि य वेज्जरूवेणं ॥६॥ यदि वहति सत्थकोसं भमति मए यावि यदि समं एसो । णो णीरोगु करेमी पडिवण्णा कतो य णीरोगो ॥७॥ घेत्तूणं तं पयाओ गुरूगं से सत्थकोसगं दावे । तं वज्जभारगुरूगं बेती ण तरामि वोढुं जे ॥८॥ दंसेति साधुरूवं बेति यदि णिक्खमाहि तो तेहिं । मुंचामि विमुंचेमि य रोगा पडिवण्ण तो मुक्को ॥९॥ णिक्खंतो तो तम्मी देवोवि ततो तु सालयं पत्तो । कालेणुप्पव्वइत्तुं सघरं संपट्टितो अह सो ॥६७०॥ देवेण पलायंतो दिट्ठो विगुरूव्विऊण तो अडविं । काउं मणुस्सरूवं अह अडविं पट्टितो तत्तो ॥१॥ लवति ततो दुब्बोही किं इच्छसि अप्पगं विणासेतु ? जंजासि अडविहुत्तो देवोवि ततो ण पच्चाह ॥२॥ तं पुण विजाणमाणो णरगादीदुक्खसंकिलेसं तु । किं णिगंतुं तत्तो पुणरवि दुक्खाडविमतीसि ? ॥३॥ अगणितो तं वयणं सघरं अह आगतो ततो सो तु । रोगाणं साहरणं भूओ विज्जागमो दिक्खा ॥४॥ कालेण केणइ पुणो लिंगं मोत्तूण पट्टितो सगिहं देवेण पुणो दिट्ठो गामपलित्तऽतरा कुणति ॥५॥ पुणरवि मणुस्सरूवी तणभारेणं तु विसति तं गामं । दड्डुं लवे पुराणो किं इच्छसि अप्पणो णासं ? ॥६॥ जं तणभारेण तुमं विससि पलित्तं ततो लवे देवो । एव तुमं जाणंतो जरमरणपलित्त संसारं ॥७॥ पविसंतिच्छसि णासं मुंचसि जं दुक्खलब्धियं दिक्खं । अगणितो वच्चति घरं गतस्स रोगं पुणो कुणति ॥८॥ पुणरवि तहेव दिक्खा उप्पव्वइए य सघणहुत्तम्मि । संपट्टिँ अडवीए तस्स पहे वंतरप्पडिमं ॥९॥ कातुं अच्चण देवो अच्चित्तमहितो तु पडति हेट्टमुहो । पुणरवि समुट्टवेतुं ण्हवियच्चिओ सो पुण पडितो ॥६८०॥ एवं पुणो पुणोवि य अच्चियमहितोवि बहुसो पडे जाहे । लवति ततो दुब्बोही किं वरठाणे ण ठाएसो ? ॥१॥ देवाह जहासि तुमं वरठाणेवि ठविओऽवि ण रमेसि । पव्वज्जं मोत्तु णरगादठाणं पुणवि अभिलससि ॥२॥ लवति पुराणो को तुम ? देवो दंसेति मूगरूवं से । देवत्तं पुव्वभवं संगारं चावि संभारे ॥३॥ तो संभरीतुं जातिं संवेगमुवागतो भणति देवं । इच्छामो अणुसट्ठिं जातो थिरो संजमे ताहे ॥४॥ रोगिणिय एस दिक्खा अणाढिया रामकण्हपुव्वभवो । उद्दायणसंबोही भगावती देवसण्णत्ती ॥५॥ वच्छऽणुबंधी मणको कण्णाए अजणिओ तु केणइवि । पुत्तो जायति जो तू सो होती अजणकण्णी उ ॥६॥ णिवतिसुतातिं दोन्निवि णिक्खंताइं तु भातुभंडाइं । अण्णद रायसुतो तू णिसाएँ लोयऽप्पणो कुणति ॥७॥ छड्ढेहामि पभाते चलणाहो काल पडियरं तीए । पोग्गल वेदगमणं अह णिवयति तेसु वालेसु ॥८॥ वीसरिया ते तस्स यसिरोरूहा तम्मि चेव ठाणम्मि । तत्थ य पवित्तिणी उ अहागता गाम गंतुमणा ॥९॥ अह तीएँ रायदुविहा तं वंदितु सा पदेसे अह तंसि

उवविट्ट णवरि तीए य मोउगं सहसमोगाढं ॥६९०॥ लज्जाए सह घेत्तुं तेसिं जे सुक्कपुग्गलाइण्णे । गुज्झम्मि सन्निवेशिय अह सुक्कं जोणिमोगाढं ॥१॥ तो गब्भो आहूतो अह पोट्टं वड्ढिउं पयत्तं च । मुणिया य सुविहियाहिं पुट्ठा बेती तु णवि जाणे ॥२॥ अतिसयणाणी थेरा य पुच्छिता तेहिं सिट्ठ जहवत्ते । होही जुगप्पहाणो रक्खह णं अप्पमादेणं ॥३॥ जम्मं सड्ढुकुलेसु स वड्ढितो गोण्णणाम कत केसी । एसा तु अजणकणी पव्वज्जा होति णायव्वा ॥४॥ बहुजणसंमुतियाए णिक्खमणं होति जंबणामस्स अक्खायाए जंबू धम्म अक्खादि पभवस्स ॥५॥ संगार मल्लिणाते सत्त णिवा कासि जह तु संगारं । वेयाकरणे सोमिल पुच्छा जह वाकरे भगवं ॥६॥ सयबुद्धा तित्थगरा सोलसहा एस होति पव्वज्जा । पुच्छापरिसुद्धम्मि तु अभुवगते होति पव्वज्जा ॥७॥ गोयरमचित्तभोयणसज्झायमणहणभूमिसिज्जाती । अब्भुवगयम्मि दिक्खा दव्वादीसुं पसत्थेसु ॥८॥ लगादीसु तूरंते अणुकूले दिज्जते अहाजातं । सयमेव तु थिरहत्थो गुरु जहण्णेण तिण्हड्ढा ॥९॥ अन्नो वा थिरहत्थो सामाइग तिगुण अट्टगहणं च । तिगुणं पादक्खिण्णं णित्थारग गुरुगुणे वुद्धी ॥७००॥ फासुय आहारो से अणहिंडंतं च गाहए सिक्खं । ताहे य उवट्टवणं छज्जीवणियं उ पत्तस्स ॥१॥ अप्पत्ते अकहेत्ता अणभिगयऽपरिच्छऽतिक्रमे पासे । एक्केक्के चउगुरूगा विसेसिया आदिमा चउरो ४२॥२॥ अप्पत्तं तु सुतेणं परियाग उवट्टवित्तु चउगुरूगा । आणादिणो य दोसा विराहणा छण्ह कायाणं ॥३॥ सुत्तत्थं अकहेत्ता जीवाजीवे य बंधमोक्खं च । उवठवणे चउगुरूगा विराहणा जा भणिय पुवं ॥४॥ अणहिगतपुण्णपावं उवट्टवित्तस्स चउगुरू होंति । आणादिणो य दोसा मालाए होति दिट्ठंतो ॥५॥ ससरक्खदगउल्लऽगणीपतिट्ठिते हरितबीजमादीसु । होति परिक्खा गोयर किं परिहरती ण वावित्ति ॥४३॥६॥ उच्चारदि अथंडिल वोसिर ठाणादि वावि पुढत्तीए वावि पुढवीए । णदिमाददगसमीवे खारादीदाह अगणिम्मि ॥७॥ विजणऽभिधारण वाते हरिए जह पुढविते तसेसुं च । एमानिद परिक्खित्ता वतदाणमिमेण विहिणा सो ॥८॥ दव्वादि पसत्थे वता एक्केक्कं तिगुण णोवरिं हट्ठा । दुविहा तिविहा य दिसा आयंबिल णिव्विगतिगो वा ॥९॥ पितपुत्ताणं जुयला दोण्णि तु णिक्खंत तत्थ एगस्स । पत्तो पिता ण पुत्तो एगस्स उ पुत्तो ण तु थेरो ॥७१०॥ ताहे तु पण्णविज्जति दंडियणायं तु कातु भण्णइ तु । मा गेण्ह असग्गाहं रातिणिओ होति एसवि ता ॥१॥ एवं सो पण्णवितो जदि इच्छे तो उवट्टवेती तु । णेच्छंतं पंचाहं ठंती दो तिण्णि वा पणगा ॥२॥ वत्थुसभावासज्ज व जाऽधीतं ताव तं पडिच्छंति । एवं रायअमच्चे संजतिमज्झे महादेवी ॥३॥ राया रायाणो वा दोण्णिवि सम पत्त दोसु पासेसु । ईसरसेट्ठिअमच्चे णियमघडाकुल दुवे खुड्ढे ॥४॥ समयं तु अणेगेसुं पत्तेसुं अणभिओगमावलिया । एगतो दुहतो ठविता समराइणिता जहाऽसण्णं ॥५॥ ईसिं अणोयइत्ता वामे पासम्मि होति आवलिया । अहिसरणम्मि य वड्ढी ओसरणे सो व अण्णो वा ॥६॥ उवठावियस्स एवं संभुंजणता तहेव संवासो । बितियपदं संबंधी ओमादिसु मा हु बहिभावं ॥७॥ भुंजीसु मए सड्ढिं इयाणि णेच्छंति मा तु बहिभावं । अहिखायंति व ओमे पच्छन्ने जेण भुंजति ॥८॥ एमादिणा तु भावं ताहे अप्पत्तं अहवऽपत्तं वा । उवठावेतुं भुंजति अपरिणते चित्तरक्खट्ठा ॥९॥ उवठाविय संभुत्ते संवासो एत्थ होति कायव्वो । बितियपए संवसेज्जा अणुवट्टवियंपिमेहिं तु ॥७२०॥ अण्णत्थ णत्थि ठाओ अहवा होज्जाहि सोऽवि एगागी । ण य कप्पति एगस्सा संवासो तेण संवासो ॥१॥ सच्चित्तदवियकप्पो एमेसो वन्निओ महत्थो तु । अच्चित्तदवियकप्पं एत्तो वोच्छं समासेणं ॥२॥ आहारे उवहिम्मि य उवस्सए तह य पस्सवणए य । सेज्ज णिसेज्जद्वारे दंडे चम्मे चिलिमिणीय (१०) ॥४४॥ल० २२॥३॥ अवलेहणिया दंतार घोवणे कण्हसोहणे चेव । पिप्पलग सूति णक्खाण छेदणे चेव सोलसमे ॥४५॥ल० २३॥४॥ आहारो खलु दुविहो लाइय लोउत्तरो य णायव्वो । तिविहो य लोइओ खलु तत्थ इमो होइ णायव्वो ॥५॥ भायणे भोयणे चेव, भुंजियव्वे तहेव य । भायणे तु इमं थेरा, गाहासुत्तमुदाहरे ॥६॥ सुवण्णरजते भोज्जं, मणिसेले विलेवणं । (अविदाही) घतमायास पयं तंबे, पाणसुहं च मिम्मते ॥७॥ सूवोदणं जवणं तिन्नि य मंसाणि गोरसो जूसो । भक्खा गुललावणिया मूल फलं हरियगं डागो ॥४६॥८॥ होइ रसालो य तहा पाणं पाणीय पाणगं चेव । सागं चऽद्वारसहा णिरूवहतो लोगपिंडो सो ॥४७॥९॥ सूवगहणेण गहिता वंजणभेदा उ जत्तिया लोए । ओदणगहणेणं पुण सत्तविहो ओदणो होति ॥७३०॥ जातु जवणं भण्णति तिन्नि तु मंसाणि जलयरादीणं । गोरसो खीरादी उ मुग्गपडोलादि जूसो तु ॥१॥ भक्खविहि उल्लसुक्खा गुलकत तह लावणी त बोद्धव्वा । मूलगअल्लगमादी मूलं अंबादिग फलं तु ॥२॥ हरितग मूलकुडेरग भूयणादी य होति णायव्वो । डागो

समणट्टा सिं कडा ण कप्पंति । अह दुछड संजयट्टा आयट्टोवक्खडा कप्पे ॥५॥ आयट्टाए दुछडा संजयअट्टाए तिछड ण कप्पे । जदिऽविय आयट्टाए आरंभो होति तेसिं तु ॥६॥ एमेव दाखसागाइयाइं जाइं अफासुदव्वाइं । अत्तट्टणित्ताइं कप्पे समणट्ट णवि कप्पे ॥७॥ गोरसहिंगूतेल्लादि दालिमे तित्तकडुयदव्वाइं । लंबणे गुलो य भण्णति संचियमेवादी संघट्टा ॥८॥ फासुगदव्वा जे तू अब्बोच्छिण्णम्मि भावे ण तु कप्पे । उवखडिया वत्तट्टा वोच्छिण्णे भावे कप्पंति ॥९॥ अगडं व खणेज्जाही आरामं वावि अहव रोवेज्जा । संजयणिमित्त कोई पाणफलाइं च दाहंति ॥ल० १७॥७८०॥ तत्थवि संजयजोग्गा संजयअट्टा कया ण कप्पंति । अत्तट्टाए कता पुण कप्पंती तंदुला जह तु ॥ल० १८॥१॥ पुत्तं जणेज्ज कोई आयरिओ मज्झ अपरिवारोत्ति तेसि सहातो होहिति पव्वावेतुं तु सो कप्पे ॥ल० १९॥२॥ भायणअट्टा तुंबिओ वावे फलही य वत्थमातट्टा । संजयटाए जा सुत्त अत्तट्टवियम्मि पुण कप्पे ॥ल० २०॥३॥ रूतो संजयठाते आतट्टा सुत्तमादिक ण कप्पे । जम्हा गहणअजोग्गो तु संजतट्टाए कारिततो ॥४॥ संजतअट्टा वियितो आतट्टोवट्टितो य कत्तो य । कप्पति जम्हा य कतो संजतजोग्गो तु आतट्टा ॥५॥ एवं गावीओवी कोई किणिज्जाहि संजयट्टाए । आतट्ट दूढ कप्पे समणट्टा दूढ णो कप्पे ॥६॥ एसो पुतिविसेसो भरितो पुव्वं तु पिंडजुत्तीए । एत्तो उवहीकप्पं वोच्छामि गुरूवएसेणं ॥७॥ दुविहो य होति उवही पत्ते वत्थे व ओहुवग्गहिए । जिणथेरऽज्जाण तथा वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥८॥ पाए उग्गमउप्पायणेसणा जोयणा पमाणे य । इंगाल धूम करण अट्टविहा पातणिज्जुत्ती ॥९॥ जहसंभव पेयव्वा पिंडगमेणं तु पातणिज्जुत्ती । सव्वं तु उग्गमादी जहा जहा जे तु जुज्जंति ॥७९०॥ पातपमाणं तु इमं पमाणदारम्मि होति वत्तव्वं । मज्झजहणुक्कोसं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१॥ तिण्णि विहत्थी चउरंगुलं च भाणस्स मज्झिम पमाणं । एत्तो हीण जहन्नं अतिरेगतं तु उक्कोसं ॥२॥ उक्कोसतिसामेसे दुगाउअब्बणामागतो साहू । भुंजति एगट्टाणे एयं किर मत्तगपमाणं ॥३॥ एयं चेव पमाणं अतिरेगतं अणुग्गह पवत्तं । कंतारे दुब्भिकखे रोहगमादीसु भइयव्वं ॥४॥ वट्टं समचउरंसं होति थिरं थावरं च वण्णं च । हुंडं वाताइच्चं भिण्णं च अधारणिज्जासं ॥५॥ संठियम्मि भवे लाभो, पतिट्टा सुपतिट्टिए । णिव्वणे कित्तमारोग्गं, सव्वणे वणमादिसे ॥६॥ वत्थे उग्गमउप्पायणेसणा जोयणा पमाणे य । इंगाल धूम कारण अट्टविहा वत्थुणिज्जुत्ती ॥७॥ एत्थविय जहासंभव घोसेयव्वाइं सव्वदाराइं । पडलादिपमाणाणी पमाणदारे समोतारो ॥८॥ गिम्हसिसिरवासासुं पडला उक्कोसमज्झिमजहन्ना । वण्णेऊणं कसमो पच्छादा पुरिसे वोच्छामि ॥९॥ एमेव य पच्छादा पुरिसं खेत्तं च कालमासज्ज । तिण्णादी जा सत्त तु परिजुण्णा पाउणेज्जाहि ॥८००॥ पुरिसा असहू कालो सिसिरो खेत्तं च उत्तरपहादी । गिम्हेऽवि पाउणेज्जा तारिसयं देसमासज्ज ॥१॥ एवं तु उग्गमादिसु सुब्बो सव्वोवि एस उवही उ । धारेयव्वो णियंतं अहाकडो चेव जहविहिणा ॥२॥ असतीते पुण जुत्तो जोगो ओहोवही उवग्गहितो । छेदणभेदणकरणे जा जहिं आरोवणा भणिता ॥३॥ तिविह असतित्ति जा सा दव्वे काले य होति पुरिसे य । दव्वम्मि णत्थि पातं ओमोदरिया य कालम्मि ॥४॥ पुरिसो य उग्गमंतो ण विज्जती एस पुरिसअसती तु । अहवा अणलं अथिरं अधुवं सन्तासती तिविहा ॥५॥ अहवा तिगत्ति असती अहाकडाणं तु अप्पपरिकम्मं । तस्सऽसति सपरिकम्मं तं तु विहीए इमाए तु ॥५४॥६॥ चत्तारि अहागडए दो मासा होंति अप्पपरिकम्मे । तेण पर विमग्गेज्जा दिवहुमासं सपरिकम्मं ॥७॥ पुणसद्धो तिक्खुत्तो विमग्गियव्वं तु होति एक्केक्कं । एवं तु जुत्तजोगी अलभंते गिण्हती ततियं ॥८॥ अहवा असिवोमेहिं रायद्वेव से गुरूणं वा । सेहे चरित्तसावयभए य तहियंपि गिणहेज्जा ॥५५॥९॥ असिवादी पुव्व भणिता गुरू व मग्गे रू भणिज्जाहि अच्छाहि ताव अज्जो ! तत्थ तु ते कारण विदंति ॥८१०॥ एतेहिं कारणेहिं अहगडवज्जेण दोण्ह गहिताणं । छेदणमादी कुव्वं जयणाए ताहे सुब्बा तु ॥१॥ णिक्कारणगहणे पुण विराहणा होति संजमायाए । छेदणमादीएसुं जा जहिं आरोवणा भणिता ॥२॥ तं पुण सपरीकम्मं जयणाए होति लिंपियव्वं तु । एतेण तु लेसेणं लेवग्गहणं तु वण्णेऽहं ॥३॥ हरिते बीजे चले जुत्ते, वच्छे साणे जलट्टिते । पुढवी संपाइमा सामा, महवाए महिया इमे ॥४॥ एवं लेवग्गहणं जहक्कमं वण्णितं समासेणं ओहोवहुवग्गहितं उल्लिंगेऽहं समासेणं ॥५॥ जिणकप्पथेरकप्पअज्जाणं चेव ओहुवग्गहितं । वोच्छामि समासेणं जहण्ण मुज्झिमुक्कोसं ॥६॥ पत्तं पत्ताबंधो पायट्टवरं च पायकेसरिया पडलाइं रंयत्ताणं च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥७॥ तिण्णेव

य पच्छागा रयरहणं चैव होइ मुहपोती । एसो दुवालसविहो उवही जिणकप्पियाणं तु ॥८॥ उक्कोसिओ उ चउहा मज्झिमग जहण्णगोऽवि चउहाउ । पच्छादतिगं उग्गहो जिणाण अह होति उक्कोसो ॥९॥ पडलाणि रयत्ताणं रयहरणं पत्तबंधं मज्झिमगो । गोच्छग पत्तद्ववणं मुहणंतग केसरि जहण्णो ॥८२०॥ जिणकप्पियाण एसो सेसाण विणिग्गयाण एसेव । थेराणं अतिरेगो मत्तो तह चोलपट्टो य ॥१॥ उक्कोस जहन्ने तू जोच्चिय जिणकप्पियाण सो चैव । मज्झिमए अतिरेगं मत्तो तह चोलपट्टो य ॥२॥ एसेव चोदसविहो चोलट्टाणम्मि णवरि कमढं तु । अज्जार इमो अण्णो आहोवहि होति णायव्वो ॥३॥ उग्गहऽणंतग पट्टो अब्धोरूग जलणिया य बोद्धव्वा । अब्भितर बाहिणियंसणी य तह कंचुच चैव ॥४॥ उक्कच्छिं वेकच्छिय संघाडी चैव खंधकरणी य । ओहोवहिम्मि एत्तो अज्जारं पण्णविसं तु ॥५॥ उक्कोसो अट्टविहो मज्झिमतो होति तेरसविहो तु । चउह जहण्णशे सोच्चिय जो जिणकप्पे समक्खाओ ॥६॥ पच्छदतियं उग्गहो णियंसणऽब्भंतरी य बाहिरिया । संघाडि खंधकरणी य अट्टहा होति उक्कोसो ॥७॥ पत्ताबंधो पडला रयहरणं पादपुंछणं चैव । मत्ते य कमढ उग्गह णंते तह पट्टए चैव ॥८॥ अब्धोरूए चलणिया कंचुग उवकच्छि तह विकच्छी य । एसो तु तेरसविहो मज्झिम उवही तु अज्जाणं ॥९॥ एसो तु ओहिओवहि एत्तो सेसो तु होतुवग्गहिओ । संथारपट्टमादी तु णेगहा होति णायव्वो ॥८३०॥ दुविहोवहीवि एसो जहक्कमं वण्णिती समासेणं । एत्तो उ उवेसणयं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥१॥ भिसिगादि उवेसणयं वासारत्ते उ पाणदयहेतुं । वेहासट्टा धिप्पइ तं चिय सावेगपस्सवणं ॥२॥ विस्समणट्टा थेराण घेप्पती एत्तो वोच्छ सेज्जं तु । सेज्जा संथारो या एगट्ट होति णायव्वं ॥३॥ सव्वंगिया व सिज्जा होती असव्वंगितो तु संथारे । एगंगि अणेगंगी परिसाडी अपरिसाडी य ॥ल० २१॥४॥ एतेसिं सव्वेसिं अट्टहिं दारेहिं मग्गणा होति । पिंडणिजुत्तिमेणं णेयं जहसंभवं सव्वं ॥५॥ णिसियणहेतु णिसेज्जा रयहरणपमाणओ गहेयव्वा । किं पुण धिप्पइ सा तू भण्णाति सुण कारणमिमेहिं ॥६॥ पुरिसे पुढवि सरक्खे पच्छाकमे तहेव अचियत्ते । बाउसपरिहरणाए संथारणिसेज्जऽणुण्णता ॥५६॥७॥ राजादी पव्वइओ भूमीएँ अणंतंरं णिवेसंतो । विप्परिणमेज्ज तेणं संथारणिसेज्ज पण्णत्ता ॥८॥ मीससचित्तधराए अब्धाणादीसु मा विराहणता । उम्हाए पुढवीए तेण णिसेज्जा य संथारो ॥९॥ एमेव य ससरक्खे सच्चित्ते संतरं भवे जयणा । सागारियंच इहरा धूलीउग्गुंडियसरीरो ॥८४०॥ कज्जेण गिहिणिसेज्जागतस्स वत्थम्मि मइलिए गिहिणो । उप्फुसणधोवणादी कारेज्जा पच्छक्कम्मं तु ॥१॥ अचिततं वा सि भवे धलिउग्गंडी पुते(र) णिविट्टम्मि । अहवा बाउसदोसा पप्फोडिते धुवंते वा ॥२॥ ठारं तिविहं भणितं उह्व णिसीयण तुयट्टाणं च । उह्वं काउस्सग्गो णिसीयण णिवेट्टाणं च ॥३॥ होति तुयट्ट णिवण्णं पडिलेहपमज्जियाण कायव्वं । सेज्जणिसेज्जाणं वा ठाणं अहवावि ठाणं तु ॥४॥ लट्ठी आतपमाणा विलट्टि चउरंगुलेण परिहीणा । दंडतो बाहुपमाणो विदंडओ कच्छगपमाणो ॥५॥ दुट्टपसुसाणसावदविज्जलविसमेसु उदयमग्गेषु । लट्ठी सरीरक्खातवसंजमसाहिगा भणिता ॥६॥ चम्ममे पण्हियखल्लगवद्धादी होज्ज चम्मगहणं तु । अत्थुरणपादरक्खा फुडिए तह संधणट्टादी ॥७॥ अरिसभगंदलकच्छू छप्पति गिल्लाति अत्थुरणं तु । दुब्बलपाए चक्खू अब्धाणादीसू तलिया तु ॥८॥ फुडियविविच्चणहुंगलिरक्खट्टा खल्लकोसगा होंति । वज्झा ऊ संघयट्टा अब्धाणादीसु छिण्णा य ॥९॥ २७०॥ रज्जुमयी पोत्तमयी कंबलमयि तह य दंडकडगमयी । पंचविह चिलिमिणीओ वण्णिता एस पुव्वं तु ॥८५०॥ उडुबद्धे रयहरणं वासावासासु पादलेहणिया । वड उंवरे पिलिंखू तम्स अलंभम्मि चिंचिणिया ॥१॥ उभओ णहसंतरा सच्चित्ताच्चित्तकारणा मसिणा । सच्चित्तेगेण फुसे पासेणेगेण अच्चित्तं ॥२॥ कण्णाण सोहणं पुण कण्णाण मलेण संचिएणं तु । दुक्खेज्ज जस्स कण्णाण सुणेज्ज व सो तु गिण्हेज्जा ॥३॥ पविरलदंतो थेरो सित्थादीणं तु दंतलग्गाणं । लेवाडअरतिसारियरक्खट्टा गिण्ह सोहणयं ॥४॥ अब्धाणोमादीसुं पिप्पलतो विकरणट्ट कंदाणं । माणाहिगवत्थादी पगासमुह भाण करणट्टा ॥५॥ जुण्णाण संधणट्टा सूई णक्खव्वणं तु कंटा (ठा) णं । उद्धरणट्ट णहार य छेदणहेतुं गहेयव्वं ॥६॥ उच्चारमत्तगादी अण्णाविय बहुविहप्पगारो तु । ओवग्गहिओ भणिओ उवग्गहट्टा महाणस्स ॥७॥ सव्वोवि एस उवघायदोसपरिवज्जिओ धरेयव्वो । वीसतिधा उवघातो तस्स इमो होति णायव्वो ॥ल० २४॥८॥ उग्गम उप्पायण एसणा य परिकम्मणा य परिहरणा । अचियत्त (विइन्न) वतीयारे तहेव

परियट्टणा विदिया ॥५७॥ल० २५॥९॥ उग्गमम्मि य मण्णाति, पामिच्चे य पवाहणे । तेरिच्छयाहए चेव, तहा तेणाहडेति य ॥५८॥ल० २६॥८६०॥ अण्णाणोवहडे चेव, मालोहड अरक्खिए । कते य कारिते चेव, बंदणे य विराहणे ॥५९॥ल० २७॥१॥ विवन्नकरणे चेव, एमेता पडिवत्तिओ । एते पत्तेय उवघातो, उवहिस्स तु वीसती ॥६०॥ल० २८॥२॥ उग्गमेणं तु अस्सुद्धं, तहा उप्पायणेसणा । उवहिं उवहतं जाणे, वोच्छामि परिकम्मणे ॥६१॥ल० २९॥३॥ परिकम्मणे चउभंगो कारणे विहि बितिओ काररे अविहि । णिक्कारणम्मि य विही चउत्थ निक्कारणे अविही ॥ल० ३०॥४॥ गग्गरदंडीवेलतिगखीलगमादी यहोति अविही उ । णिक्कारणम्मि तीय तु परिकमेयम्मि उवघातो ॥५॥ भाणस्स विपरिकम्मं णिम्मोयणलेवसिब्बणादी य । णिक्कारणमविहीए कुणमाणे होति उवघातो ॥ल० ३१॥६॥ अब्भितरं तु बाहिं बाहिं अब्भितरं करेमाणो । परिभोगविवज्जासे उवघातो होति णायव्वो ॥ल० ३२॥७॥ णियगोवहिपरिभोगं समणुण्णाणं देति कज्जम्मि । जो भंडमच्छरीयत्तणेण उवहिस्स उवघातो ॥ल० ३३॥८॥ वतियारे पहिरिय वत्थं पादं च जे गहेरुणं । पुण्णेवि तम्मि काले अणपुच्छ धरंत उवघातो ॥ल० ३४॥९॥ लोइय लोउत्तरियं परियट्टिय जो तु गिण्हति उवही । उग्गमदोसअसुद्धं च उवहतं तं तु णायव्वं ॥ल० ३५॥८७०॥ अण्णगणमागतस्स तु जस्स उ उवहिस्स उग्गमो ण णज्जे । सोरुणं परिभुंजति उप्पायंते व णायम्मि ॥ल० ३६॥१॥ पामिच्चं उज्जुयगं उच्छिण्णं चेव होति णायव्वं । लोइय लोउत्तरियं तु उवहतं त वियाणाहि ॥ल० ३७॥२॥ अण्ण वहंते असंते दिण्णे साहुस्स अण्ण जदि वाहे । तं तु पवाहणादेसा उवही तू उवहतं जाणे ॥ल० ३८॥३॥ सुणएण वाणरेण व जह रूवगमादि हरितुमाणितं । णरतेणारीतं (दिज्जंतमदिज्जं) वा गेण्हंतं उवहयं जाणे ॥ल० ३९॥४॥ अण्णाणोवहतो खलु वत्थादि अक्कप्पिएण जो गहिओ । मालोहडो तु उवही आलोइओ जो तु वेहासे ॥ल० ४०॥५॥ अणरक्खिओत्ति सुण्णं उवही मोत्तूणं जो उ गच्छेज्जा । भिक्खादीणऽट्टाए सोऽवि य उवहिस्स उवघातो ॥ल० ४१॥६॥ सयमेव करे उवही णिसेज्जादी सोऽवि उवहतो होति । कारेइ व अण्णेणं उवघतो सोऽवि बोद्धव्वो ॥ल० ४२॥७॥ बंधति भिण्णं अविही भिण्णं व धरेति सोऽवि उवघातो । सुव्वण्णं च दुवण्णं करेज्ज मा तं तु हीरेज्ज ॥ल० ४३॥८॥ दुव्वण्णं व सुव्वण्णं बिभूसहेतुं तुं जो करेज्जाहि । उवहिउवघात एते अहवा अण्णेऽविमे होंति ॥ल० ४४॥९॥ पंचऽट्टु य पण्णरसा सोलस दस चेव होंति ठाणाणि । चत्तारि एक्कगातिं बारस वीसं च ठाणाइं । ६२॥ल० ४५॥८८०॥ दव्वे खेत्ते काले भावे पुरिसे य होंति पंचेव । एतेसिं । एतेसिं पंचणहवि परूवणा होति कायव्वा ॥ल० ४६॥१॥ दव्वे अणलं अथिरं अधुवं च तहा अधारणिज्जं च । एतेसु चउसुंपी गेण्हंते भंग सोलस तु ॥ल० ४७॥२॥ अहवा महद्धणाइं खित्ते काले य अच्चितं जं तु । भावे जहा गिलाणो भुंजे अगिलाणो तह चेव ॥ल० ४८॥३॥ पुरिसे असहू तु जहा सहूवि परिभुंजते तहा उवहीं । रायादी पव्वइओ अहवा पुरिसो हवेज्जाही ॥ल० ४९॥४॥ अहवा गारवमुच्छा अविइत्तऽतिरित्त बाउसत्तं च । पंचेते उवहिम्मी समणाणसया ण कायव्वा ॥ल० ५०॥५॥ जोगमकातुमहागडे जो गेण्हति अप्प सपरिकम्मं वा । अहवा अमग्गिरुणं अप्पं गिण्हे सपरिकम्मं ॥ल० ५१॥६॥ अप्पडिलेहिय गारव मुच्छ विभासा य होति सत्तमए । अचियत्ते तू मा से कोई छिवतुत्ती (होति) अट्टमए ॥ल० ५२॥७॥ पण्णरसुग्गमदोसा अज्झोयरमीसजायमेगं तु । उप्पायणसोलसगं एसणदोसा य दसगं तु ॥ल० ५३॥८॥ संजोयणश पमाणे इंगाले चेव होति धूमे य । चत्तारि एक्कगा खलु एते ते होंति णायव्वा ॥ल० ५४॥९॥ बारस ठाण इमे खलु वेदणमादी तु हुंति छट्टाणा । आयंकादी छच्चिय अधरण धरणा य उवघातो ॥ल० ५५॥८९०॥ वेंयण वेंयावच्चे इरियट्टाए य संजमट्टाए । तह पाणवत्तियाए छट्टं पुण धम्म (१०००) चिंताए ॥१॥ आयंके उवसग्गे तितिक्रवता बंधचेरगुत्तीसु । पाणिदया तवहेतुं सरीरवोच्छेयणट्टाए ॥२॥ वीसं पुण पुव्वुत्ता ते चेव य उग्गमादिणो होंति । एते सव्वे मिलिया णउतिं खलु होंति उवघाता ॥ल० ५६॥३॥ आसीतं ठाणसतं जस्स विसोहीए होति उवलद्धं । सो जाणती विसोहिं उवघातं वावि उवहिस्स ॥ल० ५९॥४॥ णउतिं उवघाता खलु तत्तियमेत्तावि अरुवघातावि । एए दोण्णिवि मितिता आसीतं होति ठाणसतं ॥ल० ५७॥५॥ एयं चिय आसीयं सयं तु जिणथेरअज्जउवहींहिं । गुणिते होइम संखा जहक्कमेणं तु ठाणाणं ॥ल० ५८॥६॥ दो चेव सहस्साइं सट्टसयं चेव जस्स उवलद्धं । सो जाणती विसोहिं उवघातं वावि जिणकप्पे ॥७॥ दो

ठाणसहस्साइं पंचेव सयाइं होंति वीसाइं । सो जाणती विसोहिं उवघातं वावि थेराण ॥८॥ चत्तारि सहस्साइं पंचेव सयाइं होंति पण्णाइं । सो जाणती विसोहिं उवघातं चेव अज्जाणं ॥९॥ एसो उ सोलसविहो अजीवकप्पो समासतो भणितो । एत्तो य मीसकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥९००॥ एत्तो छहिं सोलसहिं य दोहिवि निप्फज्जती तु जो कप्पो । दुगसंजोगादीओ सव्वो सो मीसओ कप्पो ॥१॥ पव्वावण मुंडावण सिक्खोवट्ठे य भुंज संवासे । एते छण्णायव्वा आहारुवहादि सोलसयं ॥२॥ दुगसंजोगादीया सच्चित्तअचित्तमीसकप्पाणं । पत्तेय मीसगाविय णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥३॥ पव्वावे मुंडावे पव्वावे चेव तहय सिक्खावे । पव्वावे उवठावे चेव संभुंजे ॥४॥ पव्वावे संवासे एवं मुंडावणा दुचरिमेहिं । णेया दुगसंजोगा एवं सेसावि संजोगा ॥५॥ तिचउपणछक्कजोगा एते सच्चित्तदवियकप्पम्मि । पत्तेयं संजोगा एत्तो अच्चित्त वोच्छामि ॥६॥ आहारे उवहिम्मि य आहारे तह उवस्सए चेव । एवं जा णक्खछेदण ता आहारेण चारेज्जा ॥७॥ एवं अवसेसासुवि उवधादीएसु उवरि उवरिं तु । णेया दुगसंजोगा जा पच्छिमो सूणियहछेदो ॥८॥ एमेव सेसगावी तियगाई यावि सव्वंसंजोगा । णेया जा सोलसगो एते पत्तेय अच्चित्ते ॥९॥ चित्तेतराण दोणहवि एत्तो संजोगता मुणेयव्वा । मीसगकप्पे णेया दुगमादी सव्वसंजोगा ॥९१०॥ पव्वावे आहारंपी देइ पव्वाविएसुवि उवहिं च । पव्वावे उवस्समणं एवं णक्खेयणं जाव ॥१॥ एतेण कमेणेवं दुगतिगमादी तु सव्वसंजोगा । णेयव्वा जा पच्छिमो बावीसमो होइ संजोगो ॥२॥ एतेसिं सव्वेसिं संखाणयणम्मि आणणोवाओ । पत्तेयमीसगाण य इमो तु कमसो मुणेयव्वो ॥३॥ एगादेगत्तरिया पदंसंखपमाणओ ठवेयव्वा । गुणगारभागहारा तेसिं हेट्ठा उ विवरीया ॥४॥ पढमं रूवं गुणए भागं च हरे हवेज्ज जं लब्धं । तम्मि वि पडिरासितगुणितभाइए जं भवे लब्धं ॥५॥ एवं ठाणं ठाणं पडिरासियगुणितभजियलब्धाइं । एगादीसंजोगाण होंति संखप्पमाणाइं ॥६॥ एक्कादीसंजोगाण होति एवं तु लक्खणं दिट्ठं । एते सव्वे मिलिता तेसट्ठिं होंति संजोगा ॥७॥ एक्कगसंजोगादिसु उप्पज्जंते उ जत्तिया भंगा । तेसिं संखाणयणे करणं तु इमं मुणेयव्वं ॥८॥ एक्कगसंजोगादिसु जत्तियमित्ता हवंति ठाणा उ । तत्तियमेत्ता दुयगा ठवेयव्वा कमेणं तु ॥९॥ पडिरासिय पडिरासिय अण्णोण्णेणऽब्भसाहि ते दुयगा । जावं तिल्लं ठाणं गुणि एवं जा भवे संखा ॥९२०॥ एक्कगसंजोगादिसु एक्केक्के भंगसंख तावतिया । सच्चिय एक्कादीहिं पुणरवि संजोगसंगुणिता ॥१॥ पत्तेयं पत्तेयं एक्कगमादीण सव्वजोगाणं । सा होति भंगसंखा जहक्कमेणं मुणेयव्वा ॥२॥ कह भंग भवंतेत्थं ? भण्णति दिक्खेक्क अहव बहुया उ । मुंडावणादि एवं दुत्तिचउभंगादिचारणिया ॥३॥ पच्चयहेतुं तहियं पत्थारो होति पत्थरेयव्वो । इमिणा उ लक्खणेणं तमहं वोच्छं समासेणं ॥४॥ भंगपमाणायामो गुरुओ लहुआ य अक्खणिक्खेवो । मत्ता दुगुणा दुगुणो पत्थारे होति णिक्खेवो ॥५॥ एवं तू पत्थरिए पिच्छसु एक्कादिए उ संजोगे । जे जत्थ उ णिवडंति पच्चक्खं ते तहिं सव्वे ॥६॥ छक्कगसोलसगाणं जीवमजीवाण दोणह कप्पाणं । एक्कगसंजोगादीण संखपमाणं इमं होति ॥७॥ छ च्चेवय पण्णरसा वीसा पण्णरस छक्क एक्को य । एक्कगसंजोगादी छव्विहसच्चित्तकप्पम्मि ॥८॥ सोलस वीसं च सयं पंचेव सयाइं होंति सट्ठाइं । अट्ठारस वीसाइं तेयालं अट्ठसट्ठाइं ॥९॥ अट्ठेव सहस्साइं अट्ठहियाइं अजीवछट्ठम्मि । एक्कारस य सहस्सा चत्तारि सया तहा चत्ता ॥९३०॥ बारस चेव सहस्सा अट्ठेव सया उ सत्तरा होंति । अट्ठमसंजोगम्मि वि उक्कमतो एव जावेक्को ॥१॥ सच्चित्तदवियकप्पो तेवट्ठी होंति सव्वंसंजोगा । पंच सता पण्णतीसा पण्णट्ठि सहस्स अच्चित्ते ॥२॥ सच्चित्तअचित्ताणं एते भणिया तु सव्वसंजोगा । पत्तेयं पत्तेयं एत्तो मीसाण वोच्छामि ॥३॥ अच्चित्तदव्वकप्पे संजोग पिहप्पिहे ठवेतूणं । जितकप्पेक्कगंसंजोग गुणित तेसिं फलमिणं तु ॥४॥ छण्णउतिं संजोगा दुगसंजोगम्मि मीसए कप्पे । सत्त सता वीसहिगा तियसंजोगाण बोद्धव्वा ॥५॥ तित्तीसं चेव सता सट्ठहिगा तू चउक्कसंजोगे । दस चेव सहस्साइं णव वीसहिया य पंचमए ॥६॥ छत्ती (व्वी) स सहस्साइं दो चेव सताइं अट्ठअहिगाइं । अडयालं च सहस्सा अडताला होंति सत्तमए ॥७॥ अट्ठट्ठिसहस्साइं छच्चेव सताइं होंति चत्तारि । सत्तत्तरिं सहस्सा दो चेव सया भवे वीसा ॥८॥ एमेव उक्कमेणवि णवमाउ परेण होंति बोद्धव्वा । छण्णंती जा सोले छच्चेव पदा मुणेयव्वा ॥९॥ एवं पण्णरस य वीस य वीसएण पण्णरस छक्क एक्केण । पत्तेयं पत्तेयं गुणिएणं रासिणो मुणसु ॥९४०॥ दोण्णि सता चत्ताला अट्ठार सया य होंति णायव्वा । अट्ठ सहस्सा चउसय ततिए मीसम्मि संजोगा ॥१॥ सत्तावीस

सहस्सा तिणि सता चेव होंति णायव्वा । पण्णद्विसहस्साइं पंच सया वीस अहिया य ॥२॥ एक्कं च सयसहस्सं वीस सहस्सा सयं च वीसहियं । एक्कतरिं सहस्सा लक्खेक्को छस्सता चेव ॥३॥ एक्कं च सतसहस्सं तेणउइ सहस्स तह य पण्णासा । उक्कमतो सत्तेव य ठाणाइं ततो य पण्णरस ॥४॥ तिणी सता तु वीसा दोणि सहस्साइं चउसयजुयाइं । एक्कारस य सहस्सा दोणि सता चेव णायव्वा ॥५॥ छत्तीसं सहस्साइं चउरो य सता हवंति णायव्वा । सत्तासीति सहस्सा तिणि सता चेव सट्टहिता ॥६॥ एक्कं च सतसहस्सं सट्टि सहस्सा सयं च सट्टी य । दो लक्खा अडवीसा सहस्स अट्टेव य सयाइं ॥७॥ दो चेव सयसहस्सा सत्तावण्णं भवे सहस्साइं । चउरो सय अट्टमए ठाणा सत्तंतिमे वीसा ॥८॥ जह पढमे तह पंचमे जह बीए तह चउत्थए रासी । एक्कगुणकारे पुण सोलसमादी तु जावेक्को ॥९॥ अच्चित्तदवियकप्पे संजोगा सव्वपिंडिता कातुं । जितकप्पेक्कादीहिं गुणिते फलरासिणो मुणसु ॥९५०॥ तिण्णेव सतसहस्सा ठाणसहस्सा हवंति तेणउती । दो य सया य दसहिता एक्कगसंजोगसंगुणिता ॥१॥ णव चेव सयसहस्सा तेसीति संस्स तह य पणुवीसा । बियसंजोगचउक्केऽवि एत्तिया चेव णायव्वा ॥२॥ सत्त सय दससहस्सा तेरस लक्खा य तियगसंजोगे । पंच य पढमसरिच्छा अच्चित्तपिंडो उ अंतिमए ॥३॥ जियपिंडेणं पिंडो अजीवकप्पस्स संगुणा नियमा । सो होति दव्वपिंडो तस्स उ संखा इमा होति ॥४॥ ईयाल सतसहस्सा अंडावीसं भवे सहस्साइं । सत्त सता पंचहिया ठाणारं मीसकप्पम्मि ॥५॥ जियअजियमीसगाणं कप्पाणऽणऽवि भंगसंजोगा । पत्तेय मीसगाविय णषयव्वा आणुपुवीए ॥६॥ पव्वावेक्को एक्कं एक्को अणेगा अणेग एक्कं च । णेगाणेगे य तहा चउभंगो एव एक्केक्के ॥७॥ एवं एक्कं एक्कसि एक्कमणेगेवि एत्थऽवि तहेव । चउभंगो णेयव्वो एक्केक्के छण्ह तु पदाणं ॥८॥ एक्केक्कसि पव्वावे मुंडावेक्कं तु एक्कसिं चेव । एत्थ तु दुगसंजोगो चउभंगो होति णायव्वो ॥९॥ एवं दुततियपचतुपंचछक्कजोएहिं जत्तिया जे तु । संजोगा भगा य तु ते सव्वे होंति णायव्वा ॥९६०॥ पव्वावे मुंडेगं पव्वावेगं च मुंड णेगे य । णेगो एक्कं च तहा णेगाऽणेगे य एमेव ॥१॥ एमेव सेसगावी दुगतिगचउपंचछक्कसंजोगा । बुद्धीयऽणुगंतव्वा सव्वेवि जहक्कमेणं तु ॥२॥ अच्चित्तेऽविय एवं एक्को एक्कस्स देति आहारं । एवं उवहीमादीसु सव्वेसुवि होंति चउभंगा ॥३॥ दुगमादी संजोगा एत्थंपि तहेव हुंति विण्णेया एमेवेक्को एक्कसिं आहारादीणि देज्जाहिं ॥४॥ एवं दुगमादीया णेया एत्थंपि सव्वसंजोगा । एवं ता अच्चित्ते मीसेऽवियं बुद्धिए जोए ॥५॥ एक्को पव्वावेक्कं आहारादी य देति एत्थऽवि तहेव । संजोगा णेयव्वा जावतिया संभवे तत्थ ॥६॥ एसो तु दवियकप्पो तिविहोऽवि समासतो समक्खातो । एत्तो समासतोऽहं वोच्छामि उ खेत्तकप्पं तु ॥७॥ जं देवलोगसरिसं खित्तं णिप्पचवातियं जं च । एसो तु खेत्तकप्पो देसा खलु अब्बछव्वीसं ॥ल० ६०॥८॥ रायगिह मगह चंपा अंगा तह तामलित्ति वंगा य । कंचणपुरं कलिंगा वाराणसि चेव कासी य ॥९॥ साएय कोसला गतपुरं च कुरू सोरियं कुसट्टा य । कंपिल्लं पंचाला अहिच्छता जंगला चेव १०॥९७०॥ बारवती य सुरट्टा मिहिल विदेहा य वच्छे कोसंबी । णंदिपुरं संदिब्भा भद्विलपुरमेव वलया य ॥१॥ वयराड वच्छ वरणा अच्छा तह मत्तियावति दसण्णा । सोत्तियमती य चेती वीतिभयं सिंधुसोवारी २०॥२॥ महुरा य सूरसेणा पावा भंगी य मास पुरिवट्टा । सावत्थी य कुणाला कोडीवरिसुं च लाढा य ॥३॥ सयवियाऽविय णगरी केततिअब्बं च आरियं भणितं । जत्थुप्पत्ति जिणाणं चक्कीणं रामकिण्हाणं ॥४॥ एतेसु विहरियव्वं खेत्तेसुं साहुभाविएसुं तु । जत्थ य गुणा इमे तू खेमाईया मुणेयव्वा ॥५॥ खेमो सियो सुभिकखो अप्पप्पाणो उवस्सयमणुणो । एसो तु खेतकप्पो (पांखंडखेदमुक्को) गामरगरपट्टणाइण्णे ॥६३॥ल० ॥६॥ खेमो डमरविरहितो रोगासिवविरहितो सियो होति । पउरण्णपाणदेसो होइ सुभिकखो मुणेयव्वो ॥ल० ६२॥७॥ जलुगासंखणगमुंइंगपिसुगमसगादिविरहितो जो तु । सो होति अप्पपाणो अप्प अभावम्मि थेवे य ॥ल० ६३॥८॥ समभूमिरेणुवज्जियरितुक्खमोवस्सया मणुण्णा उ । गामा णगरावि य बहु पाउग्गा मासकप्पस्स ॥ल० ६४॥९॥ सज्ज (व्व) णजणो य भद्दो जहियं च मणुण्णसाहुजोणीओ । तारिसए खेत्तम्मी समणुण्णाओ विहारो तू ॥ल० ६५॥९८०॥ खेमो य सियो य तहा खेमो सुभिकखो य एव संजोगा । णेयव्व छसु पदेसु सत्तसु वा आणुपुवीए ॥१॥ अहवोदयग्गिसावदत्तक्करवालभयवज्जिओ रम्मो । णिरवेक्खोऽविय जहियं समणगुणविदू य जत्थ जणो ॥ल० ६६॥२॥ एताणि चेव खेमाइयाणि आरीयखेत्तसहियाणि ।

पुव्वभणियाणि जाणि तु ताइं खलु सत्त उ हवंति ॥३॥ णाणस्स दंसणस्स य चरणस्स य जत्थ णत्थि उवघातो । एसो तु खेत्तकप्पो जहियं च अणायणा णत्थि ॥ल० ६७॥४॥ उदगभयवुज्झणादी जह कोंकणसिंधुतामलित्तादी । णत्थि जहिं अग्गिभयं निरग्गिसाहम्मियगिहा वा ॥५॥ जहियं च सावयभयं सीहादीणं ण विज्जए देसे । जहियं च णत्थि चोरा देहुवहीपंधामेसादी ॥६॥ वाला उ सप्पगोणसमादी बोहिगभयं च णत्थि जहिं । मणसो समाहिकारो सो रम्मो होति णायव्वो ॥७॥ सूरुओ अणणगम्मो जत्थ णरिंदो तहिं सुहविहारं । साहुगुणे य वियाणति कुणति य साहूण जो रक्खं ॥८॥ अहिरणसुवण्णते छज्जीवणिकायसंजमे णिरता । जाणति जणशे य एवं जत्थ तु साहूण गुणणिहसं ॥ल० ६८॥९॥ सज्झाओ जहिं सुज्झति कुदिट्ठगिण्णो ण यावि जो होति । एसण इत्थी सोही य जत्थ तहियं णिवासे तु ॥९१०॥ जहितं च अणायतणा ण संति के पुण अणातणा भणिता ? । साहम्मि भिण्णचिवा मूलत्तरदोसपडिसेवी ॥१॥ एतेहिं जो देसो आइत्तो तह य अन्नतित्थीहिं । मच्छंधवाहगाम पुलिंददेसा अणायतणा ॥२॥ एतारिसम्मि खेत्ते अप्पडिबद्धेण विहरियव्वं तु । आलंबणाइं केइ तू इमाणि काउं ण विहरंति ॥३॥ वसही संथारो भत्त पाण वत्थे पडिग्गहे सेहा । सट्ठा य पुव्वसंधुय असद्वहंते य पडिबंधो ॥६४॥४॥ फासुया एसणिज्जा य, णिवाया य रितुक्खमा । एरिसा साहुपाउग्गा, वसही दुल्लभऽण्णहिं ॥५॥ एमेव य संथारा कंबलदब्भादिवत्थुनिप्फन्ना । सयणासणा य जहियं सुलभा जोग्गा य साहूणं ॥६॥ भत्तं सुलभ मणुण्णं च एरिसं णत्थि अण्णहिं तत्थ । जंगियभंगियमादी नहु सुलभा अन्नयि वत्था ॥७॥ पडिगहगाऽविय सुलभा सेहा यऽन्नत्था नत्थि खेत्तम्मि । अण्णत्थ दुल्लभा तू तेण तु एत्थं बहुगुणं तु ॥८॥ सट्ठा आहारादी दिंति य जोग्गाणि संथुता चेव । पुरपच्छ दिट्ठभट्ठा य अण्णहिं णत्थि एरिसगा ॥९॥ उडुबद्धमासकप्पेण विहारो तं ण सद्वहइमेहिं । संजमआतविराहण वच्चंते गामअणुगामं ॥१०००॥ णाणादीण य हाणी जोग्गं खेत्तं तु मग्गमाणाणं । खेत्ताओऽविय खेत्तं संकमणे धुवमसज्झाओ ॥१॥ जे णीयत्ते दोसा मासंतो परिवसेण ते चेव । एवं मासविहारे मणंतो बहुविहे दोसे ॥२॥ णो सद्वहति विहारं तेण तु ण विहरेति तस्स आणादी । मासोवरिं च लहुओ णीयावासे य जे दोसा ॥३॥ ते सो पावति सव्वे एतेहालंबणेहिं अच्छंतो । किं एगंतेणेवं ? ण विसेसो भण्णती सुणसु ॥४॥ णिक्कारणम्मि एवं पडिबंधो कारणम्मि णिद्वोसो । ते चेव अज्जयणाए पुणोऽवि सो पावती दोसे ॥५॥ काणि पुण कारणाइं जेहिं चिट्ठेज्ज एगठाणम्मि ? । भण्णति पुव्वुद्धिद्धा जे खेमसिवादिया दारा ॥६॥ तेसिं चिय पडिवक्खा अक्खमे असिव तह य दुब्भिकखे । बहुपाणुवस्सओ वा अमणुण्णो दुददयमारी ॥७॥ एतेहिं कारणेहिं एगट्ठाणम्मि अच्छमाणा उ । जदि जयण ण कुचंती ते च्विय णीयदिया दोसा ॥८॥ का पुण जयणा तहियं ? भण्णति तिहि कारणेहिं उ ठितस्स । अण्णउवस्सयभिकखादिया तु जयणा मुणेयव्वा ॥९॥ अक्खेममादिएसुवि अक्खेत्तेसुं तु कारणवसेणं । चिट्ठंताणं तहियं समा तु जयणा मुणेयव्वा ॥१०१०॥ अक्खेमेवि सति पुरं संवट्ठं वावि आसयंती उ । अक्खेमं चऽण्णत्था तहिं खेमं तो ण णिग्गच्छे ॥१॥ जदि असिवं तु बहिद्धा तइया अच्छंति ते तहिं चेव । दुब्भिकखेऽवि ण णिंति य अहवा सव्वत्थ दुब्भिकखं ॥२॥ दुब्भिकखे जयण तहियं अच्छंते वावि जयण तह चेव । बहुपाणे आउत्ता चंकंमंते तु जयणाए ॥३॥ उवस्सएँ आउत्ता कुडमुहभूतीत वावि लक्खंता । अण्णाए वसहीए ठंति पमज्जंति य अभिकखं ॥४॥ जा जत्थ जयण जुज्जति अमणुण्णे उवस्सयम्मि तं कुज्जा कयवरसोहणमादी दुग्गंधे गंध पकिरंती ॥५॥ उदगभए थलगामे थले च वसही तहिं तु गिण्हंति । अग्गिभएँ मालबद्धे हम्मिततलगम्मि व वसंति ॥६॥ रोगबहुले अपुच्छा णिवेज्जए चोरकिण्णी ण तु विहरे । सत्थेण वावि गच्छे ठायंति व जत्थ णिरवायं ॥७॥ जहियं सावयदोसा (च्चा) तहियं एगाणितो ण गच्छेज्जा । गेणह वसहिं च गुत्तं गामस्स तु मज्झयारम्मि ॥८॥ विज्जामंतादीहिं वाले णीणेंति रातो णवि गच्छे । रायं च पण्णविंती साहुगुणमजाणमाणं तु ॥९॥ जत्थ जणो णवि जाणति साहुगुणे तहिं कहंति साहुगुणे । परिभोग अकालम्मी रत्तिं कुव्वंति सज्झायं ॥१०२०॥ दूरेण कुत्तित्थीए वज्जंती एसणं च पण्णवए । कुल (लगु) डाइत्थीचरियाइया य वज्जंति चरणट्ठा ॥१॥ वज्जेज्ज अणायतणा णाणादीणं च जत्थ उवघातो । एवं जहसंभवं तं करेज्ज जयणं णिवसमाणे ॥२॥ एसो तु खेत्तकप्पो उस्सग्गववायसंजुतो भणितो । एत्तो उ कालकप्पं वोच्छामि जहक्कमेणं तु ॥३॥ मासं पज्जोसवणा वुद्धावास परियायकप्पो य । उस्सग्ग पडिक्कमणे कितिकम्मे चेव

पडिलेहा ॥६५॥४॥ सज्झायझाणभिकखे भत्तवियारे तहेव सज्झाए । णिक्खमणे य पवेसे एसा खलु कालकप्पही ॥६५॥५॥ पुव्वं तु मासकप्पो परूवितो सो णिसीहणामम्मि । तु इहारूवणा वण्णिज्जति मासे अतिरेगे ॥६॥ मासातीतं वसतो वसहीए तीएँ चेव मासलहुं । तह भिक्खायरियाए वीयारे तह बियारे य ॥७॥ परिसाडी संधारे सव्वेसेतेसु होति मासलहुं । चत्तारि य उवघाता संधारे अपरिसाडिम्मि ॥८॥ पंचेते मासिया खलु चाउम्मासं च मिलिय सव्वेते । णव मास मासऽतीए उडुबद्धे संवसंतस्स ॥९॥ लहुगा तु वासऽतीते वसहीते सेस होंति ते चेव । भिक्खायरियादीसुं जे भणिता मासऽतीतम्मि ॥१०३०॥ आरोवणा उ एसा कालदुवे वण्णिता अणित्ताणं । एत्तो पज्जोसवणासामायारिं पवक्खामि ॥१॥ पजहेत्तु वासजोग्गं बहिया अच्चंति वासुदिकखंता । जे अंतरा तु गिण्हे तं सव्वं तेसि खेत्तीण ॥२॥ अह पुण वच्चंताणं वासाजोग्गं तु अंतरा वासं । आरद्ध इहरगामे ण पहुच्छति एगवसही य ॥३॥ अण्णोणसुट्ठिताणं बहवो सागारिया ण तीरंति । परिहरितु ताहे वज्जे गुरूसागरियं णवरि एक्कं ॥४॥ अवसेस समायारी पज्जोसवणाए वण्णिय णिसीहे । सच्चेव णिरवसेसा इम्मि दारम्मि णायव्वा ॥५॥ वुड्ढस्स तु जो वासो वड्ढी व गतो तु कारणेणं तु । एसो तु वुड्ढवासो तस्स तु कालो इमो होति ॥६॥ अंतोमुहुत्त कालं जहण्णमुक्कोस पुव्वकोडी तु । मोत्तुं गिहिपरियागं जं जस्स व आउगं तित्थे ॥७॥ मरणे अंतमुहुत्तो देसूणा पुव्वकोडि कह होज्जा ? । जो तरूणो च्चिय समणो असमत्थो विहरितं जातो ॥८॥ कदा-विज्जा चरियं लाघवोए तवस्सी, तत्तो तवो देसितो सिद्धिमग्गो । अहाविहं संजम पालइत्ता, दीहाउणो वुड्ढवासस्स कालो ॥६७॥९॥ विज्जा तु बारसंगं करणं तस्स गहणं मुणेयव्वं । सुत्तं बार समाओ तत्तियमेत्ता य अत्थेवि ॥१०४०॥ धित्तुं सुत्तत्थाइं समा देसदंसणं च कतं । चरियं भंतेगट्ठं लाघविणं तु तिविहेणं ॥१॥ उवकरणसरीरिंदिय एवं तिविहं तु लाघवं होति । उवकरणऽरत्तदुट्ठो धरेति ण य गिण्हे अहियं ॥ल० ६९॥२॥ संघयणधित्तीजुत्तो अकिसो ण तु थूरदेहसारीरो । वस्सिंदिओ तवस्सी चउत्थमादी तवो चित्तो (त्तो) ॥ल० ७०॥३॥ कुव्वंतेणं अछित्तिं णाणादी देसिओ तु मोक्खपहो । सुत्तत्थुवदेसेणं संजमियं संजमेणं च ॥४॥ काऊण अवो (तऽवो) च्छित्तिं बारस वासाइं णिच्चमुज्जुत्तो । दीहाउतो तु सुरी पडिवज्जेऽब्भुज्जयविहारं ॥५॥ अब्भुज्जयमचयंतो अगीयमीसो व गच्छपडिबद्धो । अच्छति जुणमहल्लो कारणतो वावि अत्तोवि ॥६॥ जंघाबले व खीणे गेलण्णे सहायतो व दोबल्ले । अहवावि उत्तमट्ठे णिप्फती चेव तरुणाणं ॥७॥ खेत्ताणं व अलंभे कयसंलेहे व तरुणपरिकम्मे । एतेहिं कारणेहिं वुड्ढावासं वियाणाहि ॥८॥ केवतियं तु वयंतो खेत्तं कालेण विहरितुं अरिहो । केवतियं च अणरिहो बलहीणो वुड्ढवासी तु ? ॥९॥ दुत्तिवि दाऊण दुवे सुत्तं दातूण सुत्तवज्जं च । एवं दिवड्ढमेगं अणुकंपादीसुवी जतणा ॥६८॥१०५०॥ दोण्णिवि सुत्तत्थाइं दुवेत्ति जो जाति गाउए दोण्णि । जाव तु भिक्खावेला एस तु सपरक्कमो थेरो ॥१॥ एमेव अदाऊणं अत्थं अहवा दोण्णिवि तु । दो गाउयाइं दोण्णी पुण्णाए भिक्खवेलाए ॥२॥ एवं दिवड्ढमेगं च गाउयं तिन्नि होंति एक्केक्के । गमया तु मुणेयव्वा विहरणअरिहो स थेरो तु ॥३॥ एस सपरक्कमो तू जो पुण दाऊण उभय सुत्तं वा । गच्छेज्ज अब्धगाउय सपरक्कमो होति एसोवि ॥४॥ सव्वेते विहरंती एतेसु दुगाउयं दिवड्ढं वा । जे जंति गाउयं चिय तिण्हंतेसि वुड्ढाणं ॥५॥ जेऽवि य गाउयमद्धं उभयं सुत्तं च दातु गच्छंति । तेसणुकंपा तु इमो कायव्वा होति तिविहा उ ॥६॥ विस्सामण उवकरणे भत्ते पाणे अ लंबणे चेव । तं च विजाणति कालं गंतुं वाएति जो जत्थ ॥७॥ जयणा सुद्धालंभे पणगादी सा तु होति णायव्वा । अपरक्कमं तु थेरं एत्तो वोच्छं समासेणं ॥८॥ खेत्तं तु अब्धगाउय कालेणं जाव होति दिवसो उ । खेत्तेण य कालेण य जाणसु अपरक्कमं थेरं ॥९॥ अण्णो जस्स ण जायति दोसा; देहस्स जाव मज्झणहो । सो विहरति सेसो पुण अच्छति मा दोण्हवि किलेसों ॥१०६०॥ भमो वा पित्तमुच्छा वा, उद्धसासो व खुब्भति । गतिविरिए वऽसंतम्मि, एवमादी ण रीयति ॥१॥ गच्छपरिमाणतो तू सहायगा तस्स होंति कायव्वा । सत्तेव जहण्णेणं तेण परं होन्ति णेगावि ॥२॥ चउभागतिभागऽद्धे सव्वेसिं गच्छतो परीमाणं । संतासंतअसंती वुड्ढावासं वियाणाहि ॥३॥ अट्ठावीसं जहण्णेणं, उक्कोसेणं सतग्गसो । गच्छं गच्छं समासज्ज, चतुभागी विभायए ॥४॥ जदि होंति अट्ठावीसं चतुहा गच्छो तु तो विभज्जति तु । सत्त उ चउभागेणं ते दिज्जंती सहाया तु ॥५॥ पुण्णम्मि मासे ते णिंति, सत्त अण्णे उवेत्ति तु । एवं अतिंति णिंति य, मास मासंमि सत्त तु ॥६॥ एवं दोसा ण होंती तु, उवट्ठणादि जे भवे । तेणं तु अठावीसाए, चउभागा विव(भ)ज्जिता ॥७॥ अट्ठावीसं ऊणा दुहासतीए उ ते हवेज्जहि । संताअसति अगीया

बाला वुद्धा अजोग्गा वा ॥८॥ संतासतीए पुज्जंति तत्तिया तेण तिण्णि दुण्णिक्को । भागा उ विभइयव्वा इगवीसाचोदसत्तण्हं ॥९॥ दो संघाड अडंती भिक्खं एक्को य गेण्हए उवहिं । थेर दुवे णीणे सत्तसु जयणेसा लित्त(भिक्ख)मादीसु ॥१०७०॥ वुद्धावासे जयणा खेत्ते काले वसहीय संथारे । खित्तम्मि णवगमादी हाणी जावेक्कभागो तु ॥१॥ धीरा कालच्छेदं करंति अपरक्कमा तहिं थेरा । कालं च अविवरीयं करंति तिविहा तहिं जयणा ॥२॥ कालच्छेदो मासं अण्णा वसही तु भिक्खमादीणि । अट्टसु उडुबद्धेसुं चउमासे सेक्कवासासुं ॥३॥ कालं अव्विवरीयं उडुबद्धे वासवासियं णं करे । वासावासे य तहा उडुबद्धं वावि ण करंति ॥४॥ तिविह जयणेति इणमो तिविहऽणुकपा तु होति वुद्धस्स । जह कायव्वा इणमो तमहं वोच्छं समासेणं ॥५॥ आहारे जयणा वुत्ता, तस्स जोगे य पाणए । णियया मउया चेव, छऽवेताऽणेसणादिसु ॥६॥ काणिट्ट पक्क आमे पिंडघरे चेव तह य दारुघरे । कडगे कडगतरघरे वोच्चत्थे होंति चउगुरुगा ॥७॥ कोट्टिमघरे वसंतो आलित्तंमि ण डज्जते तेणं । काणिट्टगादिगहणं रक्खइ य णिवातवसही तु ॥८॥ वसहि णिवेसण साही दूराणयणम्मि जो उ पाउग्गो । असतीय पाडिहारिं मंगलकरणम्मि णीणंति ॥९॥ वसही य अहासंधड चंपगपट्टो व चम्मरुक्खो वा । थिरमउओ संथारो असतीय णिवेसणाठाणे ॥१०८०॥ असतीइ साहिबाडग(गड) सग्गामे चेव तह य परगामे । कोसद्धजोयणादी बत्तीसं जोयणा जाव ॥१॥ थिरमउओ अपडिहारी घेत्तव्वो तस्स असति पडिहारी । पित्तिपज्जयादिफलं मंगलबुद्धी धरे जं तु ॥२॥ केइ गिहत्था तं उस्सवादि अच्चंति ण परिभुंजंति । तं पणइया तु गिहिणो विंति य एअम्ह मंगल्लं ॥३॥ देज्जह नवर छणम्मि अच्चियमहितं पुणोवि णेज्जाह । तं घेत्तूणं फलं उस्सवदिवसम्मि पेसंति ॥४॥ पुण्णम्मि अप्पिणंती अण्णस्स व वुद्धवासिणो देंति । मोत्तूण वुद्धवासं आवज्जति चतुलहू सेसे ॥५॥ पडियरति गिलाणं वा सयं गिलाणोवि तत्थवि तहेव । भावियकुलेसु अच्छति असहाए रीयओ दोसा ॥६॥ ओमादी तवसा वा अचएंतो दुब्बलोवि एमेव । पडिवन्न उत्तिमट्टे पडियरगा वावि तण्णिस्सा ॥७॥ तरुणाणं णिप्फती आततरे चेव होति णायव्वा । कालियसुय दिट्ठिवाए तेसिं कालोऽयमुक्कोसो ॥८॥ संवच्छरं व झरते बारस वासाइं कालियसुतस्स । सोलस य दिट्ठिवाते एसो उक्कोसतो कालो ॥९॥ बारस वासे गहियं तु कालियं झरति वरिसमेगं तु । सोलस भूतावाते गहणं झरणं दस दुवे य ॥१०९०॥ गहणझरण कालियसुतं पुव्वगते य जदि एत्तिओ कालो । आयारकप्पणामे कालच्छेदो तु कतरेसिं ॥१॥ आयारकप्पणामंति णिसीहं तत्थ मासमुडुबद्धे । वासासु चउम्मासं एसो कालो तु कतरेसिं ? ॥२॥ भणिओ य थेरेण समाणेणं कारणजातेण एत्तिओ कालो । अज्जाणं पणं पुण णवगग्गहणं तु सेसाणं ॥३॥ णिम्मवणट्टा एतेसिं चेव एयं तु कारणजायं । जेहिं उ गुणेहिं जुत्ता दिज्जंते ते इमे होंति ॥४॥ जे गिण्हिउं धारयिउं च जोग्गा, थेराण ते दिंति बिइज्जए तु । गिण्हति ते ठाणठिता सुहेणं, किंचं थेरस्स करंति सव्वं ॥५॥ आसज्ज खेत्तकालं बहु पाउग्गा ण संति खित्ता उ । णिच्चं च विभत्ताणं सच्छंदादी बहू दोसा ॥६॥ जह चेव उत्तिमट्टे कतसंलेहस्स ठाति एमेव । तरुणपडिक्कम्मं पुण रोगविमुक्के बलविवट्ठी ॥७॥ वुद्धावासातीए कालादी तेण उग्गहो तिविहो । आलंबणे विसुद्धे उग्गहो तक्कज्जि वोच्छेओ ॥८॥ जंकारण वुद्धीगतो वासो तहिं कारणे अतीयम्मि । मति पडिभग्गा जे उ आयरिए उग्गहो णत्थि ॥९॥ दुविहेवि कालतीते मासे चउमास उग्गहे छिण्णे । सच्चित्तादी छिण्णो आलंबणे तम्मि छिण्णम्मि ॥११००॥ कारणसमत्ति पुरओ जो अच्छति उग्गहे तहिं होति । सच्चित्तादी तिविहे ण तस्स तहियं इमं णातं ॥१॥ आगासकुच्छिपूरो उग्गहपडिसेहियम्मि जो कालो । ण हु होति उग्गहो सो कालदुगे वा अणुण्णाओ ॥२॥ जह णाम कोति पुरिसो छाओ आकासकुच्छिपूरिच्छे । ण हु होति सोवि तित्तोऽमुत्तत्ता उवणओ एवं ॥३॥ कालदुवेत्ति अणुण्णा गिम्हाए जत्थ चरममास कतो । अण्णक्खेत्तऽसतीए तत्थ ठियाणोग्गहो होति ॥४॥ एमे वासतीते दस राया तिण्णि जाव उक्कोसो । वासणिमित्ठिताणं उग्गहो छम्मास उक्कोसो ॥५॥ तक्कज्जसमत्तीएएवि रायदुट्टपरचक्कअसिवादी । एतेहिं कारणेहि तु उग्गहो होतऽतीतेऽवि ॥६॥ एतेसु उग्गहेसुं आभव्वऽणभव्वित्त भणिएसा । अयमण्णो तु पगारो आभव्वमणाभवन्ते य ॥७॥ सुहसीलऽणुकंपातट्टिए य संबंधि खवग गेलण्णे । सच्चित्ते ससिहाए पइट्टिए धारण दिसासु ॥६९॥८॥ तणुयंपि णेच्छए दुक्खं, सुहं चाकंखती सदा । सुहसीलो एस अक्खाओ, सातागारवणिस्सितो ॥९॥ सुहसीलयाए सेहं कोई पेसेज्ज अण्णसाहूणं । पलिमंथं मण्णंतो

दुखं खू सारवेउं जे ॥१११०॥ असहायस्स व देज्जा कोई अणुकंपयाएँ सेहं तु । आयट्टीण व कोई पेसिज्जा धम्मसद्धाए ॥१॥ दिज्जा सिणेहओ वासबंधी अस्स कोति सच्चित्तं । खमगो सयं व होज्जा खमगस्स व पेसवेज्जाहि ॥२॥ देइ व गिलाळगस्सा वेयावच्चट्टताए असहाए । अहवा सयं गिलाणो अचएंतो सारवेउं जे ॥३॥ पेसिंतस्स उ ससिहो असिहो पुण जस्स पेसिओ तस्स । एवं असंथरेणवि पेसियओ जह गिलाणेणं ॥४॥ कह दातु पुणो मग्गति जम्हा सो अप्पभू तु दाणस्स । तम्हा तस्सायरिओ मग्गति सज्झंतियादी वा ॥५॥ अहवा जाहें सयं चिय सो सेहो जा होति गीयत्थो । तो जाणति आभवो अहयं पुव्विल्लयाणं तु ॥६॥ उडुवासवुडुवासे एसो भणितो तु कालकप्पविही । परियायकालकप्पं एत्तो वोच्छं समासेणं ॥७॥ को रातिणितो होती ? को वावी होति ओमराइणिओ ? । भण्णति सुणसु विसेसं रातिणियओमरातीणं ॥८॥ संजमसेढी अतो जो उ ठितो सोभवे हु रायणिओ । जो बाहिं सो ओमो एयं अतिसेसितो जाणे ॥ ल० ७१॥९॥ तम्हा छउमत्थाणं जो पुव्वं ठावितो वएसुं तु । सो होती राइणिओ जो पच्छा सो भवे ओमो ॥ल० ७२॥११२०॥ सामइयसंजयाणवि सामइयं जस्स पुव्वमुच्चरितं । सो होती रातिणितो इतरो ओमो मुणेयव्वो ॥ल० ७३॥१॥ अट्टुस्सास जहन्नो काउस्सग्गो उ होति बोद्धव्वो । अट्टुसहस्सुक्कोसो अहवा संवच्छरं वावि ॥२॥ पडिकमणं देसिराइय पक्खिय चउमासि तह्य वरिसे य - । एतेसिं वक्खाणं पुव्वं आवस्सए भणितं ॥३॥ कितिकम्मं कायव्वं काहे कति वाऽवि होंतऽहोरत्ते ? । एतेसिं णाणत्तं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥४॥ पडिकमणे सज्झाए काउस्सग्गावराह पाहुणए । आलोयण संवरणे उत्तिमट्टे य वंदणयं ॥५॥ चत्तारि पडिक्कमणे किइक्कमा तिणि होंति सज्झाए । पुव्वणहे अवरणहे किइक्कमो चोदस हवंति ॥६॥ सूरुग्गते जिणाणं पडिलेहणियाए आढवणकालो । थेराणऽणुग्गयम्मी उवहिणा सो तुलेयव्वो ॥ल० ७४॥७॥ पढमचरिमासु णियमा सज्झओ पोरुस दियराओ । झाणं तु अत्थ(ह्)पोरिसि बितियाए तं तु दिवसस्स ॥ ल० ७५॥८॥ ततियाए पोरुसीए भिक्खग्गहणं तु होति कायव्वं । सेसं च पमाणादी होति इमं तू समासे(णा)णं ॥ ल० ७६॥९॥ पमाण काले आवस्सए य उवगरणे । मत्तग काउस्सग्गे जस्स य जोगो सपडिवक्खो ॥११३०॥ भत्तट्टीणंपि ओहे जह भणित तहेव होंति एत्थंपि । एक्कं वेलं भत्तं रत्ति च ण कप्पए भोत्तुं ॥१॥ कालस्स पडिक्कमितुं मज्झणहे ताहे होति गंतव्वं । वीयारं भोत्तूण वसेस अकालो उ वीयारे ॥ल० ७७॥२॥ चउसंझासु ण कप्पति सज्झाओ तासिमं तु कायव्वं : पुव्वावरासु दोसुवि काउस्सग्गट्टिता इत्ति ॥ल० ७८॥३॥ दिणिमज्झाए भिक्खं झाति अभत्तट्टितो तु जो साहू । राओ मज्झिल्लाओ णिद्दामोक्खं करिंती उ ॥ ल० ७९॥४॥ णिक्खमणं खलु सरए पाउसकाले पवेस पुव्वत्तो । एसो तु कालकप्पो भावे कप्पं अतो वोच्छं ॥५॥ दयसणणाणचरित्ते तवसंजमसमिइपंच(गुत्ति)हिं गुत्तो । हतरागदोस निम्ममखमदमणियमट्टिओ णिच्चं ॥७०॥६॥ अणिगूहियबलविरितो परक्कमति जो जहुत्तमाउत्तो । अत्तट्टकरणजुत्तो गुणभावणभावणिकंपो ॥७१॥७॥ रिद्धिहिं कुलिंगीणं ण य देवातीहिं जस्स तू भावो । दंसणविगलो जायति दंसणमाराहियं तेणं ॥८॥ णाणं दुवालसंगं ते चेव य पवयणं तु संघो वा । गहणम्मी उज्जुत्तो परतो तह वच्छलो वि ॥९॥ चरणे णिच्चुज्जुत्तो मूलगुणेसुं सउत्तरगुणेसु । ण य अतियारं कुणती पच्छित्तेणं व सोहिकत्तं ॥११४०॥ तवबारसंगजुत्तो समितीसहितो तिगुतिगुत्तो य । रागद्वोसणिहंता णिम्ममो णियते सरिरेऽवि ॥१॥ कोहं जिणति खमाए मद्दवमादीहिं सेसकलुसेऽवि । दमणियमा दोऽवेक्कं इंदियणोइंदिया होंति ॥२॥ णाणादिएहिं अणिगूहितो तु कम्मस्स णिज्जरट्टाए । उज्जमति परक्कमती घडइत्तिय होंति एगट्टा ॥३॥ जह सुत्ते णिद्धिट्ठो तह कुव्वति जो तु अप्पमाएंतो । सो हु जहुत्तो साहू नूणं मतिमं वियाणिज्जा ॥४॥ अत्तट्टा मोक्खट्टा ण तु इहलोगादिहेतुगं कुणति । करणं जोगतिएणं जयणाजुत्तोत्ति अववादे ॥५॥ मूलगुण उत्तरे या भावण पणवीस अणिच्चयादीया । मेत्तीपमोयकारुणमज्झत्थादीहिं णिक्कंपो ॥ल० ८०॥६॥ एसो अ भावकप्पो अहवा णाणादिओ पुणो तिविहो । दंसण पढमं भण्णति णाणचरित्ता तदायत्ता ॥ल० ८१॥७॥ तो दंसणस्स चेव तु जेहिं पदेहिं तु होति उवघातो । ताइं इमाइं वोच्छं णिक्खमणादीणि तु कमेण ॥८॥ णिक्खमण गमण भुंजण सद्वियवयणे य एक्कवायणिए । दंसणणाणाभिगमे रायकुमारं गणहरे य ॥७२॥९॥ णिक्खमणे बिंतऽम्हं अं(अ)धो व(वा)हाएत्तुणाततो भगवं । एरिसएवि ण दिक्खे णिक्खंते जेण साहूणं ॥११५०॥ पूजासक्काररुयी तेण पवत्तति कीस वावि जाणंतो । तारिसए

णिक्रवंते जेणुदितो होति सक्कारो ॥१॥ ण हु एवं वत्तवं सो च्चिय भगवच्चु जाणए एवं । ण हु भाणुपभा तीरइ खज्जोयपभाहिं अतिसतितुं ॥२॥ गमणे तुरितं साहू गच्छंति अहो सुदिट्ठ भिच्छूणं । सणियं वयंति णेवं वत्तवेवं तु भाविज्जा ॥३॥ ते लोगरंजणट्ठा सणियं गच्छे ण धम्मसद्धाए । ण य जुगपेहाए खलु विवरीयं साहुणो भावे ॥४॥ जंपि कहिंचि सतुरितं तंपिय गेलण्णमादिकज्जेसु । गच्छंती तु सुविहिता बहुतरमायं मुणेऊणं ॥ ल० ८२॥५॥ भुंजेति चित्तकम्मट्ठिता व सक्कादि बोडियादी य । ण तहा साहू एवं भासंते दंसणविरोही ॥६॥ कुक्कुडताए मोणं करंति जणरंजणट्ठाए उ । भावेयवं एवं साधू पुण णिज्जरट्ठाए ॥७॥ जंपिय भासंति जती तंपिय कज्जम्मि थोव जयणाए । इम मुंच चिट्ठऊ वा गुरुमादीणं च पाउग्गं ॥८॥ सक्कयपाढो गुरुगो दियाण एसा तु देविका भासा । समणाण पागयं तू थीभासाए उवणिबद्धं ॥ ल० ८३॥९॥ तत्थवि सद्धियवयणं सद्धिया चेव णवरि जाणंति । सव्वेसुऽणुग्गहट्ठा इतरं थीबालवुट्ठादी ॥११६०॥ दिट्ठंतो सिणपल्लीणिवाणकरणेण होति कायव्वो । एक्केण कतो अगडो वावि ससोवाण बितिणं ॥ल० ८४॥१॥ ततिण तलागं तू तत्थऽगडे केयघडियमादीहिं । तीरति उवभोत्तुं जे बितियं दुपदाण अभिगम्मं ॥ल० ८५॥२॥ दुपदचउप्पदमादी सव्वेसि तलाग होति अभिगम्मं । इय सव्वऽणुग्गहत्थं सुत्तं गहितं गणहरेहिं ॥ल० ८६॥३॥ सव्वत्थ वेदसत्थं चरणे करणे य पढम (एग)वादणियं । विवरीयं समणाणं भाविंतो दंसणविराही ॥४॥ तत्थवि भावेयवं सो च्चिय अत्थो तु होति सव्वा(व्वे)सिं । सामुद्धिसिंधवादी जह लवणसहाव सव्वेवि ॥५॥ दंसणपभावगाइं अहवा णाणे अहिज्जमाणं तु । अत्तट्ठ परट्ठ वा जहलंभं गेण्ह पणहाणी ॥६॥ भिक्खुत्ति जं पदम्मी भणितं जं वावि तंणिमित्तेणं । गच्छंतो किं सेवे ? असद्धंतो अणाराही ॥७॥ पव्वज्ज अप्पपंचम रायसुतस्स तु दाइगभएणं । राजा उ समणुजाणति अंते पडिणीतों सो तेण ॥८॥ तत्थविय फासुभोती सुत्तथाइं करंत अच्छंति । जणइत्तु सुतेक्केके अमूढलक्खासु इत्थीसु ॥९॥ ते रज्जेसुं ठाविय पुणरवि गच्छंति गुरुसमीवं तु । आलोइय णिस्सल्ला कयपच्छित्ताण तो तेसिं ॥११७०॥ संकप्पियाणि पुव्विं आयरियादी पदाणि गुरुणा तु । पच्छागताण ताण य तद्धिवसं चेव दिण्णाइं ॥१॥ परियायम्मि णिरुद्धे जं दिण्ण तगं तगं तु जो न सदहति । सुहसमुदितस्स जं वा कीरति तू रायपुत्तस्स ॥२॥ तत्थवि भावेज्जेवं पत्तिकडाइं तु तेहिं थेराणं । रायसुतदिक्खितेण य उब्भावण पवयणे होति ॥३॥ असद्धस्स जं च कीरति अज्जसमुद्धस्स चेव गुरुणो तु । एयं सदहंते विराहणा दंसणे होति ॥४॥ तत्थवि भावेयवं जेणायत्तं कुलं तं रक्खे । अन्नस्सवि कायवं गिलाणगस्सेस उवदेसो ॥५॥ इति एस समासेणं दंसणकप्पो तु आहितो एवं । एत्तो तु णाणकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥६॥ सुत्तुद्देसे वायण पडिच्छ पुच्च परियट्ठ अणुपेहा । आयरियउवज्झाया अह होति तु सुत्तकप्पविही ॥७३॥७॥ आयारमादि कातुं सुयं तु जा होति दिट्ठिवादो तु । अंगाणंगपविट्ठं कालियमुक्कालियं चेव ॥८॥ तं पुण सव्वंपि भवे संवादसमुट्ठियं व णिज्जूढं । पत्तेयबुद्धभासित अहव समत्तीय होज्जाहि ॥९॥ ससमयवादं संवादमाह जह केसिगोयमिज्जाती । पणवणादसकालियजीवाभिगमादि णिज्जूढं ॥११८०॥ पत्तेयबुद्धभासियइसिभासियमादिगं मुणेयवं । केवलणाणसमत्तीय भासिता चोद्धस उ पुव्वा ॥१॥ एतं सुतं तु जं जत्थ सिक्खितं जेण जह तु जोगेणं । तं तह चिय दायवं एसो खलु अज्झयणकप्पो ॥२॥ एयं पुण सुतणाणं वायणजोग्गं तु जारिसं होति । तं वोच्छामी अहुणा सुत्तस्स य लक्खणं जं तु ॥३॥ जित परिजितं अमिलितं अब्बिच्चामेलियं अवाविद्धं । घोस णिकाइय ईहिय सुविमग्गिय हेतुसब्भावं ॥७४॥४॥ फुडविसदसुद्धवंजणपदमक्खरसंधिकारणमणूणं । पादप्पयाणुलोमं णिउत्तसुत्तेत्ति सुयकप्पो ॥७५॥५॥ णिपुणं विपुलं सुद्धं णिकाइयं अत्थतो सुपरिसुद्धं । हितणिस्सेसकरं बुद्धिवट्ठणं फलमुदारजुतं ॥७६॥६॥सगणामं व जितं खलु परिजिय हेट्ठवरि उवरितो हेट्ठा । मिलिते उ धण्णणातं विच्चमेलो उ अण्णोण्णं ॥७॥ अज्झयणुद्देसाणं सुत्ते मीसेति कोलिपयसं वा । तं चेव य हेट्ठवरिं वाविद्धे आवलीणातं ॥८॥ घोस उदत्तादीया णिकाइयऽक्खेवसिद्धि(ट्ठ)परिसुद्धं । ईहित सयं मतीए विचारितं एव णेवती ? ॥९॥ साहम्मियवेहम्मियहेऊहिं मग्गिओ उ सब्भावो । जस्स तु सुत्तस्स भवे तं होति सुदिट्ठसब्भावं ॥११९०॥ णिस्संदिद्ध फुडं खलु संजुत्तं वावि पुव्वमवरे(चरमे)णं । विसदं अणिगूढत्थं वंचणसुद्धं सउवयारं ॥१॥ अत्थुवलद्धी जत्थ तु तं होति पदं तु अक्खरा वन्ना । संधी संबंधो खलु सुत्ता सुत्तस्स जो

कोति ॥२॥ एतेहिं णूणमहितं पादा तु सिलोगमादिणं होंति । गज्जम्मि य पदसंखा अणुलोमं जण्ण पडिलोमं ॥३॥ पुव्विल्ल परिल्लेणं जं ण विरुज्झति तु तं तथा तहियं । अत्थेण जोइयं तू णिउत्तमेतारिसं होति ॥४॥ णयहेतुवादभंगियगणितादी अत्थओ य णिउणं तु । वित्थण्णत्थं विउलं मूगादीवायणाहिं च ॥५॥ सुब्बं तु सुग्गिहीतं अलियादीदोसवज्जियं वावि । अत्थे णि(ण)काइयं खलु णिकाइयं अहव बंधेणं ॥६॥ अविरुद्धो अक्खरेहिं जस्सउत्थो तह य समयमविरुद्धे । तं अत्थतो विसुब्बं हितं तु इहलोयपरलोए ॥७॥ अहियं सेयकरं तू णिस्सेसकरं तयं मुणेयव्वं । उप्पत्तीमादीण य बुद्धीण विवद्धणं जं तु ॥८॥ तस्स फलं तु उदारं अब्बाबाहं अणोवमं सोक्खं । एसो तु सुत्तकप्पो एत्तो वोच्छामि उद्देसं ॥९॥ उद्दिसियव्व उवट्टिँ अणुवट्टिते उदिसंते चतुलहुगा । अणुलोइएऽवि लहुगा तम्हा आलोइउद्दिसणा ॥१२००॥ आलोयणा य विणए खेत्त दिसाभिग्गहे य काले य । रिक्खगुणसंपदाऽविय अभिवाहारे य अट्टमए ॥७७॥१॥ अण्णगणागत पुच्छे केवइय सहायगा गुरूणं तु ? । एवं पुट्ठो सोऽविय वदेज्ज एगादिय इमे उ ॥२॥ एगे अपरिणते या, अप्पाहारे य थेरेए । गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥३॥ एतारिस विउसज्जे आगतते सोहि होति पुव्वुत्ता । आयारकप्पणामे सीस पडिच्छे य आयरिए ॥४॥ एयद्दोसविमुक्कं तु आगतालोइए पडिच्छति तु । आलोयणा तु एसा सेसा दारा जहाऽऽवासे ॥५॥ णवरिं कालद्वारं गुणद्वारं चैव ईसि भासिस्सं । अंगसुयक्खंधाणं उद्देसा सुक्खपक्खम्मि ॥६॥ पण्णत्तिमहाकप्पे सुत्तादि सरदे सुभिक्खकालम्मि । णेमित्तियादि पुच्छिय उद्दिसणा होति कायव्वा ॥७॥ सेसं कालविहाणं पुव्वुत्तं तं तु होति णायव्वं । केहिं गुणेहिं जुतस्स तु उद्दिसियव्वं ? इमे सुणसु ॥८॥ अब्बोच्छिक्की संवेगविणयउववेयवज्जभीरुस्स । पुव्वणहे जोगसमुद्धितस्स उद्देदणाकप्पो ॥९॥ वायगवाइज्जंते गुणा तु वायणविहिं च वोच्छामि । वायगवादिज्जंते गुणाण दारा इमे होंति ॥१२१०॥ अप्पणो य दढा रक्खा, विपुलो य तथाऽऽगमो । सुयणाणस्स य पूजा, जिणाण छिद्देय(णापंत)दुच्छल्लो ॥७८॥१॥ उम्मगं वच्चंतो अप्पा रक्खिज्जते तु णियमेणं । सुण्हादिद्वंतेणं सुतवावारोवओगेणं ॥७९॥२॥ उवउत्तस्स तदट्ठे णिज्जरलाभो तवो य विउलो उ । इंदियपणिही य तथा पसत्थझाणोसओगो य ॥३॥ जं अन्नाणी कम्मं खवेइ बहुयाहिं वासकोडीहिं । तं नाणी तिहिं गुत्तो खवेइ उस्सासमेत्तेणं ॥४॥ बारसविहम्मिवि तवे सब्भितरबाहिरे कुसलदिट्ठे । णवि अत्थि णवि य होही सज्झायसमं तवोकम्मं ॥५॥ सुयणाणुवदेसेणं वाइंतेणं च गिणहणेणं च । सुतपूजा होति कया तं च जितं होति वायते ॥ल० ८७॥६॥ सुयपूजाए य पुणो सुतोवएसेण वट्टमाणेण । वाएंम(ग)हिज्जंते आणा तु कता जिणिंदाणं ॥७॥ सुयणाणुवदेसेणं वायंता गिणहतो य पंतेहिं । ण चइज्जति छल्लेतुं वंतरमादीहिं देवेहिं ॥८॥ वायणगुणा तु एते समासओ वण्णिता मए कमसो । वायणविहिं तु एतो वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥९॥ अत्ताण परिस पुरिसं हितऽणिस्सिय परिजितं जियं काले । दिट्ठत्थं फुडवंजाण णिव्वावण णिव्वहणसुब्बं ॥८०॥१२२०॥ तवुसी गंधियपुत्तो रन्नो रयणघरिए दओभासे । देवीआभरणविही दिट्ठंता होंति आयरिए ॥८१॥१॥ अत्ताणं तु तुलेती मि ण वत्ति वायणं दातुं । जाणेज्जा पुरिसेऽविय जो घेत्तुं जत्तियं तरति ॥२॥ बहुयं घेत्तु समत्थे बहु देंती अप्प गिणहेते अप्पं । विच्चामेलणदोसो अतिबहुते तस्स दिज्जंते ॥३॥ परिणाम अपरिणामा अतिपरिणामा य तिविह पुरिसा तु । णारुणं छेदसुतं परिणामगे होति दायव्वं ॥४॥ इह परलोगे य हितं अणिस्सियं जं तु णिज्जरट्ठाए । न उ वाइ गारवेणं आहारादी तदट्ठाए ॥५॥ उक्कइतोवइयं परिजियं तु जिय एव अगुणयंतेवि । कालित्ति कालियादी कालो जो जस्स तं तहियं ॥६॥ जस्सवि जाणति अत्थं दिट्ठत्थं तं तु भण्णती सुत्तं । फुडवियडवंजणं तू वयणविसुब्बं मुणेयव्वं ॥७॥ तं होती णिव्ववणं जो वाएंतो तु ल्हादि उप्पाए । णिव्वहणसुत्तमेयं जो अक्खितो उ णिव्वहति ॥८॥ तउसारामे तउसे पुव्वं ण पलोएँ आगते कइए । जाव पलोए ताव तु कइ विपरिणत अन्नहिं गिणहे ॥९॥ एवं जो आयरिओ पुट्ठो संतो विचिंतयति अत्थं । विप्परिणमितुं तस्स तु सीसा वच्चंति अन्नत्थ ॥१२३०॥ जह मुल्लअणाभागी आरामी सो तहिं तु संवुत्तो । तह णिज्जरअणभागी आयरिओ होति एवं तु ॥१॥ जेण पुण पुव्वदिट्ठा तउसा आरामिएण होंति तहिं । सो देति लहुं तउसे मुल्लस्स य होति आभागी ॥२॥ एवं आयरिएणं जेणऽत्थो पुव्वि चिंतिओ होति । सो वाएति लहु लहुं णिज्जरभागी य होएवं ॥३॥ एमेव गंधिपुत्ते जाणमजाणे य गंधभाणे तु । आभागी अणभागी उवसंधारोऽविय तहेव ॥४॥

सेणियणिवस्स हत्थी तंतुयमच्छेण गहिओं जलमज्झे । सिरिघरिओं दओभासं मग्गिओं णवि जाणि कत्थं कओ ? ॥५॥ जा मग्गति ता हत्थी पडितो रण्णा विणासिओ घरिओ । बितिओ मग्गितो दिन्नंमि तक्खणा मोइते पूया ॥६॥ एमेवायरियम्मि वि उवसंधारो तहेव कायव्वो । चिंतणसमवाकरणे णिज्जरलाभे अलाभे य ॥७॥ रण्णो दो देवीओ पेसल्ली वल्लभी य ण्हायंति । पेसल्ली हारावे आभरणे वल्लभीए तु ॥८॥ जह चेडी आभरणं आवासे तह इमं पि णायव्वं । उवसंधारो तह चिय आयरिए होति कायव्वो ॥९॥ एवं ता वाएंतो भणितो अहुणा पडिच्छं वोच्छं । जारिसगुणेहिं जुत्तो वाएयव्वो तु सो होति ॥१२४०॥ अणुरत्तो भत्तिगतो अतिंतिणो अचवलो अलुद्धो य । अव्वक्खित्तात्तो कालणू पंजलिउडो य ॥८२॥१॥ संविग्गो मद्दविओ अमुती अणुवत्ततो विसेसणू । उज्जुत्तमपरितंतो इच्छितमत्थं लभति साहू ॥८३॥२॥ जो तु अवाइज्जंतो ण रुज्झ(रूस)ती जह ममं ण वाएति । सो होई अणुरत्तो भत्ती पुण होइ सेवा उ ॥३॥ मज्झ न देइत्ति न जो तिंबुरुकट्टं व तडतडे दिवसं । नं य आहारादीसुं तदभावोऽतिंतिणो एसो ॥४॥ गइठाणभावभासादिएहिं नवि कुणइ चंचलत्तं तु । गाणंगणिओ न भवे अचंचलो सो मुणेयव्वो ॥५॥ आहारादुक्कोसे जो लद्धूणं तयं न अत्तट्टे । एस न लुद्धो वक्खेवणा तु सद्दादिविसएसु ॥६॥ लीहालेट्टुगमादी जो य पढंतो ण करति वक्खेवं । अव्वक्खित्तो एसो आउत्तो अणणमणसो तु ॥७॥ आहारादी काले कालणू होति उवणयंतो उ । सुत्तत्थं गिण्हंतो कुण अंजलि पंजलिकडो तु ॥८॥ संविग्गो दव्वे मिगो भावे मूलुत्तरेसु तु जयंतो । मद्दविओ जोऽमाणी अमुयी विसमत्तणेऽवि जो ण मुए ॥९॥ आगारइंगितेहिं णातुं हियइच्छितं उवविहेति । गुरुवयणं चऽणुलोभे एसो अणुवत्तओ णामं ॥१२५०॥ जाणति तु जो विसेसं हिताहितादीण सो विसेसणू । णवि होति णिव्विसेसो समचंदणलेट्टुचिक्खल्लो ॥१॥ उज्जुत्तो उ अणलसो अप्परितंतो तु थूलभद्द इव । सुत्तत्थ णिज्जराओ मोक्खो वा इच्छियत्थो तू ॥२॥ पुच्छणकप्पो अहुणा जातिं पुच्छिज्ज संकियादिं तु । तातिं भण्णति इणमो अहक्कमं आणुपुव्वीए ॥३॥ पदमक्खरमुद्देसं संधी सुत्तत्थ तदुभयं चेव । घोस णिकाइत ईहित सुविमग्गित हेतुसब्भावं ॥८४॥४॥ पदमादी जा घोसो वुत्तत्था होंति एते सव्वेवि । हिययम्मि णिकाएउं पुच्छति तु णिकाइयं एयं ॥५॥ पुव्वावरेण ईहित एय मए होति ण व होति ? । हेतूहिं कारणेहि त सुविमग्गिय एव तु मएत्ति ॥६॥ सव्वभावो अत्थो खलु संदिद्धाइं तु पुच्छते ताइं । एयाइं चिय कमसो परियट्टे चेव अणुपेहे ॥७॥ अहुणा तु अहियव्वं केरिसयाणं समीवे समणेणं । आयरिउवझायाणं तमहं वुच्छं समासेणं ॥८॥ उग्गमउप्पायणएसणाएँ णिरवेक्खो णीयपडिसेवी । सुत्ते अदिट्टुसारो आयरिओ ण कप्पति सो उ ॥९॥ उग्गमउप्पायणएसणाइ साविक्खो णितियपरिवज्जी । सुत्तम्मि दिट्टुसारो आयरिओ कप्पई सो उ ॥८५॥१२६०॥ सुत्तस्स सारो अत्थो सो दिट्टो होति जेण बुद्धीए । सो होति दिट्टुसारो आयरिओ तू मुणेयव्वो ॥ल० ८८॥१॥ एमेव उवज्झाओ गुणेहिं जुत्तो तु होति णायव्वो । एतेसिं तु सकासे सुत्तत्था होंति घेतव्वा ॥२॥ आयरियउवज्झाया णाणुण्णाया जिणेहिं सिप्पट्टा । णाणे चरणे जोयावगत्ति तो ते अणुण्णाता ॥३॥ एसो दु णाणकप्पो जहक्कमं वण्णितो समासेणं । एत्तो चरित्तकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥४॥ जम्हा चरिज्जते तू चरियं वा तेण तो चरित्तं तु । त पुण अप्पडिसेवे सुद्धमसुद्धं तु पडिसेवे ॥५॥ पडिसेवणा तु दुविहा कप्पे दप्पे य होंति णायव्वा । एतेसिं तु विभासा जह भणिय णिसीहणामम्मि ॥६॥ एसो चरित्तकप्पो छव्विहकप्पो य एस अक्खाओ । सत्तविहकप्पमेत्तो वोच्छामि अहक्कमेणं तु ॥७॥ ठितमट्टितजिण्णथेरे लिंगे उवही तहेव संभोगे । एसो तु सत्तकप्पो णेयव्वो आणुपुव्वीए ॥८६॥८॥ ठियमट्टितकप्पाणं होति विसेसो इमो मुणेयव्वो । पुरपच्छिमाण व ठिओ अठिओ पुण मज्झिमजिणाणं ॥९॥ कतिठाणेहिं ठितो खलु ठितकप्पो होति तू मुणेयव्वो ? । कइहि व अट्टितकप्पो ? ठिताठितो होति बोद्धव्वो ? ॥१२७०॥ दसठाणठितो कप्पो पुरिमस्स य जिणस्स । कतरे दस ठाणा तू ? भण्णति आचेलगाइ इमे ॥१॥ आचेल (लु) क्कोदेसिय सेज्जातररायपिंडकितिकम्मे । जेट्टुपडिक्कमणे मासं पज्जोसणाकप्पे ॥८७॥२॥ एतेहिं दसहिं ठितो ठितकप्पो होति तू मुणेयव्वो । चउहिं ठितो छहिं अठितो अट्टितकप्पो पुण इमेहिं ॥३॥ सिज्जातरपिंडे या कितिकम्मे चेव चाउजामे य । राइणियपुरिसजेट्टो चउसुवि एतेसु होति ठितो ॥४॥ आचेलुक्कुद्देसिय णिवपिंडे चेव तह पडिक्कमणे । मासं पज्जोसवणा छप्पतेंऽणवट्टिता कप्पा ॥५॥ दुविहो होति अचेलो संताचेलो यऽसंतचेलो य । तित्थकरऽसंतचेलो असंतचेलो भवे

सेसा ॥६॥ दुविहो होइ अचेलो पडिमाचेलो तहा परिज्जुणो । पडिमाचेलो दुविहो सावेक्खो चव णिरवेक्खो ॥७॥ णिगणो अचोलपट्टो णिरवेक्खो सो भवे अचेलो उ । णिगणो सचोलपट्टो सावेक्खो सो पुण अचेलो ॥८॥ णिगणो णिव्वसणो अवसणो अचेलो य अकडिपट्टो य । पडिमाचेलस्सेए नामा एगगट्ठिया होंति ॥९॥ उग्गमउप्पायणएसणाए जदि हुंति अपरिसुद्धाईं । मोल्लगरूयाणि ताणि तु अपरिज्जुणाईं चेलाईं ॥१२८०॥ उग्गमउप्पायणएसणाए जदि हुंति सुपरिसुद्धाईं । मोल्ललहुयाणि ताणि तु परिज्जुणाइ तु चेलाईं ॥१॥ एत्तो सावज्जाईं चेलाईं संजमोवघातीणि । वज्जित्ता विहरंतो होइ अचेलो अपरिज्जुणो ॥२॥ णिग्गहितराग दोसो अणवज्जेहिं अहापरित्तेहिं । अप्पेहिवि विहरंतो होति अचेलो उ परिज्जुणो ॥३॥ णिरूवहतलिंगभेदे गुरूगा कप्पइ य कारणज्जाते । गेलणरोगलोए सरिरविवेगे य कितिकम्मे ॥४॥ असिवे ओमोदरिए रायहुट्टे पवादिदुट्टे वा । आगाढे अणलिंगं कालक्खेवो व गमणं वा ॥५॥ सालीगतगुलगोरस णवेसु वल्लफलेसु जातेसु । दाणट्ट करणसट्टा आहाकम्मे णिमंतणता ॥६॥ आहा अहे य कम्मे आयाहम्मे य अत्तकम्मे य । तं पुण आहाकम्मं णायव्वं कप्पती कस्स ? ॥७॥ संघस्स पुरिमपच्छिमसमणाणं तह य चव समणीणं । चउरो उवासगाणं पच्छा सण्णायगागमणं ॥८॥ संघस्स मज्झिमे पच्छिमे य समणाण तह य समणीणं । चउरो पडिस्सताणं पच्छा सण्णायगागमणं ॥९॥ उज्जुयजड्ढा सव्वे पुरिम चरिमा य वक्कजड्ढा उ । तम्हा तेसिं संरक्खणट्ट सव्वं पडिकुट्ट ॥१२९०॥ अवगतजड्ढा मज्झिमसाहू तह चव तं परिणमंति । कप्पाकप्पं दंसिय तेसिं बज्झं च पडिकुट्टं ॥१॥ पुरिमाण दुव्विसोज्झो चरिमाणं (मो पुण) दुरणुपालओ कप्पो । मज्झो विसुद्धचरणो एवं कप्पोऽणुगंतव्वो ॥२॥ आयरिए अभिसेगे भिक्खुम्मि गिलाणम्मि भयणा तु । तिक्खुत्तो अडविपवेस चउपरियट्टे तओ गहणं ॥३॥ असिवे ओमोदरिए रायहुट्टे पवादिदुट्टे वा । अब्बाणे गेलणो आहाकम्मं तु जयणाए ॥४॥ जदि सव्वे गीयत्था ताहे आलोयणोग्गहे भणिता । अह होति मीसगजणो पायच्छित्तं तवोकम्मं ॥५॥ चतुरो चउत्थभत्ते आयामेगासणे य पुरिमट्टे । णिव्विइयं दायव्वं सतं च पुव्वोग्गहं कुज्जा ॥६॥ संघस्सोहविभागो समणासमणी च कुलगणस्सेव । कडमिह ठिते ण कप्पइ अट्टितकप्पे जमुद्धिस्स ॥७॥ आयरिए अभिसेगे भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणा तु । अडविपवेसे असती तियपरियट्टे ततो गहणं ॥८॥ तित्थगरपडिकुट्टो आणा अन्नायउग्गमोऽविय न सुज्झे अविमुत्ति अलाघवता दुल्लभसेज्जा विउच्छेदो ॥९॥ दुविहे गेलणम्मि णिमंतणे दव्वदुल्लभे असिवे । अवमोदरिय पदोसे भए य गहणं अणुण्णायं ॥१३००॥ तिक्खुत्तो य सखित्ते चउद्धिसिं जोयणम्मि कडजोगी । दव्वस्स य दुल्लभता सागारियसेवणा दव्वे ॥१॥ मुदिते मुद्धभिसित्ते मुदितो जोहोति जोणिसिद्धो तु । अभिसित्तो य परेहिं सयं व भरहो जहा राया ॥२॥ ईसरतलवरमांडबिएहिं सट्टहिं सत्थवाहेहिं । णित्तेहिं अतित्तेहिं य वाघातो होति साधुस्स ॥३॥ लोभे एसणघाते संका तेणे चरित्तभेदे य । इच्छंतमणिच्छंतं चाउम्मासा भवे गुरूगा ॥४॥ अण्णेवि हुंति दोसा आइणो गुम्म रयण इत्थीए । तण्णिस्साए पवेसो तिरिक्खमणुया भवे दुट्टा ॥५॥ दुविहे गेलणम्मिवि णिमंतणा दव्व दुल्लभे असिवे । ओमोदरिय पओसे भए य गहणं अणुण्णायं ॥६॥ पढमं अब्भुट्टाणं कितिकम्मं अज्जसेवियमुदारं । कायव्वं कस्स व केण वावि काहे व कइखुत्तो ? ॥७॥ विणओ सासणे मुलं० (आव० १२२८) ॥८॥ जम्हा विणयति कम्मं० (आव० १२२९) ॥९॥ पुव्वामेव य विणओ० (?) गाहा १३१०॥ आयार विणय कप्प गुणदीवणा अत्तसोही उजुभावो । अज्जव मद्दव लाघव तट्ठी पल्लाकरणं य ॥१॥ लहुओ गुरूओ मासो लहुगा गुरूगा भवे चउम्मासा । खुड्डग भिक्खू वसभे आयरिए अदुव विवरीयं ॥२॥ जदिखुत्तो जदिवेलं णिक्खमए णिक्खमित्तु वा एति । तदिखुत्तो तंवेलं सव्वे गुरूणो समुट्टति ॥३॥ वसहीय भिन्नमासो काइयभूमीय मासियं लहुयं । चत्तारि य सुक्किलया ओगाहंतस्स बहियाए ॥४॥ भिक्खू वसभायरिया अज्जा ओवासगा य इत्थीओ । वादी राया संघो राया संघो उभयओवि (संथारओ य संघाड विभय लहु) ॥५॥ लहुओ गुरूओ मासो लहुगा गुरूगा भवे चतुम्मासा । छम्मासा लहुगुरूगा छेदो मूलं तह दुगं च ॥६॥ वंदण चिति कितिकम्मं पूयाकम्मं च विणयकम्मं च । कायव्वं कस्स व केण वावि काहे व कतिखुत्तो ? ॥७॥ कतिओणयं० (आव० १११५) ॥८॥ सेढीसमतीताणं कितिकम्मं जे य होंति सेढिगता । सेढीयबाहिराणं कितिकम्मं होति भइयव्वं ॥९॥ आयरियउवज्झाए पवित्ति पत्तेयबुद्ध पव्वधरे । केवलणाणधरम्मि

य कायवं णिज्जरट्टाए ॥१३२०॥ सेढीठाणे सीमाकज्जे चत्तारि बाहिरा होंति । सेढीट्टाणे दुगभेद पाय चत्तारिवी भइया ॥१॥ पत्तेयबुद्ध जिणकप्पिया य सुद्धपरिहारिया अहालंदा । एते चतुरो दुग दुग भेया कज्जेसु बाहिरगा ॥२॥ अंतोवि होति भयणा ओमे आवण्ण संजती सेहे । बाहिं पि होति भयणा अतिवा (बा) लग वायए सीसो ॥३॥ हेट्टट्टाणठितोऽवि हु पावयणि गणट्टिताए अवरम्मि । कडजोगि सण्णिसेवति आदिणियंठोव सो पुज्जो ॥४॥ संकिण्णवराहपदे अणाणुतावी य होति अवराहे । उत्तरगुणपडिसेवी आलंबणवज्जिओ वज्जो ॥५॥ गच्छपरिरक्खणट्टा अणागतं आउवायकुसलस्स । एसा गणाहिपतिणो सुहसीलगवेसणा भणिता ॥६॥ दुविहे कितिकम्ममी वाउलिया मो णिसट्टबुद्धीया । आदिपडिसेधियम्मी उवरिं आलोवणा बहुला ॥७॥ मुक्कधुराए (सं)० (आव० ११३८)॥८॥ वायाए णमुक्कारो० (आव० ११३९)॥९॥ एतातिं अकुव्वंतो० (आव० ११४०)॥१३३०॥ परियाव महादुक्खे मुच्छामुच्छे य किच्छपाणे य । किच्छुस्सासे य तथा समोहते चेव कालगते ॥१॥ चत्तारि छच्च लहु गुरु छेदो मूलं च होति बोद्धवं । अणवंट्टप्पे य तथा पावति पारंचियट्टाणं ॥२॥ परियाग परिस पुरिसं खेतं कालागमं च णाउणं । कारणजाए जाए किइकम्मं होइ कायवं ॥३॥ दंसणनाणचरित्तं तवविणयं जत्थ जित्तियं जाणे । जिणपन्नत्तं भत्तीएँ पूयए तं तथा पायं ॥४॥ सावज्जजोगविरइत्ति संजमो तेण होइ एगविहो । रागद्दोसनरोहोत्ति तेण दुविहो मुणेयव्वो ॥५॥ मरवयणकाय जोगाण णिरोहो तेण होति तिविहो तु । कोहमयमायलोभुवरतोत्ति चउहा स णेयव्वो ॥६॥ पंच वय इंदियारि य पंचह सराई विरति छक्काया । वतकायअकप्पकप्पादी अट्टरसहा मुणेयव्वो ॥७॥ जोगे करणे सण्णा इंदिय भोमादि समणधम्मो य । अट्टारससीलंगसहस्स संजमो होइ णातव्वो ॥ल० ८९॥८॥ कितिकम्मं पि य दुविहं अब्भुट्टाणं तहेव वंदणयं । समणेहिं य समणीहि य जहक्कं होति कायवं ॥९॥ सव्वाहिं संजतीहिं कितिकम्मं संजताण कायवं । पुरूसुत्तरिओ धम्मो सव्वजिणाणं पि तित्थम्मि ॥ल० ९०॥१३४०॥ पंचज्जामो य धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स । मज्झिमयाण जिणाणं चातुज्जामो भवे धम्मो ॥१॥ पुरिमाण दुव्विसोज्झो चरिमाणं दुरणुपालओ कप्पो । मज्झिमगाण जिणाणं सुविसोज्झो सुरणुपालो य ॥२॥ पुव्वं तु उवट्टविओ जस्स व सामाइतं कतं पुव्वं । सो होती जेट्ठो खलु जो पच्छा सो कणिट्ठो तु ॥३॥ पुव्वोवट्ठो जेट्ठो होइती इत्थ होति पुच्छा उ । उवठावणा तु कतिहि ठाणेहिं ? इमा भवे दसहा ॥ल० ९१॥४॥ ततो पारंचिता वुत्ता, अणवट्टप्पा तु तिण्णि तु । दंसणम्मि य वंतम्मि, चरित्तम्मि य केवले ॥ल० ९२॥५॥ अदुवा चियत्तकिच्चे, जीवकायं समारभे । सेहे य दसमे वुत्ते, जस्सुवट्टावणा भणिता ॥ल० ९३॥६॥ अहवा पारंचेक्को अणवट्टप्पो य होति एक्को य । दंसणवंतो ततिओ चरित्ते य चतुत्थओ ॥ल० ९४॥७॥ पंचमो चियत्तकिच्चो सेहो छट्ठो य होति बोद्धव्वो । एसो य छव्विहो खलु चउव्विहो वा इमो अण्णो ॥ल० ९५॥८॥ दंसणम्मि य वंतम्मि, चरित्तम्मि य केवले । चियत्तकिच्चे सेहे य उवट्टप्पा तु आहिया ॥९॥ दंसणचरित्तवंते पारंचणवट्टओवि पविसंति । ते जेण भवंती उ एवंसा भवे चउरो ॥१३५०॥ दंसणवंते य तथा जीवणिकाया य जो समारभए । उट्टावणाएँ भयणा एतेसिं होति दोण्हं पि ॥१॥ अणाभोएण मिच्छत्तं, सम्मत्तं पुणरागते । तमेव तस्स पच्छित्तं, जं सम्मं (संजमं) पडिवज्जए ॥२॥ आभोगेण उ मिच्छत्तं, संमत्तं पुणरागते । जिणथेराण आणाए, मूलच्छेज्जं तू कारए ॥३॥ छण्हं जीवणिकायाणं, अप्पज्झो तु विराहतो । तिविहेण पडिक्कंते, मूलच्छेज्जं तु कारए ॥४॥ छण्हं जीवणिकायाणं अणपज्झो तु विराहतो । आलोइयपडिक्कंतो, सुद्धो हवति संजतो ॥५॥ जीवणिकायारंभे दंसणवंते य भणिय पच्छित्तं । तं देय सुत्तविहिणा अण्णह देंते इमे दोसा ॥६॥ अपच्छित्ते य पच्छित्ते, पच्छित्ते अतिमत्तया । धम्मस्सासायणा तिक्वा, मग्गस्स य विराहणां ॥७॥ उस्सुत्तं ववहरंतो, कम्मं बंधंति चिक्कणं । संसारं च पवट्ठेति, मोहणिज्जं च कुव्वति ॥८॥ उम्मग्गदेसणाए, मग्गं विप्पडिवायए । परं मोहेण रंजंतो, महामोहं पकुव्वति ॥९॥ सपडिक्कमणो धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स । मज्झिमयाण जिणाणं कारणजाए पडिक्कमणं ॥१३६०॥ दुविहो य मासकप्पो जिणकप्पो चेव थविरकप्पो य । एक्केक्कोऽविय दुविहो अट्टितकप्पो य ठियकप्पो ॥१॥ पज्जोसवणाकप्पो होति ठितो अट्टिओ य थेराणं । एमेव जिणाणं पी कप्पो ठितमट्टितो होति ॥२॥ चातुम्मासुक्कोसो सत्तरि रांइतिया जहण्णेणं । ठितमट्टितमेगतरे काररवच्चा (न्ना) सिताऽण्णतरे ॥३॥ ठियमट्टितो य कप्पो एसो मे (भे) वण्णिओ समासेणं । अह एत्तो जिणकप्पं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥४॥ गच्छम्मि य णिम्माया थेरा जे मुणितसव्वपरमत्था । अग्गह अभिग्गहे या उवेंति जिणकप्पियविहारं

॥८८॥५॥ णवपुव्विं जहन्नेणं उक्कोसेणं तु दस असंपुण्णा । चोदसपुव्वी तित्थं तेण तु जिणकप्प ण पवज्जे ॥६॥ वयरोसभसंघयणा सुत्तस्सऽत्थो तु होति परमत्थो । संसारभावो वा णाओ तो मुणितपरमत्थो ॥७॥ दोहऽग्गह ततियादी पडिमाऽभिग्गहण भत्तपाणस्स । दोहिं तु उवरिमाहिं गिण्हंते वत्थपाताइ ॥८॥ दव्वादभिग्गहा पुण रयणावलिमादिगा व बोद्धव्वा । एतेसु विदितभावा उवेंति जिणकप्पियविहारं ॥९॥ परिणाम जोगसोही उवहिविवेगो य गणविवेगो य (यणिक्खेवो) । सेज्जासंथारविसोहणं च विगतीविवेगं च ॥८९॥ १३७०॥ गणहरठवणं च तथा अणुसट्ठी चैव तह य सीसाणं । सामायारी य तथा वत्तव्वा होति जिणकप्पे ॥९०॥ १॥ अणुपालिओ य दीहो परियाओ वायरावि मे दिन्ना । अब्भुज्जयाण दोण्हं उवेमि कतरं णु ? परिणामो ॥२॥ सोहिणिमित्तं जोगाण भावणा सा इमा तु पंचविहा । तव सत्त सुतेगत्ते बले य तह पंचमा होति ॥३॥ एतेसिं तु विभासा उवरिं भण्णिहिति मासकप्पम्मि । सेसाइं दाराइं वोच्छामि समासतो इणमो ॥४॥ पुव्वुवहिस्स विवेगं कातुं गेण्हति अहागडं उवहिं । अभिगहियमेसणाहिं उप्पादेउं सयं चैव ॥५॥ गणसण्णास करेती जो जहिं ठारट्ठितो तु पुव्वम्मि । तं तत्थेव ठवेती गणणिक्खेवं च इत्तरियं ॥६॥ सेज्जाएँ अपरिभुत्ते ठायति तहियं तु एगदेसम्मि । संथारं उप्पादे अहाकडं एसणविसुद्धं ॥७॥ विगतीओ य ण गेण्हति गेण्हति भत्तं च सो अलेवाडं । इय भाविओ हु जाहे ताहे ठवती गणहरं तु ॥८॥ गणहर गुणसंपन्नं वामे पासम्मि ठावइत्ताण । चुन्नातिं छुहति सीसे सच्चित्तादी य अणुजाणे ॥९॥ ठावेऊण गणहरं आमंतेऊण तो गणं सव्वं । तिविहेण खमावेती सबालवुद्ध उलं गच्छं ॥१३८०॥ संवेगजणियहास सुत्तत्थविसारता पयणुकम्मा । चित्तेति गणं धीरा णिंतावि हुं ते जिणाणाए ॥१॥ णिद्धमहुराति सेसं परलोगहितं गुरूण अणुरुवं । अणुसट्ठिं देंति तहिं गणाहिवतिणो गणस्सेवं ॥२॥ तवणियमसंपउत्ता आवस्सगझाणजोगमल्लीणा । संजोगविप्पजोगे अभिग्गहा जे समत्थाणं ॥३॥ सुप्पत्ते णिसिरंतेहिं गणोवी चित्तिओ हवति सो उ । णिद्धाए दिट्ठिए आलोए तं गणं सव्वं ॥४॥ बायाए महुराए आसासे अपरिसेस णिस्सेसं । गुरू अणुरूव जंहरिहं सबालवुद्धाति रातिणिए ॥५॥ तवो होति बारसविहो दुह णियमो इंदिओ य णोइंदी । आवाससमायारी बोद्धव्वा चक्कवाला तु ॥६॥ सुत्तत्थझाणजोगे अल्लीणा तेसु होइ जुत्ता उ । सव्वेविय संजोगा णियमा ऊ विप्पओंगंता ॥७॥ तह उवहीउप्पायण दव्वादीया अभिग्गहा जे तु । सति सामत्थे तेसुवि मा हु पमायं करेज्जाऽणु ॥८॥ अधवा अभिग्गहा ऊ कुवंति जिणा य जे समत्था य । एवं सासित्तु गणं ताहे गणहारि अप्पाहे ॥९॥ गणसंगहुवग्गहरक्खणे तुमं मा हु काहिसि पमादं । ठितकप्पोहु जिणाणं गणधरपरिवारिया गच्छे ॥१३९०॥ मजाररसियसरिसोवमं तुमं मा हु काहिसि विहारं । मा णासेहिसि दोण्णिवि अप्पाणं चैव गच्छं च ॥१॥ वट्ठंतओ विहारो जिणपण्णत्तो दुवालसंगम्मि । जह जिणकप्पियपरिहारियाण सेसाणवि तहेव ॥२॥ परिबट्ठमाणसट्ठो जह जिणकप्पो तथा करिज्जासी । अकरिंतमप्पणा ऊ ण ठवे अण्णं इमं णाऊं ॥३॥ जो सगिहं तु पलित्तं अलसो तु ण विज्झवे पमाणं । सो णवि सद्दहियव्वो परघरदाहप्पसमणम्मि ॥४॥ णाणं अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता । ण चएति जो धरेतुं अप्पाण गणं ण गणहारी ॥५॥ णाणं अहिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता । चाएति जो धरेतुं अप्पाण गणं स गणहारी ॥६॥ णाणं अभिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता । न चएति जो ठवेउं अप्पाण गणं न गणहारी ॥७॥ णाणं अभिज्जिऊणं जिणवयणं दंसणेण रोएत्ता । चाएति जो ठवेउं अप्पाण गणं सो गणहारी ॥८॥ णाणम्मि दंसणम्मि य तवेचरित्ते य समणसारम्मि । ण चएइ जो ठवेउं अप्पाण गणं न गणहारी ॥९॥ णाणम्मि दंसणम्मि य तवे चरित्ते य समणसारम्मि । चाएति जो ठवेउं अप्पाण गणं स गणहारी ॥१४००॥ एसा गणहरमेरा आयारत्थाण वण्णिता सुत्ते । लोगसुहाणुगताणं अप्पच्छंदा जहिच्छाए ॥१॥ लाहसुयसद्वनिद्दादि विसय तेसिं तु जे भवे रत्ता । अप्पच्छंदा तेऊ विहारो ण तु तेसऽणुण्णाओ ॥२॥ उग्गमउप्पायणएसणा उ चरितस्स रक्खणट्ठांए । पिंडं उवहिं सेज्जं सोहिंतो होति सचरित्ती ॥३॥ सीतावेति विहारं सुहसीलत्तेण जो अबुद्धीओ । सो नवरि लिंगसारो संजमसारम्मि णिस्सारो ॥४॥ तित्थगरो चतुणाणा सुरमहितो सिज्झियव्वयधुवम्मि । अण्णिगूहियबलविरिओ तवोवहाणम्मि उज्जमति ॥५॥ किं पुण अवसेसेहिं दुक्खक्खयकारणा सुविहिएहिं । होति ण उज्जमियव्वं सपच्चवायम्मि माणुस्से ? ॥६॥ संखित्ताविव पवहे जह वट्ठति वित्थरेण पवहंती । उदधितेणं च णदी तह सीलगुणेहिं वट्ठाहिं ॥७॥

कुणमप्पमाय आयवस्सएहिं संजमतवोवहाणेहिं । णिस्सारं माणुस्सं दुल्लभलाभं वियाणित्ता ॥ल० ९६॥८॥ तिक्कसायपरिणता परपरिवादं च मा करेज्जाह । अच्चासायणविरता होह सदा संजमरता य ॥ल० ९७॥९॥ सुस्सूसगा गुरूणं चेइयभत्ता य विणयजुत्ता य । सज्झाए आउत्ता साहूण य वच्छला णिच्चं ॥ल० ९८॥१४१०॥ एस अखंडियसीलो बहुस्सुतो य अपरोवतावी य । चरणगुणसुद्धियत्ति य धण्णा (ण्ण) णयरीते (ति) घोसणगं ॥१॥ बाढंति भाणिरुणं एयं मे मंगलंति जंपंता । आणंदअंसुपादं मुच्छंति गुणे सरंता से ॥२॥ कतरे गुणा उ तस्स जे सुमरंता तु तस्स ते सीसा ? । भण्णति इणमो सुणसु ते भण्णंते समासेणं ॥३॥ सव्वस्सदायगाणं समसुहदुक्खाण णिप्पकंपाणं । दुक्खं खु विसहिउं जे चिरप्पवासो गुरूणं च ॥ल० ९९॥४॥ सीलह्णगुणह्णहि य बहुस्सुएहि य अपरोवतावीहिं । पवंसंतेहिं मएहिं देसाते खंडिया होंति ॥ल० १०००॥५॥ अणुसट्ठिं दाऊणं तहिं पसत्थम्मि तिहिमुत्तम्मि । अह सण्णिहिंतं संघं असति गणं तं समाहूय ॥६॥ जिणवरपादसमीवे पडिवज्जे गणधराण व समीवे । चोद्दसपुव्वी तह चेइए य असतीय वडमादी ॥७॥ थामाव (वासावि) हारविजढा काउं गहणं च गाएणं चेव । सुत्तत्थझरियसारा गेण्हंति अभिग्गहे धीरा ॥८॥ जिणकप्पियपाउग्गा अभिग्गहा गिणहती ण अन्ना उ । जिणकप्पो केरिसस्सा कप्पति पडिवज्जिउं ? सुणसु ॥९॥ कप्पे सुत्तत्थविसारयस्स संघयणविरियजुत्तस्स । एतारिसस्स कप्पति पडिवज्जिउ होति जिणकप्पो ॥१४२०॥ जिणकप्पे संघयणं भणितं पढमं तु होति णियमेण । विरियं तु भण्णति धिती तीएँ जुतो वज्जकुड्डसमो ॥१॥ कोति पुण ण पडिवज्जे सो पुण रियमाउ कारणेहिं तु । काणि पुण कारणाणि य ? इमाइं ताइं णिसामेह ॥२॥ देहस्स दुब्बलत्तं आयरियाणं च दुल्लभपसादा । रोग पडिबंध न सहति सीउणहादी य पडिभागी ॥९॥३॥ सुत्तत्थाणिवि घेत्तू दुब्बलदेहो तु तं ण चाएति । गुरूणं च अणणुकूलत्तणेण णाराहिओ सूरी ॥४॥ आयरिया अपसण्णा सुत्तपसायं तु ते ण कुवंति । णाहीतं तेण सुतं जावइएणं तु पज्जतो ॥५॥ सोलसविहरोगाणं अंहवा गाढं अभिद्दुएणं तु । णाधीतं होज्ज सुतं ते य इमे वण्णिता रोगा ॥६॥ कासे सासे जरे दाहे, जोणीसूले भगंदले । अरिसा अजीरए दीट्ठी, मुद्धसूले अकारए ॥७॥ अच्छिवेयण तह कण्णवेयणा कंडु कोढ दगऊरं (सरए) । एते ते सोलसवी समासतो वण्णिता रोगा ॥८॥ अण्णो पडिबंधेणं गुरुकुलवासं ण चेव आवसई । तेणं णाहिज्जति ऊ के पुण पडिबंधिमे सुणसु ॥९॥ सो गामो सा वइया तं भत्तं भद्दओ जणो जत्थ । एताइं संभरंतो गुरुकूलवासं ण रोएती ॥१४३०॥ सक्कारो संमाणो पुज्जइ मे भोईओ तहिं गामे । आयरिओ महतरओ एरिसता से (मे) तहिं सट्ठा ॥१॥ सच्छंदुंढाणणिवज्जणस्स सच्छंदगहितभिक्खस्स । सच्छंदजंपियस्स य मा मे सत्तूवि एगागी ॥ल० १०१॥२॥ एएहि ऊ अभागी सीताईणं ण देति उ उरं तु । तो णाहिज्जति सो ऊ गुरुकुलवासं असेवंतो ॥३॥ एतेहिं ण पडिवज्जे अणुसट्ठी दारिघं परिसमत्तं । का पुण सामायारी जिणयप्पे होतिमा सा तु ॥४॥ खेत्ते काल चरित्ते तित्थे परियाग आगमे वेदे । कप्पे लिंगे लेस्सा गणणा जाणे यऽभिग्गाहे ॥५॥ पव्वावण मुंडावण मणसाऽऽवण्णेऽवि से अणुघाता । कारण णिप्पडिकम्मे भत्तं पंथो य ततियाए ॥६॥ एसो जिणकप्पो खलु समासतो वण्णितो सविभवेणं । एत्तो उ थेरकप्पं समासओ मे णिसामेहि ॥७॥ तिविहम्मि संजमम्मि उ बोद्धव्वो होति थेरकप्पो तु । सामइयछेदपरिहारिए य तिविहम्मि एयम्मि ॥८॥ ठिय अट्टिए व कप्पे सामाइयसंजमो (ओ) मुणेयव्वो । छेदपरिहारिया पुण णियमाओ होंति ठितकप्पे ॥९॥ एतेसु थेरकप्पो जह जिणकप्पीण अग्गहो दोसु । गहणं चऽभिग्गहाणं पंचहिं दोहिं च ण तह इहं ॥१४४०॥ बाले वुट्ठे सेहे अगीतत्थे णाणदंसणप्पेही । दुब्बलसंघयणम्मि य गच्छं पइ णेसणा भणिता ॥१॥ जहसंभवं तु सेसा खेत्तादि विभासियव्व दारा उ । उवरिं तु मासकप्पो वित्थरतो विभासते तेसिं ॥२॥ इति एस थेरकप्पो एत्तो वोच्छामि लिंगकप्पं तु । तहिय तु लिंगकप्पो इणमो जिणकप्पे भवती तु ॥३॥ रूढनहकक्खण (णि) यणो मुंडो दुविहोवही जहण्णोसिं । एसो तु लिंगकप्पो णिव्वाघातेण णायव्वो ॥४॥ रयहरणं मुहपोत्ती संखेवेणं त दुविह उवहि उ । वाघातो विकितलिंगे अरिस पमेहे उ कडिपट्टो ॥५॥ दुविहा अतिसेसाविय तेसि इमे वण्णिता समासेणं । बाहिरऽभंतरगा तेसि विसेसं पवक्खामि ॥६॥ बाहिरगो सरीरस्सा अतिसेसो तेसिमो उ बोद्धव्वो । अच्छिह्पाणिपातो वइरोसभसंघयणधारी ॥७॥ अब्भंतरमतिसेसो इमो उ तेसिं समासतो भणिओ । उयहीविव अक्खोभो सूरो इव तेयसा जुत्तो ॥८॥

अव्वावणसरीरो वङ्गंधो ण भवते सरीरस्स । खतमवि ण कुच्छ (कच्छु) तेसिं परिकम्मं णवि य कुवंति ॥९॥ पाणिपडिग्गहधारी एरिसया णियमसो मुणेयव्वा । अतिसेसे वुच्छामिं अण्णेऽवि समासतो तेसिं ॥१४५०॥ दुविह अतिसेस तेसिं णाणातिसयो तहेव सारीरो । णाणातिसतो ओही मणपज्जव तदुभयं चेव ॥१॥ अभिणिबोहियणाणं सुतणाणं चेव णारमतिसेसो । तिवली अभिण्णवच्चा एसो सारीरमइसेसो ॥२॥ रयहरणं मुहपोत्ती जहणोवहि पाणिपत्तयस्सेसो । उक्कोस तिन्नि कप्पा रयहर मुहपोत्ति पणगेतं ॥३॥ णवहा पडिग्गहीणं जहणमुक्कोस होति बारसहा । तेसिंऽवेयाणिं चिय अइरेगो पायनिज्जोगो ॥४॥ उव्वट्टणघंसणमज्जणा य नहनयणदंतसोभा य । एते उवघाया खलु हवंति जिणकप्पलिंगस्स ॥५॥ उवट्टणाइयाइं उवगरणं चेव थेरकप्पीणं । भइयव्वो लिंगकप्पो गेलन्नाईहिं कज्जेहिं ॥६॥ कज्जम्मि गिलाणाइसु उव्वट्टणमाइया अणुन्नाया । दुगुणो चउग्गुणो वा कारणओ होइ उवही उ ॥ल० १०२॥७॥ रुढणहकक्खणि (ण) यणो मुंडोदुविहोवहि समासेणं । एसो तु लिंगकप्पो कारणवच्चासि तऽण्णयरो ॥८॥ लोय खुर कत्तरीय मुंडं तिविहं तु होइ थेराणं । असिवादिकारणेहिं कुज्ज विवज्जास लिंगस्स ॥९॥ निरूवहयलिंगभेदे गुरूगा कप्पइ य कारणज्जाते । गेलन्नरोगलोए सरीरवेयावडियमादी ॥१४६०॥ वासत्ताणेणावि हु भेदो लिंगस्स तं अणुण्णातं । चाउम्मासुक्कोसं सत्तरि रासंदिय जहन्नं ॥१॥ एयं तु दव्वलिंगं भावे समणत्तणं तु णायव्वं । को उ गुरो दव्वलिंगे ? भण्णति इणमो सुणसु वोच्छं ॥२॥ सक्कार वंदण णमंस पूजा कहणा य लिंगकप्पम्मि । पत्तेयबुद्धमादी लिंगे छउमत्थ तो गहणं ॥९२॥३॥ वत्थासण सक्कारो वंदण अब्भुट्टणं तु णायव्वं । पणिवादो तु णमंसण संतगुणकित्तणा पूया ॥४॥ दट्टुण दव्वलिंगं कुव्वतेताणि इंदमादिवि । लिंगमि अविज्जंते णो णज्जति एस विरतोत्ति ॥ल० १०३॥५॥ सहितो समणलिंगेणं, धम्मन्नू संम (ज) तो भवे । अलिंगं बेति तं कीस, जाणंतो ण करे तुमं ? ॥६॥ पत्तेयबुद्धो जाव उ गिहिलिंगी अहव अण्णलिंगी उ । देवावि ता ण पूयेंजि मा पुज्जं होहिति कुलिंगं ॥७॥ ण य णं पुच्छति कोती केरिसओ होइ तुब्भ धम्मोत्ति ? । ण य सल्लिलिंगविहूणं छउमत्थो जाणे विरओत्ति ॥८॥ एसो तु लिंगकप्पो अहुणा वोच्छामि उवहिकप्पं तु । जो जस्स भवे उवही जिणथेराणं जहाकमसो ॥९॥ ओहे उवग्गहे या दुविहो उवही तु होति णायव्वो । ओहोवही तु तिण्हं ओक्कगहिओ भवे दोण्हं ॥१४७०॥ जिणकप्पे थेरकप्पे कप्पातीते य तिण्हमोघो तु । थेरारमुवग्गहिओ साहूणं संजतीणं च ॥१॥ बारस चोदस पणुवीस णव य एक्को य णिरूवही चेव । जिणथेरअज्जपत्तेयबुद्धतित्थकरतित्थकरे ॥२॥ पाणीपडिग्गहीता पडिग्गहधारी य होंति जिणकप्पे । थेरा पडिग्गहधरा कप्पादीया उ भजियव्वा ॥३॥ बियतियचउक्कपणए णव दस एक्कारसेव बारसगं । एते अट्ट विकप्पा उवहिम्मिवि होंति जिणकप्पे ॥४॥ अहवा दुगं च पणगं उवहिस्स उ होंति दोन्निवि विकप्पा । पाणिपडिग्गहियाणं अपाउयसपाउयाणं च ॥५॥ रयहरणं मुहपोत्ती एयं दुयगं अपाउयंगाणं । रयहरणं मुहपोत्ती तिन्नि य पच्छाद इतरेसिं ॥६॥ उग्गहधारीणंपिय दुविहो उवही समासओ होति । णवविह दुवालसविहो अपाउयसमाउयाणं च ॥७॥ पत्तं पत्ताबंधो पायट्टवणंच पायकेसरिया । पडलाइं रयत्ताणं च गोच्छओ पायणिज्जोगो ॥८॥ रयहरणं मुहपोत्ती णवहा एसो अपाउयंगाणं । इयरेसिं एसेव य अतिरेगा तिन्नि पच्छागा ॥९॥ एते चेव दुवालस मत्तउ अतिरेग चोलपट्टो य । एसो य चोदसविहो उवहि खलु थेरकप्पम्मि ॥१४८०॥ अज्जाणं एसेव य चोलत्थाणम्मि णवरि कमढं तु । अतिरेग अंगलग्गा इमे उ अन्ने मुणेयव्वा ॥१॥ उग्गह णंतग पट्टो अट्टोरुग चलणिया य बोद्धव्वा । अभिंतरं वाहिनियंसणी य तह कुंचए चेव ॥२॥ उक्कच्छिय वेकच्छिय संघाडी चेव खंधकरणी य । ओहोवहिम्मि एते अज्जाणं पण्णवीसं तु ॥३॥ सत्त य पडिग्गहम्मी रयहरणं चेव होति मुहपोत्ती । एसो तु णवविकप्पो उवही पत्तेयबुद्धारं ॥४॥ एगो तित्थगराणं णिक्खममाणेण होइ उवही उ । तेण परं णिरूवहि ऊ जावजीवाए तित्थगरा ॥ल० १०४॥५॥ जिणा बारसरूवाइं. थेरा चोदसरूविणो । अज्जाणं पण्णवीसं तु, अतो उट्टं उवग्गहो ॥६॥ एसो उवहीकप्पो समासओ वन्निओ जहाकमसो । संभोगकप्पमहुणा समासतोमे णिमासेह ॥७॥ संभोगपरूवणया सिरिघर सिव (त) पाहुडे य संभुत्ते । दंसणनाणचरित्ते तवहेउं उत्तरगुणेसु ॥९३॥८॥ ओहअभिग्गहदाणग्गहणे अणुपालणा य उववाए । संवासम्मि य छट्टो संभोगविही मुणेयव्वो ॥९॥ उवही सुय भत्तपाणे, अंजलीपग्गहे इय । दावणा य निकाए य, अब्भुट्टाणेत्तियावरे

॥९४॥१४९०॥ किङ्कम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणे इय । समोसरण सण्णिसेज्जा, कहाए य पबंधणा ॥९५॥१॥ उग्गम उप्पाएसण निवेय परिकम्मणा य परिहरणा । संजोगविहिविभत्ता उवहिम्मिवि होंति छट्ठाणा ॥२॥ वायण पुच्छण पडिपुच्छ चिंत परियट्ठणा य कहणा य । संजोगविहिविभत्ता सुयटाणे होति छट्ठाणा ॥३॥ उग्गमउप्पाएसण लोयण संभुंजणा णिसिरणा य । संजोगविहिविभत्ता य भत्तदाणे य छट्ठाणा ॥४॥ वंदिय पणमिव अंजलि गुरूआलोवे अभिग्गहि णिसेज्जा । संजोगविहिविभत्ता अंजलिकम्मेवि छट्ठाणा ॥५॥ सेज्जोवहि आहारे सीसगणाणुप्पयाण सज्झाए । संजोगविहिविभत्ता दावणाएवि छट्ठाणा ॥६॥ सेज्जोवहि आहारे सीसगणाणुप्पयाण सज्झाए । संजोगविहिविभत्ता निमंतणाएवि छट्ठाणा ॥७॥ अब्भुट्ठासण अंजलि किंकर अब्भासकरणमविभत्ती । संजोगविहिविभत्ता अब्भुट्ठाणेवि छट्ठाणा ॥८॥ सुत्तायाम सिर्रो णय मुद्धाणं सुत्तवज्जियं चैव संजोगविहिविभत्ता कितिकम्मे होंति छट्ठाणा ॥९॥ आहारउवहिमत्तण अहिगरणविओसणा य सु (य) सहाए । संजोगविहिविभत्ता वेयावच्चेऽवि छट्ठाणा ॥१५००॥ वास उडु अहालदे पुहुत्तसाहारणोग्गहित्तिरिए । वुट्ठावासोसरणे छट्ठाणा होति पविभत्ता ॥१॥ परियट्ठणाऽणुओगे वागरणे परिच्छणा य आ (पुच्छ परिच्छणा) लोए । संजोगविहिविभत्ता सन्निसेज्जाए छट्ठाणा ॥२॥ वादो जप्प वितंडा पइण्णियाऽणिच्छिया कहा होति । संजोगविहिविभत्ता कहापबंधेऽवि छट्ठाणा ॥३॥ रागेणं दोसेणं अन्नाणाविरईय मिच्छते । कोमामालोआसवदारेहिं तु राइछट्ठेहिं ॥४॥ अविरयस्स बावत्तरिविहो, एसा बावत्तरी दोहिं गुणिया रागदोसेहिं चोयालं सयं अण्णाणातीहिं २१६ कोहादीहिं २८८ आसवदारेहिं ३६० राइभोयणछट्ठेहिं ४३२ । 'बारस य चउव्वीसा छत्तीसा अडयालमेव सट्ठी य । बावत्तरी उ एसो संजोगविही मुणेयव्वो ॥५॥ बारस य चउव्वीसा छत्तीसाऽडयालमेव सट्ठी य । बावत्तरी बिगुणिया चोयालसयं तु संजोगा ॥६॥ बारस य चउव्वीसा छत्तीसाऽडयाल चैव सट्ठी य । बावत्तरी छग्गुणिया चत्तारि सया उ बत्तीसा ॥७॥ जस्सेते संजोगा उवलद्धा अत्थतो य विण्णाया । सो जाणती विसोहिं उवघायं चैव संभोगे ॥८॥ जस्सेते संजोगा उवलद्धा अत्थतो य विन्नाता । णिज्जुहिउं समत्थो णिज्जूढे यावि परिहरिउं ॥९॥ सरिकप्पे सरिच्छंदे तुल्लचरित्ते विसिद्धतरए वा । आयत्ति भत्तप्पाणं सएण लाभेण वा तुस्से ॥१५१०॥ सरिकप्पे सरिच्छंदे तुल्लचरित्ते विसिद्धतरए वा । साहूहिं संथव कुज्ज णाणीहिं चरित्तगुत्तेहिं ॥१॥ ठितकप्पम्मि दसविहे ठवणाकप्पे य दुविहमण्णयरे । उत्तरगुणकप्पम्मि य जो सरिकप्पो स संभोगो ॥२॥ सत्तविहकप्प एसो समासओ वण्णिओ सविभवेणं । एत्तो दसविहकप्पं समासओ मे निसामेह ॥३॥ कप्प पकप्प विकप्पे संकप्पुवकप्प तह य अणुकप्पे । उक्कप्पे य अकप्पे तहा दुकप्पे सुकप्पे य ॥९६॥४॥ गच्छाओ निग्गयाणं जिणकप्पियमादियाण कप्पो उ । तं च समासेण अहं उल्लिंगेहामि इणमो उ ॥५॥ पिंडसेण पाणेसण उग्गह उद्धिठ्ठ भावणा चैव । बारस य भिक्खुपडिमा एवमादी भवे कप्पो ॥९७॥६॥ पिंडेसण पाणेसण पंचुवरिमया सभिग्गहेगा य । सेसासु य अग्गहणं सेज्जोग्गह उवरिमा दोसु ॥७॥ उद्धिठ्ठिती हेट्ठा जिणकप्पविही उ जो समक्खाओ । खेत्ते कालचरित्ते इच्चाइ तहेव इहइंपि ॥८॥ पुणविस भावणाओ महव्वयाणं तु होंति पंचणं । बारस अणिच्चयादी तवसुत्तादी य पंचेव ॥९॥ एयाहिं भावणाहिं भावेंती ते उ निच्चमप्पाणं । सव्वेऽवि गच्छनिग्गय वेरग्गपरायणा धीरा ॥१५२०॥ बारस भिक्खुपडिमा आदिग्गहणेण लंदिया चैव । तह सुद्धपारिहारी सव्वोऽवेसो भवे कप्पो ॥१॥ निच्छय निरास निम्मम निरहंकार परमट्ठ दढजोगी । चत्तसरीरकसायो इंदियगामा य निग्गहिया ॥९८॥२॥ जं चण्ण एवमादी सव्वणयविहाणमागमविसुद्धं कप्पोत्ति नाणदंसणचरित्तगुणमावंह जाणे ॥९९॥३॥ निच्छयणयट्ठिया उट्ठिता तु ववहारे । अहवावि णिच्छओ तू णाणादीयं भवे तितयं ॥४॥ णासंसइ इहलोयं वावि एस उ निरासो । निम्ममता तु ममत्तं ण करेती अविय देहेऽवि ॥५॥ ण करेइ अहंकारं एरिसओ अहंति उत्तमगुणोघो । णिव्वाणं परमट्ठो तस्साहणता उ दढजोगी ॥६॥ णिप्पडिकम्मसरीरो चत्तसरीरो उ होइ रायव्वो । णऽवणेतऽच्छिमलादिवि खंतिखमो उज्झियकसातो ॥७॥ सोइंदियमादीसु य विसयपयारेसु सहमादीसु । ण उवेइ रागदोसे इंदियगामा य निग्गहिया ॥८॥ सव्वणयावी दुविहा नाणे करणे य होंति बोद्धव्वा । सव्वणयाणंऽपेयं मतं तु जं (जो) सुट्ठितो चरणे ॥९॥ कप्पो णामं भण्णति जो आवहती उ नाणमादीणि । वुट्ठिं वावि करेती सव्वो सो होइ कप्पो उ ॥१५३०॥ कप्पो उ एस भणिओ

अहुणा एत्तो पकप्प वोच्छामि । उस्सारकप्पमादी जहक्कमं आणुपुव्वीए ॥१॥ उस्सारकप्प लोगाणुओग पढमाणुओग संगहणी । संभोग सिंगणाइय एवमादी पकप्पो उ ॥१००॥२॥ आयारदिट्ठिवादत्थजाणए पुरिसकारणविहण्णु । संविग्गम परित्तंते अरिहति उस्सारणं काउं ॥३॥ कारणे-अभिग्गते पडिबद्धे, संविग्गे य सलद्धिए । अवट्टिए य पडिबुज्झी, गुरूअमुई जोगकारए ॥४॥ गच्छो य अलद्धीओ ओमाणं चेव अणहियासो य । गिहिणो य मंदधम्मा सुद्धं च गवेसए उवहिं ॥५॥ एएहिं कारणेहिं उस्सारायारिहो उ बोद्धव्वो उस्सारो दिट्ठिवादे धम्मकहा गंडियनिमित्तं ॥६॥ उस्सारकप्प एसो समासओ वण्णिओ मए एवं । लोगाणुओगमित्तो वोच्छामि अहं समासेणं ॥७॥ मेहावी सीमम्मी ओहमिए कालगज्ज थेराणं । संज्झंतिएण अह सो खिंसंतेणं इमं भणिओ ॥८॥ अतिबहुतं तेऽधीतं ण य णातो तारिसो मुहुत्तो उ । जत्थ थिरो होइ सेहो निक्खंतो अहो हु वोद्धव्व (त्तं) ॥९॥ तो एव सउमच्छं भणिओ अह गंतु सो पतिट्ठाणं । आजीविसगासम्मी सिक्खति ताहे निमित्तत्थं ॥१५४०॥ अह तम्मि अहीयम्मी वडहेट्ट निविट्ट अन्नय कया (कणया का) ति । सालाहणो णरिंदो पुच्छतिमा तिण्णि पुच्छाओ ॥१॥ पसुलिंडि पढमयाए बितिय समुद्दे व केत्तियं उदयं ? ततियाए पुच्छाए मुहरा य पडिज्ज व ण वत्ति ? ॥२॥ पढमाए वामकडगं देइ तहिं सयसहस्समुल्लं तु । तियाए कुंडलं तू ततियाएवि कुंडुलं बितियं ॥३॥ आजीविता उवट्ठित गुरूदक्खिण्णं तु एय अम्हंति । तेहिं तयं तू गहितं इयरोचित कालकज्जं तु ॥४॥ णट्ठम्मि उ सुत्तम्मी अत्थम्मि अणट्ठे ताहे सो कुणइ । लोगणुजोगं च तहा पढमणुओगं च दोऽवेए ॥५॥ बहुहा निमित्त तऽहियं पढमणुओगे य होंति चरियाइं । जिणचक्किदसाराणं पुव्वभवाइं निबद्धाइं ॥६॥ ते काऊणं तो सो पाडलिपुत्ते उवट्ठितो संघं । बेइ कतं मे किंची अणुग्गहट्ठाय तं सुणह ॥७॥ तो संघेण णिसंतं सोऊण य से पडिच्छितं तं तु । तो तं पतिट्ठितं तू णगरम्मी कुसुमणामम्मि ॥८॥ एमादीणं करणं गहणं णिजजूहणा पकप्पो ऊ । संगहणीण य करणं अप्पाहाराणं तु पकप्पो ॥९॥ संभोगो संगहुवग्गहट्ठता य वच्छल्ल पीइ बहुमाणो । साहारण कुलगणसंघठवण अणतिक्रमणमेव ॥१०१॥१५५०॥ सुत्तत्थतदुभयादीहिं संगहोवग्गहो उ भत्तादी । वच्छल्ल गुरूगिलाणे एवमादीसु जहकमसो ॥१॥ एगत्य भोयणेणं पीती भवतिक्रभाणजिमित्ति । बहुमाणंपिय कुव्वति सहायगतं च तेणेव ॥२॥ केई अलद्धिमंता ण लभंति सलद्धिया चिय लभंति । जं लद्धं सामन्नं संभोगमितो तु इच्छंति ॥३॥ कुलगणसंघत्थेरा मज्जायाओ ठवेति हिंडंता । जह सकुले परिताणो (कुसलेऽथ परिणा) णत्थी उवसंपया चेव ॥४॥ कुलगणसंघट्टवणा जाओ य कताओ तहिं तु थेरेहिं । कुलवहुमज्जायाविव ताओ य णइक्कमिज्जंति ॥५॥ कज्जेसु सिंगभूतं कज्जं तू सिंगणाइयं होइ । तं चेतिसाहुंसंजइ होज्जाहि सगच्छपरगच्छे ॥६॥ तह पुण होज्जाहि कतं कोइ भणेज्जाहि संजइ जइं वा । म मज्झेस दुवक्खरओ कहंति सो पुच्छिओ आह ॥७॥ कीतो मे व पइट्ठो हाउं वा आणिओ धरेतू वा । दारे वा से जाते अहवा राजाइ व पलावी ॥८॥ अक्कमिऊणं घेत्तू दासाणि करेउ अहव लोभेउं । वत्थासणमादीहिं तु तत्थ पमादो ण कायव्वो ॥९॥ गच्छस्सरक्खणट्ठा चारित्तठिते अवस्स कायव्वं । इहरा तू मज्जाता गच्छस्स उ फेडिया होइ ॥१५६०॥ आणाएँ जिणिंदाणं अणुकंपाए य चरणजुत्ताणं । परगच्छे य सगच्छे सव्वपयत्तेण कायव्वं ॥१॥ अणवत्थवारणट्ठा उच्छूदिट्ठतओ कुसीलेऽवि लिगंअणुम्मयंते जीवट्ठितऽबुद्धधम्मो य ॥२॥ अणुसट्ठी धम्मकहापन्नविओ जइ न मुंचती पावो । ताहे अतिसत्तीए इमाइं कुज्जा उ करणाणि ॥३॥ अंतद्धाणी ओसोवणी य पासायकंप वेयालं । अभियोग थंम संकम आवेसण वेयणकरी य ॥१०२॥४॥ अंतद्धाणं काउं हरेति ओसोवणं च काऊणं । वेयालमुट्टवेउं भेसेति तगं अमुचंतं ॥५॥ अभिओग वसीकरणं विज्जा संकामणं च अन्नत्थ । थंभस्स कंपणं वा आवेसेउं व भेसेति ॥६॥ साहंम्मियवच्छल्लं कुणमारेणं तु एव कत होइ । अण्णे य गुणा उ इमे हवंति ते मे निसामेह ॥७॥ मिच्छता संमत्तं सम्मदिट्ठी चरित्तओलंभं । चरित्तट्ठिते थिरत्तं मलणा य पभावणा तित्थे ॥८॥ तम्हा साहुनिमित्तं पव्वपयत्तेण एव कायव्वं । अहुणा चेतनिमित्तं जं कायव्वं तगं वोच्छं ॥९॥ चोदेइ चेइयाणं खेत्तहिरण्णे व गामगावादी । लग्गंतस्स व जइणो तिकरणसोही कहं णु भवे ? ॥१५७०॥ भन्नइ एत्थ विभासा जो एयाइं सयं विमग्गेज्जा । तस्स ण होती सोही अह कोइ हरेज्ज एयाइं ॥१॥ तत्थ करंतं उवेहं जा सा भणिया उ तिगरणविसोही । सा य ण होइ अभत्ती य तस्स तम्हा निवारेज्जा ॥२॥ सव्वत्थामेण तहिं संघेणं होइ लग्गियव्वं तु । सचरित्तऽचरित्ताण

तु सव्वेसिं एय कज्जं तु ॥३॥ तत्थ पुण पयादि णिवो अन्नत्थ हविज्ज तत्थ उ वयंतो । लिंगत्थेहिं समयं का मज्जता भवे तहियं ? ॥४॥ भत्ते पाणे सयणासणे य सेज्जोवंहिंए सज्झाए । वायणपडिच्छणासु य सुहसीले अत्तसंहारो ॥५॥ जहियं तु सावयादी कोइ करेज्जाहि संघभत्तं तु । तहियं तु न गेणहेज्जा ण य वस उद्विड्ढसेज्जासु ॥६॥ पाणगभत्तादीसुं ण य संघाडो ण यावि ते सुत्ते । वाहिति आसणेवि य ण जयंती एत्थ उ उवेसो ॥७॥ सेज्जं वेवं उवहिं ण देंति गेणहंति वा ण संघाडं । सज्झायंपि ण गेणहे ण पडिच्छे चोयए वावि ॥८॥ मोत्तुं राउलकज्जं उवएसं वा मुएज्जऽहव एवं । अन्नत्थ उदासीणो एसो खलु भ (अ) त्तसंधारो ॥९॥ परिवारं दिंति तहिं याकुले विन्नविंति ते चेव । जदि वा होज्ज समत्थो मंतेज्जा तो सयं चेव ॥१५८०॥ जो पुण बंधवहादिस उद्ववणचरित्तंभंसरोहे वा । णिरलंबणो समत्थो ण करेइ तहिं विसंभोगो ॥१॥ कोई वहबंधादी साहूण करेज्ज अहव देवकुलं । पाडिज्ज पडिमभंगं च करेज्जा कोइ पडिणीओ ॥२॥ अहवावि निमित्तं तू अकहेमाणो तु कोइ रूंभिज्जा । णिरलंबणमगिलाणो ओरसविज्जादिस समत्थो ॥३॥ जइ णेच्छति मोदेउं तमसंभोयं करेति ता (वो) समणं । परितावणादि जं ते पावेति तं च पावइ य ॥४॥ केवइयं पुण कालं बंधादिगताण तेसि समणाणं । कायव्वं तु मइमत्ता ? भन्नइ इणमो निसामेह ॥५॥ मज्जायसंपउत्ते चिरमवि कायव्वमपरितंतेण । मज्जायविप्पहूणे सउवालंभं सतिं करणं ॥६॥ जदि अवराहे गहिओ भण्णति मोएम जदि पुणो ण करे । एरिसयमब्भुवगते मोदेउं पच्चुवालंभे ॥७॥ इंहपरलोगं चइउं कुव्वंतेतारिसाणि जे इहइं । ते पावेतेताइं परे य लो, दुहसयाइं ॥८॥ एवं उवालभेत्ता मोदेउं जइ पुणो करेमाणो । घेप्पेज्ज उदासीणं हवेज्ज ते वाहि (रि) या समणा ॥९॥ एवं तु समासेणं एस पकप्पो मए समक्खाओ । एत्तो उ समासेणं वोच्चांमि विकप्पमहुणा उ ॥१५९०॥ अतिरेगं परिकम्मण तह भंडुप्पायणा य बोद्धव्वा । एमादि विकप्पो ऊ तत्थऽइरेगे इमं होइ ॥१॥ एगेण अलेवकडं कप्पो संघाडऽलेवग पकप्पो । तिप्पभिइं तु विकप्पो मत्तगभोगो यऽणट्टाए ॥१०३॥२॥ पादेगेण अलेवं गेणहे जिणकप्पिया उ सो कप्पे । थेराण दोन्नि पादा संघाडेणं च हिंडंति ॥३॥ तत्तेगपडिग्गहए भत्तं लेवाडगंपि गेणहंति । एगत्थ दवं मत्तग दोणहंपी रित्तग पकप्पो ॥४॥ तिप्पभितिं हिंडंती णिक्कारण भत्तएसु वा गिणहे । सो होइ विकप्पो ऊ तत्थ य सोही इमा होइ ॥५॥ जदि भायणमावहती तति मासा जदि दिणा उ आणेती । तावइया चउमासा तियाए रोवणा भणिया ॥६॥ समणीण तिण्ह कप्पो चउपंचणह भणिओ पकप्पो उ । तेण पेरण विकप्पो एत्तो उवहिं तु वोच्छामि ॥७॥ तिन्नि उ भणिया कप्पो अतरंता विपइणा पकप्पविही । उप्पायगवज्जाणं तिट्ठणारोवणा भणिया ॥१०४॥८॥ गणनाय पमाणेण य उवहिपमाणं दुहा मुणेयव्वं । गणणाएँ जिणारं तू एक्को दो तिण्णि वा कप्पा ॥ल० १०५॥९॥ दो रयणी संडासो सोत्थीओ वावि होति आयामो । रूंदा दिवह्णहत्थं एय पमाणप्पमाणंतू ॥ल० १०६॥१६००॥ दो खोमिओन्निएक्को थेराणं तिण्णि होंति गणणाए । आयामायपमाणा दुहत्थ अद्धं च विच्छिन्ना ॥ल० १०७॥१॥ एसो उ भवे कप्पो पकप्पो उ गिलाणए गुरूणं वा । चउ सत्त वावि पाउण माणऽतिरित्तं च धारेज्जा ॥ल० १०८॥२॥ कारणे पकप्पो होती विकप्पो णिक्कारणे मुणेयव्वो । उप्पायगो पवित्ती सावतिरेगं धरेज्जाहिं ॥३॥ गणणाएँ पमाणेण व गच्छट्टाए उ तं पमोत्तूणं । जो अण्णो अतिरेगं धरेइ सोही उ तस्स इमा ॥४॥ चाउम्मासुक्कोसो मासिय मज्झे य पंच य जहण्णे । तिविहम्मि वि उवहिम्मि अतिरेगारावणा भणिया ॥५॥ अतिरेगउवहिदारं संखेवेणोदितं अहं इयाणिं । परिकम्मदार वोच्छं अप्परिकम्मो जिणाणुवधी ॥६॥ कारणविही पकप्पो थेराणं अविहीए विकप्पो उ । परिकम्मणा उ एसा भंडुप्पायं अतो वोच्छं ॥७॥ गाहण गहणं गेज्झं च जहासंखेणिमे तु णसव्वा । पुरिसे पडिमा उवही तिन्नि तिगा भावसुद्धाइं ॥१०५॥८॥ गाहगो गीयत्थो खलु पुरिसो णियमेण होइ णायव्वो । उद्विट्ठमादियाहिं गहणं पडिमाहिं भणितं तु ॥९॥ घेत्तव्वो उवही खलु तिण्णित्ताऽऽहारउवहिसिज्जत्ति । तिण्णिवि तिविसुद्धाइं उग्गममादहिं नियमेणं ॥१६१०॥ एगेण चेव गहणं कप्पो दोहिं भवे पकप्पो उ । तिप्पभितिं तु विकप्पो भत्ते पाणे तहा उवही ॥१॥ आदितिण उ गहणं बितियंट्टाणम्मि अब्भणुण्णातं । हंदि परिरक्खणिज्जो सुहारको (हाकरो) सव्वसाहूणं ॥१०६॥२॥ आदिति होति कप्पो तिगतिग आहारउवहिसेज्जाओ । गहणं तु होति तिविहं उग्गममादी तिगविसुद्धं ॥३॥ बितियट्टाणं पकप्पो तत्थवि तिगसुद्धमेव घेत्तव्वं । असतीय अणुण्णातं पणहाणीए असुद्धंपि ॥ल० १०९॥४॥ केण पुण कारणेणं गच्छे असुद्धंपि उग्गमादीहिं । घेप्पति ? भण्णति

सुणसू कारणमिणमो समाणेणं ॥ल० ११०॥५॥ रयणाकरोव्व जम्हा उ आगरो होइ सव्वसुक्खाणं । नाणादीय य पभवो ततो य मोक्खो य तो रक्खे ॥ल० १११॥६॥ आइत्तता महाणो कालो विसमो सपक्खओ दो (दुभिक्खमादी) सो । आदितिगभंगेणं गहणं भणितं पकप्पम्मि ॥१०७॥ ल० ११२॥७॥ तियति (छ) क्तपमाणे अणुवासो चेव कारणनिमित्तं । परिकम्मण परिहरणे उवही अतिरित्तगपमाणो ॥८॥ गच्छो सबालवुद्धो गिलाणसेहादिहिं आतिण्णो । एसो व महाणो तू तस्स तु दुलभं तिगविसुद्धं ॥९॥ कालो विसमो दुब्भिक्खमादि दोसा सपक्खओ उ इमे । पासत्थादी बहवे ओमांणंतो तओ होति ॥१६२०॥ अहव असंविग्गावी जह महुराकोट्टइल्लगा केई । मायाए उग्गमती सद्धा अविकोवि नवि जाणे ॥१॥ एएहिं कारणेहिं अलभंते आइतिगभंगगहरं तु । आदितिगमुग्गमादी भंगो तू भंसणा होतिं ॥२॥ कारणतो तिविहंपी माणंतु अतिक्रमेज्ज उ कदादि । किं पुण तिविहं माणं ? भन्नति इणमो निसामेह ॥३॥ हवति पमाणपमाणं खेत्तपमाणं च कालमाणं च । एतं तिविह पमाणं अतिक्रमो तेसिमो होति ॥४॥ अतिरेग पमाणेणं तिण्ह परे (य के) णंपि णाम गिणहेज्जा । खेत्तओ अतिक्रमो तू परतोवि दुगाउया मग्गे ॥५॥ कालपमाणातिक्रमे कुज्जा पाउरणगं अकालेऽवि । वसती कालातीतं असिवादणुवासणं एयं ॥६॥ परिकम्मणमविहीए बलियट्टइदुब्बलम्मि कुज्जाहिं । दुल्लभलंभे सीतेण अद्दिओ उन्नियं पंतो ॥७॥ अतिरित्तपमाणं वा धारिज्जइ कारणेहिं एएहिं । सो सव्वो पकप्पो तू निक्कारणओ विकप्पो उ ॥८॥ संकप्पो उ इदाणिं सो य पसत्थो य अप्पसत्थो य । एतेसिं दोणहंपी परूवणा होतिमा कमसो ॥९॥ दंसणनाणचरित्ते अणुपालण पत्थणा पसत्थो उ । इंदियविसंयकसाएसु अप्पसत्थो संकप्पे ॥१०८॥ १६३०॥ दंसणपभावगाइं सत्ताइं कहकहं अहिज्जेज्जा ? जो चिंतियं (ई) एसो संकप्पे दंसणे होति ॥१॥ नाणइयारं ण करे कहां च नाणं अहं अहिज्जेज्जा ? इति नाणे चारित्ते सुद्धचरित्तो कहां होज्जा ? ॥२॥ उत्तरउत्तरिएहिं व चारित्तगुणेहिं कह णु विहरेज्जा ? एसो तु चरित्तम्मी संकप्पो सत्थगो भणितो ॥३॥ सद्दादिइंदियत्थाण पत्थणा तह य रागगमणं तु । कोहादिकसायाण य अज्झप्पं होति अपसत्थं ॥४॥ एसो खलु संकप्पे एत्तो वोच्छामऽहं तु उवकप्पं । उवकप्पती करेति उवरेइ व होंति एगट्टा ॥५॥ भत्तेण व पाणेण व उवकरणेण व उवग्गहं कुणति । उवकप्पइ गुणधारी उवकप्पं तं वियाणाहि ॥६॥ खुहिओ पिवासिओ वा सीतभिभूतो व ण तरती पढित्तुं । तस्स करेइ उवग्गह पडंतकुडुस्स वा थूणा ॥७॥ जो उप्पाएँ समाहिं चउव्विहं नाणदंसणे चरणे । तत्तो य तवसमाहिं तस्स खमे निज्जरा होति ॥८॥ भत्तेण व पाणेणं उवकरणेणं व उग्गहितदेहो । जो कुणइ सि समाहिं तस्सवरणं हणति दाता ॥९॥ भत्तस्स व पाणस्स व उवकरणस्स व उवग्गहकरस्स । जे कुणइ अंतरायं तस्सावरणं पवहेति ॥ल० ११३॥ १६४०॥ एसुवकप्पो भणिओ एत्तो वोच्छं अहं तु अणुकप्पं । अणुसदो तू तहियं पच्छाभावे मुणेयव्वो ॥१॥ नाणचरणह्याणं पुव्वायरियाण अणुकिंति कुणइ । अणुगच्छइ गणधारी अणुकप्पं तं वियाणाहिं ॥२॥ गुणसयसहस्सकलियाण गुणुत्तरतरं व अभिलसताणं । जे खेत्तकालभावा आसज्जा जोगहाणि भवे ॥१०९॥ ३॥ गुणसयकलिओ जम्मो मोक्खो य गुणुत्तरो मुणेयव्वो । सामायारीहाणी तु जोगहाणी मुणेयव्वा ॥४॥ केत्ताणऽसती अब्धाण उच्चखित्तम्मि काल दुब्भिक्खे । भावे गेलण्णादिसु सुद्धाभावे तु जदसुद्धं ॥५॥ गेणहेज्जाऽहारादी नाणादीसू व उज्जमण कुज्जा । अणसणमादी व तवंअकरेमाणस्स साहुस्स ॥६॥ णेगंतणिज्जरा से जह भणिया सासणे जिणवरणं । जोगनियत्तमईणं सुहसीलाणं तवो छेदो ॥७॥ सुहसीलदट्टसीला तेसिं अप्फासुं गेणहमाणं । जं आवज्जे तहियं तवं च छेदं च तं पावे ॥८॥ उक्कप्पो य इयाणिं उद्धं कप्पोऽवि होइ उक्कप्पो । अहवावि छिन्नकप्पो उक्कप्पो अहवण अवेतो ॥९॥ उग्गमउप्पायणएसणासु निरवेक्खो कंदमूलफले । गिहिवेयावडियासु य उक्कप्पं तं वियाणाहि ॥१६५०॥ णामणि थंभणि लेसणि वेयाली चेव अब्धवेयालि आदाणपाडणेसु य अण्णेसु य एवमादीसु ॥११०॥ १॥ तसएगिंदियमुच्छणसंसेइममच्छमरणमभिओगे । रोद्दाहव्वण तह बंभदंड थंभे य अगणिस्स ॥१११॥ २॥ णामणि रूक्खफलाणं पडिमाणं देउलाण थूभादी । थंभणि पदमवि ण चलति लेसणि लेसेति अंगाइं ॥३॥ विद्दिट्ठाण य आणणि अहव णिलुक्कावणम्मि वेयाली । उट्टविरुण णिवाओ तक्खण एसऽब्धवेयाली ॥४॥ गब्भाणं आदाणं करेति तह साडणं च गब्भाणं । अभिजोग वसीकरणे विज्जाजोगादिहिं कुणइ ॥५॥ विच्छिगमच्छिगभमरे मंडुक्के मच्छए तथा पक्खी । संमुच्छावेमादी जो जोणीपाहुडेणं च ॥६॥ पसुउद्ववियं जागं आहव्वण मंत रोदकम्मो य । केहादि बंभदंडो थंभणि अगणिस्स मंतेणं ॥७॥ एमादि अकरणिज्जं

निकारणे जो करेइ तू भिक्खू । सव्वो सो उक्कप्पो एत्तो अकप्पं तु वोच्छामि ॥८॥ निक्खिवणिरणुक्कंपो पुप्फफलाणं च साडणं कुणइ । जं चऽन्न एवमादी सव्वं तं जाणसु अकप्पं ॥११२॥९॥ जो उ किवं ण करेई दुक्खत्तेसुं तु सव्वसत्तेसु । निरवेक्को रीयादिसु पवत्तई निक्खिवो सो उ ॥१६६०॥ सहसा य पमाएण व परितावणमादि बिंदियाईणं । काऊण गाणुतप्पइ णिरणुक्कंपो हवइ एसो ॥ल० ११४॥१॥ सत्तट्टमठाणेसू सट्टाणासेवणाएँ सट्टाणं । गच्छागाढम्मि उ कारणम्मि बितियं भवे ठाणं ॥२॥ सत्तट्टमठाणाइं उक्कप्पो चेव तह अकप्पो य । ते निक्कारणसे पावइ सट्टाणपच्छित्तं ॥३॥ पत्तम्मि कारणे पुण रायद्वट्टादियम्मि आगाढे । जयणाएँ करेमाणो होति पकप्पो ठि (बि) तिट्टाणं ॥४॥ दंसणनाणचरित्त तवविणए निच्चकाल पासत्थो । णिच्चं च णिंदिओ पवयणम्मि तं जाणसु दुकप्पं ॥५॥ दुकप्पविहारीणं एंगंतासायणा य बंधो य । आसायणाय बंधेण चेव दीहो तु संसारो ॥६॥ दंसणनाणचरित्ते तवविणए णिच्चकालमुज्जुत्तो । निच्चं पसंसिओ पवयणम्मि तं जाणसु सुकप्पं ॥७॥ सुक्कप्पविहारीणं एंगंताराहणा य मोक्खो य । आराहणाइ मोक्खेण चेव छिन्ने य संसारो ॥८॥ वुत्तो दसविहकप्पो अहुणा वीसतिविहं तु वोच्छामि । तस्स उ दारा इणमो संगहिया तीहिं गाहाहिं ॥९॥ कप्पेसु णामकप्पो ठवणाकप्पो य । खित्ते काले कप्पो दंसणकप्पो य सुयकप्पो ११३॥१६७०॥ अज्झयण चरित्तम्मि य कप्पो उवही तहेव संभोगो । आलोयण उवसंपद तहेव उद्देसऽणुण्णाए ॥११४॥१॥ अब्बाणम्मि य कप्पो अणुवासे तह य होइ ठितकप्पो । अट्टितकप्पो य तथा जिणथेरऽणुवालणाकप्पो ॥११५॥२॥ जो चेव दवियकप्पो छव्विह कप्पंमि होति वक्खाओ । सो चेव निरवसेसो जो य विसेसोऽत्थं तं वोच्छं ॥३॥ एस पुण तिविहकप्पो अहव इमं भावकप्पमज्झयणं । सव्वं वा सुयनाणं दायव्वं केरिसे होइ ? ॥४॥ सुपरिच्छियगुणदोसे सेलघणादीहिं तू परिच्छाहिं । सुविसोहियमिच्छमले उंडितभोम्मादिणाएहिं ॥५॥ सव्वंपिय सुयनाणं सुत्तत्थो सट्टिए ण उ असट्टी । अह पुण को परमत्थो विसेसओ पवयणरहस्सं ? ॥६॥ पवयणरहस्समेयणि चेव भन्नंति छेदसुत्ताणि । ताणि ण दायव्वाणिं भन्नंति सुत्तम्मि को दोसो ? ॥७॥ अप्पंतिय तं बहुगं अरहस्समपारधारए पुरिसे । दुग्गतगमाहणेविव जह वइरगहीरगादीया ॥८॥ जह फेल्लमाहणेण रत्थाए वइरहीरतो लद्धो । सो अण्णस्स दरिसिओ तेणवि अण्णस्स सो सिट्ठो ॥९॥ एवं परंपरेणं रत्तो कन्नं गओ तु सो ताहे । ताहे दंडिओ रत्ता हडो य सो वइरहीरो से ॥१६८०॥ एवं अपरिणयस्सा किंची अववादकारणं सिट्ठं । सो कहयति अत्तेसिं परंपरेणं चरणणासो ॥१॥ तम्हा परिच्छिऊणं देयं विहिसुत्तबद्धपेढस्स । परिणामगस्स जइणो ण उ देयं अपरिणामस्स ॥२॥ दव्वियकप्पो समभिगओ ण भणिय जं हेट्टु तं भणामित्ति । सो भन्नती विसेसो इणमो वोच्छं समासेणं ॥३॥ दव्वं तु गेण्हियव्वं सुद्धं गविसिय गवेसणा दुविहा । अविहीय विहीए या अविहीय इमं मुणेयव्वं ॥४॥ दव्वाणि जाणि काणिवि गहणं लोए उवेंति साहूणं । तेसिं तु संभवं मग्गमाणे ण उ साहते अत्थं ॥५॥ अविहीय दोस पिंडुवहिसेज्जसज्झायनिक्खमपवेसे । णवकगहदुयचउक्के एते सव्वे ण पावेंति ॥११६॥६॥ सालीतुंभीमादी आहारे फलिंहमादि उवहिम्मि । रूक्खा पुण सेज्जट्टा एमाधिगमो हु साहूणं ॥७॥ एयाइं पुच्छिऊणं कत्थ पइण्णाणि ? तहिं तहिं गच्छे । अविहिगवेसण एसा जह भणिया पिंडजुत्तीए ॥८॥ आहारोवहिसेज्जाण नाणदव्वेहिं होइ निप्फत्ती । वेसणमिरिएपिप्पलिअल्लगघयतेल्लगुलमादी ॥९॥ हिमवंते पिप्पलीओ मलए मरिचाण होइ निप्फत्ती । हिंगुस्स रमढविसए जीरगमादी य जे जत्थ ॥१६९०॥ मा अम्हं अट्टाए गावो कीता हढा व दूढा वा । फलमाद मा रूक्खो व रोवितो अम्ह अट्टाए ॥१॥ एमादि विमग्गंतो पभवं नाणादियाण परिहाणी । तह वत्थपायसेज्जाण मरेति सो अंतरा चेव ॥२॥ एवं सो हिंडंतो भत्तं पाणं च ठावमुवहिं च । कह उग्गमेउ कह वा सज्झायं कुणउ हिंडंतो ? ॥३॥ जो निक्खमणपवेसे कालो भणिओ उ वासउडुबद्धो । दुचउक्कं उडुबद्धे विहारो हेमंतगिम्हासु ॥ल० ११५॥४॥ णवमो वासावासे एसो कप्पो जिणेहिं पन्नत्तो । एयस्स संखमाणं वोच्छामि अहं समासेणं ॥ल० ११६॥५॥ दोन्नि सया चत्ताला उडुबद्धे एत्तिओ विहारो उ । वासासू पण्णासा पणगं हसति एगं ॥६॥ पुरपच्छिममज्झाणं सव्वेसिं एस कालवोच्छेओ । णिच्चं हिंडंतेणं विराहितो होति सो नियमा ॥७॥ तम्हा खलु उप्पत्ती न एसियव्वा उ तेसि दव्वाणं । जस्सऽट्टा निप्फन्नं तं गंतुं एसए मइमं ॥८॥ अइबहुय दुल्लभं वायव्वा णाउं दव्वकुलदेसभावे य । पुच्छति सुदमसुद्धं ताहे गहणं अगहणं वा ॥९॥ अहवा पुट्ठो भणेज्जा

समणादिकयं व अहव निक्खित्तं । पक्खित्तं वावि भवे तत्थ उ दारा इमे होंति ॥१७००॥ समणे समणी सावय साविगसंबंधि इड्ढि मामाए । राया तेणे पक्खेवे या निक्खेवयं कुज्जा ॥१॥ दमए दुभगे भट्टे, समणे छन्ने य तेणए । ण य णाम ण वत्तव्वं, दुट्ठे रूढ्ठ जहा वयणं ॥२॥ एतेसिं दाराणं विभास भणिया जहा य कप्पम्मि । स च्चेव निरवसेसा णायव्वा सव्वदव्वेसु ॥३॥ जं पुण जत्थाइण्णं दव्वे खित्ते य होज्ज काले य । तहियं का पुच्छा ऊ जह उज्जेणीएँ मंडेसु ? ॥४॥ एमेव माहमासे किसराए संखडीएँ का पुच्छा ? । विच्चिन्ने व कुलम्मी बहुए दव्वम्मि का पुच्छा ? ॥५॥ तम्हा उ गहणकाले मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य । सोहेज्जा दव्वस्स उ ण मूलओ तस्स उप्पत्ती ॥६॥ किच्चे पामिच्चे छिज्जए य निप्फत्तिओ य निप्फण्णे । कज्जं निप्फत्तिमयं समाणिते होति निप्फन्नं ॥७॥ कंडितकीतादीया तंदुलमादी तु होज्ज समणट्ठा । निप्फत्ती सा उ भवे आयट्ठा फासु निप्फण्णं ॥८॥ तं होइ कप्पणिज्जं जं पुण समणट्ठ होज्ज निप्फण्णं । तं तु ण प्पति एत्थं च चोदए चोदओ इणमो ॥९॥ निप्फत्तिओ य निप्फण्णओ य गहणं तु होज्ज समणस्स । निप्फत्तिओ असुद्धे कहण्णु निप्फण्णते सोही ? ॥१७१०॥ एवं गवेसियव्वे किं एगट्ठाणगं परिच्चत्तं ? । भण्णति अफासुदव्वे ण चेव गहणं तु साहूणं ॥१॥ तो तेणं साहूणं किं कज्जं होइती विगप्पे (तू गविट्ठे) णं । अण्णंपिय एगकुले ण हु आगरो सव्वदव्व्वाणं ॥२॥ तिकडुयमादीयाणं सव्वदव्व्वाण संभवेगकुले । ताणि य गवेसमाणे हाणी सच्चेव नाणादी ॥३॥ तम्हऽप्पप्पं परिहर अप्पप्पविवज्जओ विवज्जति हु । अप्पं साहेंतो विवज्जति ण तं च साहेति ॥४॥ निप्फत्ती समणट्ठा समणट्ठा जं च होति निप्फण्णं । गहियं होज्ज जयंतेण तत्थ सोही कहं होइ ? ॥५॥ सुयणाणपमाणेण ऊ उवउत्तो उज्जुयं गवेसंतो । सुद्धो जइ वावण्णो खमओ इव सो असढभावो ॥६॥ जो पुण मुक्कधुराओ निरूज्जमो जइवि सो उ णावण्णो । तहविय आवण्णो च्विय आहाकम्मं परिणओव्व ॥७॥ एयस्स साहणट्ठं अहवा अन्नपि भन्नए एत्थ । कारगसुत्तं इणमो तमहं वोच्छं समासेणं ॥८॥ अंगम्मिवि बितिए ततियगम्मि जे अत्थ कुसल ! जिणदिट्ठा । एतेसु जुत्तजोगी विहरंतो अहाउयं वु (जु) ज्झे ॥१७११॥ अंगगहणा पढमं आयारो तस्स बितियसुयखंधे । तस्सवि बीयज्झयणे उद्देसे तस्स ततियम्मि ॥१७२०॥ जत्थेयं सुत्तंखलु से य अवस्सं ण होज्ज सुलभो उ अहवावि तईएत्ती अज्झयणम्मी तइज्जम्मि ॥१॥ तस्सवि ततिउद्देसे आदीसुत्तम्मि जं समक्खायं । जदि संकमो असुद्धो ताहे जयणाएँ जुत्तो उ ॥२॥ देसुणंपि हु कोंडिं अच्छंतो सो विसुज्झती णियमा । तम्हा विसुद्धभावो सुज्झति नियमा जिणमयम्मि ॥३॥ बाहिरकरणे जुत्तो उवओगमहिट्ठिओ सुतधराणं । जं दोस समावण्णोवि णाम जिणवयणओ सुद्धो ॥४॥ दव्वेण य भावेण य सुद्धमसुद्धे य होइ चउभंगो । तइओ दोसु विसुद्धो चउत्थओ उभयह असुद्धो ॥५॥ बितिओ भावविसुद्धो दव्वविसुद्धो य पढमओ होइ । अहंवावि दोसकरणं दव्वे भावे य दुविहं तु ॥६॥ भावविसुद्धाराह (हार) को दव्वओ सुद्धो व होतऽसुद्धो य । जे जिणदिट्ठा दोसा रागादी तेहिं ण उ लिप्पे ॥७॥ एतेसामण्णतरं कीयादी अणुवउत्तो जो गिण्हे । तट्ठाणगावराहे संवड्ढियमोऽवराहाणं ॥८॥ आवण्णे सट्ठाणं दिज्जइ अह पुण बहुं तु आवण्णे । तहियं किं दायव्वं ? भण्णइ इणमो सुणह वोच्छं ॥९॥ तहियं किं दायव्वं ? तवो व छेदो तहेव मूलं वा । कत्थेयं भणियंती ? भण्णति तु णिसीहणामम्मि ॥१७३०॥ वीसइमे उद्देसे मास चउम्मास तह य छम्मासे । उग्घातमणुग्घायं भणियं सव्वं जहाकमसो ॥१॥ एसो उ दवियकप्पो जहक्कमं वण्णिओ समासेणं । एत्तो य खेत्तकप्पं वोच्छामि गुरूवएसेणं ॥२॥ आदी छक्कनियत्ती उ वण्णिया जम्मि जम्मि खेत्तम्मि । एतेसिं सन्निकासे सालंबो मुणी वसे खेत्ते ॥१७४१॥ ३॥ छव्विहकप्पो आदी तह जारिसगा णिसेविया खेत्ता । अक्खेमअदिवमादी ण कप्पती तारिसे वासो ॥४॥ खेमादि अलब्भंतो पडिकुट्ठेहिंपि वसति जयणाए । दुयगादी संजोगा वक्खाणं सन्निकासस्स ॥५॥ अक्खेमे असिवम्मि य असिवं वज्जे वसिज्ज अक्खेमे । तहियं उवहिविणासो असिवे पुण जीवणासो उ ॥६॥ एवं ओमादीसुं संजोगा तिगचउक्कगादीया । वसियव्वं जेसु जहा तमहं वोच्छं समासेणं ॥७॥ कडजोगि सन्निकासे बहुतरगं जत्थुवग्गहं जाणे । थोवतरियं च हाणिं तत्थऽन्नयरे दुविहकाले ॥८॥ एतेसामन्नयरे आलंबणविरहिओ वसे खेत्ते । कालहुयावराहे संवड्ढियमोऽवराहाणं ॥९॥ संवड्ढियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा । आयारपकप्पे जं पमाण णेमाण चरिमम्मि ॥१७४०॥ एसो उ खेत्तकप्पो अहुणा वोच्छामि कालकप्पं तु । जावातुतं तु झीणं अणुपाले ताव सामन्नं ॥१॥ गीयसहाओ

विहरे संविग्गेहिं व जयणजुत्तो उ । असतीवि मग्गमाणे खेत्ते काले इमं माणं ॥२॥ पंच व छ सत्त सत्ते अतिरेगं वावि जोयणाणं तु । गीयत्थपादमूलं परिमग्गिज्जा अपरितंतो ॥ल० ११७॥३॥ एक्कं व दो व तिण्णि व उक्कोसं बारसेव वासाइं । गीयत्थपादमूलं परिमग्गिज्जा अपरितंतो ॥ल० ११८॥४॥ पंच व छ सत्त सत्ते अतिरेगं वावि जोयणाणं तु । संविग्गपादमूलं परिमग्गिज्जा अपरितंतो ॥५॥ एक्कं व दो व तिण्णि व उक्कोसं बारसेव वासाइं । संविग्गपादमूलं परिमग्गिज्जा अपरितंतो ॥६॥ संविग्गो गीयत्थो भंगचउक्के उ पढममुवसंपा । असतीइ ततिय बितिए चउत्थगं णो उ उवसंपे ॥७॥ उक्कमओ खलु लहुगा चतुरो लहुगा चउत्थभंगम्मि । जस्ससड्ढा उवसंपद तं नत्थि चउत्थभंगम्मि ॥८॥ एतेसिं तु अलंभे एगो थामावहारमकरंतो । विहरेज्ज गुणसमिद्धो अणिदाणो आगमसहातो ॥९॥ कालम्मि संकिलिद्धे छक्कायदयावरोवि संविग्गो । जयजोगीण अलंभे पणगडण्णतरेण संवासो ॥१७५०॥ पणगडण्णतरं पासत्थमादिभंगे चउत्थए जयणा । जत्थ वसंती ते ऊ ठाति तहिं वीसु वसहीए ॥१॥ तेसि णिवेदेऊणं अह तत्थ ण होज्ज अन्नवसही उ । ण वहेज्ज वा उदंतं वसेज्ज तो एक्कवसहीए ॥२॥ अपरीभोगोगासे तत्थ ठितो तू पुणोविय जएज्जा । आहारमादिएहिं इमेण विहिणा जहाकमसो ॥३॥ आहार उवहिम्मि य गेलण्णागाढकारणे वावि । थामावहारविजढो असती जुत्तो ततो गहणं ॥४॥ आहारउवहिमादी उप्पादे अप्पणा विसुद्धं तु । असती सतलाभस्सा जो तेसिं साहुपक्खीओ ॥५॥ सो उ कुलाइं पुच्छिज्जते उ दाएति वावि से तेसिं । तहवी अलभंतो तू जयती पणहाणि जा लहुगा ॥६॥ संविग्गपक्खसहितो ताहे उप्पादएज्ज सुद्धं तु । असती पणहाणीए जइत्तु अप्पे पडिग्गहणं ॥७॥ तह असती तब्भायणमाणीयं गिण्हती तहिं चेव । नियगेऽवि पडिग्गहणे गेण्हति पासत्थपाया ऊ ॥८॥ उवहिं पुराणगहितं अप्परिभुत्तं तु गिण्हती तेसिं । असती तएयंरंपिय जदि य गिलाणो भवे तत्थ ॥९॥ तत्थवि जइज्ज एवं असती सव्वंपि से करेज्जितरे । अहवा तेवि गिलाणा हवेज्ज ताहे करे सोऽवि ॥१७६०॥ एतत्थं अच्छिज्जति गच्छे अण्णोण्णजं तु साहिज्जं । कीरति ण पमाओ खलु तम्हा गेलण्णे कायव्वो ॥१॥ दीहो व मडहतो वा कम्मोदयओ हवेज्ज आतंको । मडहो अदिग्घरोगो तव्विवरीओ भवे इतरो ॥२॥ कालचउक्कं वा खलु कायव्वं होइ अप्पमत्तेणं । उडुबद्धे वासासु अ दिय राउ चउक्कमेतं तु ॥३॥ जिणवयणभासियम्मी निज्जर गेलण्णकारणे विउला । आतंकपउरताए कतपडिकइया जहन्नेणं ॥४॥ जह भमरमहुयरिगणा णिवयंती कुसुमियम्मि वणसंडे । इय होइ निवइयव्वं गेलण्णे कइयवजढेणं ॥ल० १२९॥५॥ सयमेव दिट्ठपाढी करंति पुच्छंतंऽजाणगा वेज्जं । विज्जाण अट्ठगं पुण णायव्वमिणं समासेणं ॥६॥ संविग्गमसंविग्गे दिट्ठत्थे लिंणिं सावए सण्णी । अस्सण्णि सण्णि इतरे परतित्थिय कुसल तेइच्छं ॥७॥ पइदिणमलब्भमाणे वत्थु ठवियव्वगं भवे किंचि । तत्थ उ भणेज्ज कोई सुक्कं तु ठवे दवे दोसा ॥८॥ संसत्तंपि य सुक्खं तू, अणिट्ठं च सुसाहगं । सुसारत्थं तगं होइ, इतरे दोसा बहू इमे ॥९॥ निद्धे दवे (निद्धोदए) पणीए अपमज्जण पाण तक्कणाऽऽयरणा । एए दोसा जम्हा तम्हा उ दवं न ठाविज्जा ॥१७७०॥ भण्णइ जेण कज्जं तं ठावेज्जा तहिं तु जयणाए । आतंकविवज्जासे चउरो लहुगा य गुरूगा य ॥१॥ जं सेवियं तु किंची गेलन्ने तं तु जो उ पउणोऽवि । आसेवते उ साहू रसगिद्धो सेलओ चेव ॥२॥ तंबोलपत्तनाएण मा हु सेसावि तू विणासिज्जा । निज्जूहंती तं तू मा अण्णोऽवी तथा कुज्जा ॥३॥ कालक्कप्पाहिगारे पत्थिए होतिमोऽवि तरस्सरिसो । कालविकप्पऽत्तोऽवी असिवादीओ मुणेयव्वो ॥४॥ असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे पवादिदुट्ठे वा । आगो अन्नलिंणे कालक्खेवो व गहणं च ॥११९॥५॥ असिवे जति जतिपंता लिंगविवेगेण तक्खणं गच्छे । सव्वत्थ वावि असिवे कालक्खेवो विवेगेणं ॥६॥ ओमेऽवेवं कुज्जा पवादिदुट्ठेण बुद्धिणो णातं । तत्थऽविय अण्णलिंणं गिहिलिंणं वावि भासेज्जा ॥७॥ एयं चिय आगाढं अहवा देहस्स जा उ वावत्ती । णिव्विसयाणत्तीण व भत्तस्स णिसेहणा चेव ॥८॥ एतेसामन्नतरं अणगाढि लिंणि (ढालंब) णो ण सेवेज्जा । तट्ठणतावराहे संवड्ढियमोऽवराहाणं ॥९॥ संवड्ढितावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं च । आयारपकप्पे जं पमाण णिम्माण चरिमम्मि ॥१७८०॥ एसो उ कालकप्पो एत्तो वोच्छामि दंसणे कप्पं । सदहण लक्खणणं तू जिणोवइट्ठेसु भावेसु ॥१॥ उवरयछक्कायस्सवि आयरियपरंपरागते अत्थे । आगाढकारणेसुं सदहसु णिसेवणं तत्थ ॥२॥ छक्काए सदहियं इणमन्न पुणोवि सदहेयव्वं । आगाढमणागाढे आयरियव्वं तु जं तत्थ ॥३॥ दव्वे खेत्ते काले भावे पुरिसे

तिगिच्छि असहाए । एएहिं कारणेहिं सत्तविहं होइ आगाढं ॥ल० १२०॥४॥ एगादीया वुद्धी एगुत्तरिया य होइ दव्वाणं । ओमत्थगपरिहाणी दव्वागाढं वियाणाहिं ॥ल० १२१॥५॥ जंपंति पुणो विज्जा सच्चित्तं दुल्लभं व दव्वं वा । अप्पडिहणंतो अच्छइ उद्दिसिउं जाव सो ठाति ॥६॥ जाहे उदिद्वहाणी ताहे ओमत्थहाणिए भणति । अम्हे करेमो जोग्गं अलंभे एयस्स किं कुणिमो ? ॥७॥ एवं तु हावयंता खेत्तं कालं व भावमासज्ज । ता जूहंती जाव उ लंभे जेसिं तु दव्वाणं ॥८॥ अह पुण भणेज्ज एवं अवससमेतेहिं कज्ज दव्वेहिं । एतं दव्वागाढं तहिं जए पणगहाणीए ॥९॥ खेत्तागाढं इणमो असती खेत्ताण मासजोग्गाणं । असिवं वा अन्नत्था णदीय वा होज्ज रूद्धा उ ॥ल० १२२॥१७९०॥ आयरियादिअगारग अहवा अन्नत्थ सावया होज्ज । अंतर जहिं च गम्मइ वाला तह तेणखुभियं वा ॥१॥ एएहिं कारणेहिं खेत्तागाढम्मि एरिसे पत्ते । अच्छंति असढभावा एगक्खेत्तेऽवि जयणाए ॥ल० १२३॥२॥ कालस्स वावि असई वासावासे वियारणा नत्थि । एएहिं कारणेहिं कालागाढं वियाणाहि ॥ल० १२४॥३॥ वासाजोग्गं खेत्तं पडिलेहेउं तु कालो ण पहुत्तो । वच्चंताण व अंतर वासं तू निवडियं पायं ॥४॥ डहरं वऽतरखेत्तं ताहे तं चेव पुव्वखेत्तं तु । गंतुं वसती वासं समतीते वीतदसरातं ॥५॥ अतिउक्कडं व दुक्खं अप्पा वा वेदणा झवे आउं । एएहिं कारणेहिं भावागाढं वियाणाहिं ॥१२०॥६॥ अचुक्कड सुलादी अहिडक्काई उ वेदणा अप्पा । तत्थऽग्गितावणादी देहच्छेदो व गाढादी ॥ल० १२५॥७॥ जम्मि विणट्टे गच्छस्स विणासो तह य णाणचरणणं । एएहिं कारणेहिं पुरिसागाढं वियाणाहि ॥ल० १२६॥८॥ तस्स उ सुद्धालंभे जावज्जीवं तु (वि) होतऽसुद्धेणं । कायव्वं तू नियमा पुरिसागाढह भवे एतं ॥ल० १२७॥९॥ जेण कुलं आयत्तं तं पुरिसं आरयेण रक्खेज्जा । ण हु तुंबम्मि विणट्टे अरंया साहारगा होंति ॥१८००॥ संजोगदिद्वपाढी फासुगउदेसणासु जो कुसलो । एयारिसस्स असती णायव्व तिगिच्छमागाढं ॥ल० १२८॥१॥ मज्जणतूलिविभासा असणे पाउरणए य पाणे य । केवडियाण पदाणे अण्णहचित्तो गिलाणो वा ॥२॥ होज्ज व सहायरहिओ अब्वत्ता वावि अहव असमत्था । एय सहायागाढं तम्हा उ मुणी ण विहरिज्जा ॥ल० १२९॥३॥ जावंति पवयणम्मी पडिसेवा मूलउत्तरगुणोसु । ता सत्तसु सुद्धेसु सुद्धमसुद्धा यऽसुद्धेसु ॥ल० १३०॥४॥ आगाढमणागाढे एवं जं जत्थ होइ करणिज्जं । तं तह सद्दहमाणे दंसणकप्पो हवइ एसो ॥५॥ एसो दंसणकप्पो अहुणा सुतकप्पमो उ वोच्छामि । जे तत्थ होंति विहयो अहिज्जते जेण वा विहिणा ॥६॥ दुविहम्मि आगमम्मी सुत्ते अत्थे य जे जहिं भावा । सुत्तमसुत्तकडाणं पवित्थरं ताण अत्थेणं ॥७॥ वित्थारो णाम सुत्तम्मि, गहिए अत्थो ऊ दिज्जती । सुत्ते अहिज्जियव्वे तु, मज्जादा ऊ इमा भवे ॥८॥ पडिलेहण काऊणं सज्झायं पट्टवेउवट्टादी । आयरियादिणिसेज्जं करेइ पच्छा य सज्झायं ॥९॥ पोरिसिं सा तं झायं (काउं) चरिमाए पढिय पत्त पडिलेहे । ताहे य अत्थपोरुसि इमिणा विहिणा करंती ऊ ॥१८१०॥ काउस्सग्गे वक्खेवणाऊ विकहाविसुत्तिया पयतो (त्ता) । अब्भट्टाणे वा कालणाय अक्खेव साहरणा ॥१॥ अण्णाविय सुयकप्पो सोयव्वं मंडलीय राइणिए । अणुओगधम्मयाए किइकम्मं होइ कायव्वं ॥२॥ वक्खाओ सुतकप्पो एत्तो वोच्छामि अज्झयणकप्पं । दायव्व जेण विहिणा जग्गुणजुत्तस्स वा तं तु ॥३॥ जोए परियाए अणरिहे य अरहे य विणयपडिवण्णे । सुत्तत्थतदुभएंसुं जे अज्झयणेसु अणुभागा ॥१२१॥४॥ जस्सागाढो जोगो तं आगाढेण चेव दायव्वं । अणगाढे अणगां एत्तो वोच्छामि परियागं ॥५॥ जंसंखपरीमाणं भणियं सुत्तम्मि तिवरिसादीयं । तं तेणं माणेणं उद्दिसियव्वं भवे सुत्तं ॥६॥ खुड्डियविमाणपविभत्तिमादि दीहेविय तु (चित्त) परियाए । णवि दिज्जती अणरिहे अणरिहे ते तू इमे होंति ॥७॥ तित्तिणिए चलचित्ते गाणंगणिए य दुब्बलचरित्ते । आयरियपारिभासी वामावट्टे य पिसुणे य ॥८॥ आदीअदिद्वभावे अकडसमायारिए तरूणधम्मो । गव्वि (च्छि) य पइण्ण गेणहइ छेदसुए वज्जए अत्थं ॥९॥ डहरो अकुलीणो च्वि (त्ति) य दुम्मेहो दमग मंदबुद्धित्ति । अवियऽप्पलाभलद्धी सीसो परिभवइ आयरिए ॥१८२०॥ सोऽवि य सीसो दुविहो पव्वावियओ य सिक्खिओ चेव । सो सिक्खिओऽवि तिविहो सुत्ते अत्थे तदुभए य ॥१॥ एतेसिं अणरिहाणं जे पडिवक्खा उ होंति सव्वेसिं । पणिणमगा य जे तू ते अरिहा होंति णायव्वा ॥२॥ एतारिसे विणीए सुत्ते अत्थे य जत्तिया भेदा । अज्झयणुद्देसेसु य ते सव्वे असेसिए दिज्जा ॥३॥ एसऽज्झयणे कप्पो एत्तो वोच्छं चरित्तकप्पं तु । जे तु विहाण चरित्ते वतेसु गुरूलाघवं चेव ॥४॥ पंचविहम्मि चरित्तम्मि वणिण्या जे जहिं अणूभावा । एसो

चरित्तकप्पो जहक्कम्मं होइ विण्णेओ ॥५॥ सामाइयादि पंचह अणुभागा तेसि जत्तिया भेदा । वयपंचगाम्मि कतरं भारियरं लहुतरं किं वा ? ॥६॥ सव्वगुरूगी यऽहिंसा तीसे सारक्खणट्ट सेसाणि । बंभव्वतं च तत्तो ततो अदत्तं मुसं तत्तो ॥ल० १३१॥७॥ सव्वलहुओ परिग्गहो सक्को वत्थादिरागनिग्गहणं । लोगे पुण गुरूगतरो सव्वेसि भवे मुसावादो ॥ल० १३२॥८॥ काऊणवि संवरणं मुसवज्जाणं तु सव्वभंगेऽवि । ण भवति पइण्णलोवो तेण मुसं भारितं लोए ॥९॥ जह तेणगा उ केती अचयंता मुसितु भिच्छुगविहारं । णियडीय बेति धम्मं सुणेमु अह भिच्छुगे ते य ॥१८३०॥ सोउं मिच्छुवतारा विणयं काऊण भिच्छुए आह । अज्जप्पभिई अम्मं बुद्धो सत्था वते देह ॥१॥ सुमवज्जा चाएमो धारेमो गेण्हिउं वते तेणा । वीसत्थभिच्छुगाणं मुसिउ विहार समाढत्ता ॥२॥ भिच्छू लवंति तेणे घेतूं सिक्खावयाणि मा अज्जो ! भंजह वदंति तेणा ण हु पच्चक्खाय मुस अम्हे ॥३॥ गुरूलाघववक्खाणं एवं तु सोहिकारणा भिहितं । पत्तम्मि कारणम्मि उ लहुयतरं पुव्व सेविज्जा ॥ल० १३३॥४॥ काणि पुण कारणाणिं जेसु उ पत्तेसु जयणपडिसेवा ? । भन्नइ ताणि इमाइं कित्तेऽहं भे समासेणं ॥५॥ गच्छाणुकंपयाए आयरिए गिलाण आवत्तीए य । पडिसेवा खलु भणिया एते खलु कारणा ते उ ॥६॥ बोहियतेणादीसुं गच्छस्सट्ठा णि (द्धाण) सेवणा होइ । आयरियाण व अट्ठा विभास वित्थारओ एत्थं ॥७॥ णाउं तुंबविणासं अरगा साहारगा ण एवं तु । आयरियस्स विणासे गच्छविणासो धुयं एवं ॥८॥ आगाढे गेलण्णे कंदाति विभास आवती चउहा । दव्वावति खित्तावइ काले तह भावओ चेव ॥९॥ एएहिं कारणेहिं अप्पत्तेहिं तु जो उ सेविज्जा । सुहसीलयाए जो (सो) उ आवज्जति णविय सुज्झति हु ॥१८४०॥ जो पुण पत्ते कारणे जयणा आसेवणं करेज्जाहिं । तस्स चरित्तविसुद्धी जह भणति जिणो हि तं इणमो ॥१॥ गच्छाणुकंपयाए आयरियगिलाणआवदि विदिण्णे । जत्थेव य पहिसेहो सचरित्तासेवणा तत्था ॥२॥ पुरिमस्स पच्छिमस्स य मज्झिमगाणं तु जिणवरिंदाणं । आसेवणा य सचरित्तया य अत्थेण अणुगम्मे ॥३॥ वयभंगंपि करंतो जह सचरिती कहं तु अत्थेणं । अणुगंतव्वं एयं ? भन्नइ आगाढकारणओ ॥४॥ जे केअवराहपदा किण्हा सुक्का भवे पवयणम्मि । णिघरिसपरिच्छणाए दुगठाणेणं मुणेयव्वा ॥५॥ पडिसेहोऽणुण्णा वा पायच्छित्ते य ओह निच्छइए । ओहेण उ सट्ठाणं अत्थविरेगेण वोगडियं ॥१२२॥६॥ हिंसादवराहपदा किण्हे अणुघाति सुक्किल्ला लहुगा । णिघरिसपरिच्छणा खलु जह कणगं तावणिहसेसु ॥७॥ एवं परिच्छिऊणं आयवयं गच्छमावती जं तु । नित्थारयम्मि पत्ते जयणाए निसेव सचरिती ॥८॥ दुट्ठाणा मूलत्तर दप्पे अजए य होइ पडिसेहो । कप्पे जयणा णु (वु) ता जो पुण निक्कारणासेवे ॥९॥ पायच्छित्तं पावति तं दुविहं ओहियं व णेच्छइयं । ओहं तु जमावणं तं दिज्जति तम्मि सट्ठाणं ॥१८५०॥ णिच्छइयं अत्थेणं वीमंसित्ता उ दिज्जती जं तु । एयं अत्थविरेगं वोकडियं छव्विहं इणमो ॥१॥ कस्स कहं कहिं तं वा कदिया णु कम्मि केच्चिरं होइ ? । छट्ठाणपदविभत्तं अत्थपदं होइ वोगडियं ॥१२३॥२॥ कस्सति गीतागीतस्स वावि कह जयण अजयणाए वा । कहिं अब्बाण वसंते कतिया णु सुभिक्खदुभिक्खे ॥३॥ अहवा दित राओ वा कम्हिन्ती कारणे व इतरे वा । कम्हि व पुरिसज्जाते आयरियादीण अण्णतरे ॥४॥ केच्चिर कतिवारे खलु केवइकालं व सेविय होज्जा । एवं छट्ठाण एयं सुद्धासुद्धे असुद्धियरे ॥५॥ संघयणधितिजुयाणं सहूण अरहं तु दिज्जए तत्थ । असहू अथिरादीणं दिज्जति चाएति जं वोढुं ॥६॥ सोऊण कप्पियपदं करेति आलंबणं मइविहूणा । रहसं च अण्णरहस्सं मइसूयओ पुरिसा ॥७॥ माइट्ठाणविमुक्को अकप्पियं जो उ सेवते भिक्खू । तं तस्स कप्पियपदं मायासहिते चरणभेदो ॥८॥ एसो चरित्तकप्पो एत्तो वोच्छामि उवहिकप्पं तु । सो पुण पव्वाभिहितो ओहुग्गह वु (जु) त्तओ चेव ॥९॥ जो उ विसेसो एत्थं तं नवइं इह तु वक्खामि । सुद्धुग्गमदिएहिं धारेयव्वो जहाकमसो ॥१८६०॥ फासुममपासुए यावि, जाणए या अजाणए । ओहोवहुवग्गहिते, धारणा कस्स केच्चिरं ? ॥१॥ जर फासुवही कारणे गहिओ तू जाणएण तो धारे । जो जुण्णोऽजुन्नोवि हू अट्ट पकुव्वे तु छुब्भति हु ॥२॥ फासुगे अजाणएणं कारणगहिओ धरेज्जते ताव । जावऽण्णो ताहे उ विगिंचए तं तु ॥३॥ अह पुण अफासुओ ऊ जाणगगहिओ उ कारणे होज्जा । जइ गीयत्था सव्वे तो धारंती उ जा जिण्णो ॥४॥ अग्गीतविमिस्सेहिं अण्णुप्पन्नम्मि तं विगिंचंति । अह पुण अफासुओ ऊ जाणगगहिओ उ कारणे गहिओ अगीतेणं ॥५॥ उप्पण्णे उप्पण्णे अण्णम्मि विगिंचती ऊ सो ताहे । एवं चउभंगेणं धारणता वा परिट्टवणा ॥६॥ सो पुण दुविहो उवही वत्थं पातं च होइ बोद्धव्वं । वत्थं तु बहुविहाणं पाता पुण दो अणुण्णता ॥७॥ चोदेती पंचणहं किण्णवि एगो पडिग्गहो सोइ । ता दो एक्केक्कस्स ऊ ?

भण्णइ ण पहुच्चए एवं ॥८॥ तो चेउ तिण्ह दुवण्हं अहवा एक्केकतस्स एक्केकं ?। भण्णइ पाहुणगादिएसु ताहे किं काहित्तेक्केणं ?॥९॥ अप्पा परो पवयणं जीवनिकाया य चत्त होंतेवं । वारत्तगदिट्ठतो तम्महा दो दो उ घेतव्वा ॥१८७०॥ भणति जदेवं तेणं जिणकप्पी एगपातओ कम्हा ?। भण्णइ कारणमिणसो सुणसु जेणेगपादो उ ॥१॥ संग्हियकुच्छि जस पग्हिय अप्पाहारे चियत्तदेहे य णासण्णेऽणावाते णातिणिरूद्धे ठविय भाणं ॥१२४॥२॥ तिवली अभिन्नवच्चो कंकग्गहणीय संग्हियकुच्छी । जोयणमवि गच्छिज्जा सन्नाडो थंडिलस्सऽसती ॥३॥ जसकारि पवयणस्स जेणाजसो होइ तं तु ण करेति । पग्गहियएसणाहि य ण यावि सुलभो से आहारो ॥४॥ जदिविय ह कुच्छिपूरं लभति कदाति बहुस्स कालस्स । तंपिय से विद्धंसइ तत्तकडिल्ले व जह बिंदु ॥५॥ तेणऽप्यं वच्चं से तो गच्छति जाव सारियं नत्थि । न य बाहा उप्पज्जति चत्तं च सरीरगं तेणं ॥६॥ णासन्नं जाइ थंडिल्लं, णावातं नियमेण उ । विच्छिन्नं दूरमोगाढं, सव्वदोसविवज्जियं ॥७॥ निक्खिप्पि पडिग्गहगं वोसिरिउं णेयसो उ णिल्लेवे । एएण कारणेणं जिणकप्पिउ एगपातो उ॥८॥ पातदुगस्स उ गहणे कारणमेतं समासओऽभिहितं । अहुणा तु चोदयंती किं घेप्पइ वत्थमतिरेगं ? ॥९॥ किं तिहिं ण पहुप्पेज्जा एक्केणाच्छादणा पकप्पम्मि ?। गच्छे सकारणेत्तियं वोच्छेदकरो पसंगस्स ॥१२५॥१८८०॥ चोदेती किं तिण्हं गहणं ? ऊणेहिं जं ण संथरति । भण्णति एक्केणावि हु संथरति ? पुणाह तो सूरी ॥१॥ छादणतो णासणओ ऊणेण कता भवे पकप्पस्स । मा हु पसंगविवट्ठी ऊणऽहितं तेण धारेति ॥२॥ गच्छरा सकारणोत्ती गिलाणवुट्ठे य बालमसहादी । तेसऽट्ठा अतिरेगं घेप्पइ मा होज्ज दुलभंति ॥३॥ सीतादिभावियाणं मा हू णाणादियाण परिहाणी । होज्जाहि तेण गेण्हति संथरती जावतीएणं ॥४॥ जदि एयविप्पहूणा तवनियमगुणा भवे निरवसेसा । आहारमादियाणं को णाम परिग्गहं कुज्जा ?॥५॥ पंचमवओवघातो चोदेती वत्थमादिगहणम्मि । एगव्वओवघाए घातो पंचणहवि वयाणं ॥ल० १३४॥६॥ एवं तु चोदितम्मी बेंती गुरू ण उ परिग्गहो सो उ । संजमगुणोवकारा उवघाति परिग्गहो होइ ॥७॥ जम्मि परिग्गहियम्मी तसथावरघातणा पवत्तंति । गहणे गहिए धरणे सो नाम परिग्गहो होइ ॥ल० १३५॥८॥ गहणे पुरकम्मादी गहिए पुण होंति पच्छकम्मादी । धरणे अप्पडिलेहा कीरति मुच्छा त जा तत्थ ॥९॥ जम्मि परिग्गहियम्मी तसथावरसंजमा पवत्तंति । गहणे गहिते धरणे सो तू (गुणकारओ) ण परिग्गहो होइ ॥१८९०॥ रागादिविरहिओ ऊ आहारदीणं जं कुणइ भोगं । ण हु सो परिग्गहो ऊ तो किं गुरूमादिणं पूया ॥ल० १३६॥१॥ कीरति आहारादिहिं ? भन्नति भणिता उ नियमसो सा उ । तित्थंकरहिं चेव उ तेण उ सा कीरए तेसिं ॥२॥ तो किं पूयाहेउं पवत्तयंतीह तित्थगर तित्थं ?। अह कम्मक्खयहेउं ? पुट्ठो एवं इमं आह ॥३॥ आहारउवहिपूजादिकारणा ण उ परूवितं तित्थं । णाणचरणाण अट्ठा तित्थं देसिंति तित्थकरा ॥४॥ तित्थं चउहा संघो तस्स य देसंति नाणमादीणि । तित्थगरणामगोत्तस्स खयट्ठा अविय साभव्वा ॥५॥ नाणे चरणे गुणकारगाणि आहारउवहिमादीणि । एतेण अणुण्णाता तहिं ठिताणं तु तो पूजा ॥ल० १३७॥६॥ एसो उवहीकप्पो वन्नियओ वित्थरं पमोत्तूणं । संभोगकप्पमेत्तो वोच्छामि अहं समासेणं ॥७॥ पुव्वभणिओ विभागो संभोगविही य दोहिं ठाणेहिं । दोसुवि पसंगदोसा सेसे अतिरेग पन्नवए ॥८॥ दसविहसत्तविहेहिं पुव्वुत्तेतहिं दोहिं ठाणेहिं । दोसुवि पसंगदोसा ण भुंजए अन्नसंभोई ॥९॥ जम्हा उ ण णज्जंती उग्गममादी उ जे भवे दोसा । एएण अपरिभोगो अमणुण्णे होइ बोद्धव्वो ॥१९००॥ जं तत्थ ण पत्तं तू तमहं वोच्छामि एतमतिरेगं । जे उ गुणा संभोगे ते वण्णेऽहं समासेणं ॥१॥ अणुकंपा संगहे चेव, लाभालाभेऽविदाघता । दावद्वे य गेलण्णे, कंतारे अंचिए गुरू ॥१२६॥२॥ बालादणुकंपणट्ठा असहू अतरंतसंगहट्ठाणे । केइ सलद्धी अलद्धी तेसिं साहिल्लयट्ठाए ॥३॥ उप्पण्णे अहिगरणे काहित्ति विओसणं तु अविदाही । ण य गच्छे बहिभावं उप्परओऽहंति परिभूते ॥४॥ मज्झं अणेक्कभाणोत्तिकाउ मा एस पे (ग) च्छती पुव्विं । जत्थ उ कुले महल्ले लब्भति भिक्खा महल्ली ऊ ॥५॥ तम्हा उ दवदवस्सा पुव्विं गच्छामहं तु तं गेहं । एते ऊ परिहरिया दोसा उ भवंति संभोगे ॥६॥ गेलण्णेण व एतस्स हिंडियं आणियं तु अण्णेहिं । भोक्खत्ति यऽसहुवग्गो कंतारे आणित सहूहिं ॥७॥ एमेव अंचिएऽवी गुरूवि गिण्हेउ अन्नमन्नस्स । एक्को पुण परितम्मति बाहिरभावं व गच्छेज्जा ॥८॥ एते उ एवमादी संभोगम्मि उ गुणा भवंती उ । तम्हा खलु कायव्वो संभोगो गुणन्निण समं ॥९॥ एयाइं ठाणाइं जो तु सहू होंतओ पमादेति । अण्णे

आणेंतेत्ती घेत्तूणंजं व तं केई ॥१९१०॥ सेसाण पालणट्ठा तो तं उम्मंडलिं करंती उ । जइ आउट्टति जुज्जति ताहे मेलिज्जइ पुणोऽवि ॥१॥ अह पुण चोइज्जंतो बहुसो णाउट्टए उ तं दोसं । सति लाभलद्धिजुत्तो निज्जूहंती उ तं ताहे ॥२॥ अहं मंदलाभलद्धी ण य जोगं जुज्जती अंहत्थामं । सो हि खरंटेऊणं मेलिज्जई मंडलीए उ ॥३॥ किं कारण णिज्जुहणा ? जं साहूणं गुणुत्तरधराणं । ण केरई वच्छल्लं तेण उ णिज्जुहणा तस्स ॥४॥ एवं आयरिएण उ जोगो सव्वस्स चैव गच्छस्स । वोढव्वो दिट्ठंतो गएण इत्थं इमो होइ ॥५॥ जह गयकुलसंभुओ गिरिकंदरविसमकडगदुग्गेषु । परिवहति अपरितंतो णियगसरीरूग्गते दंते ॥ल० १३८॥६॥ तह पवयणभत्तिगओ साहम्मियवच्छलो असढभावो । परिवहति अपरितंतो खित्तविसमकालदुग्गेषु ॥ल० १३९॥७॥ जइ एकभाणजिमिता गिहिण्णोऽविय दीहमेत्तिया होंति । जिणवयणबहिब्भूता धम्मं पुचं अयाणंता ॥ल० १४०॥८॥ किं पुण जगजीवसुहावहेण संभुजिऊण समणेणं । सक्को हु (न) एकमेक्को नियओविव रक्खिउं देहो ? ॥१४१॥९॥ केरिसय संभुंजे केरिसयं वावि ऊ ण संभुंजे ? । भण्णइ उग्गमसुद्धं भुंजे असुद्धं ण भुंजेज्जा ॥१९२०॥ चोदेआहारादी उग्गममादी असुद्ध मा भुंजे । जं पुण अपेहणादीकालादीहिं उवहयं तु ॥१॥ तं पुण सुद्धोवहिणा मा समयं एकहिं तु बंधेज्जा । संघासेणं तस्स उ उववाओ मा हु सुद्धस्स ? ॥२॥ भन्नति सुद्धस्स जती संघासेणं तुहोइ उवघातो । सुद्धेण असुद्धेण(द्धस्सा)ऽवि पावइ सुद्धी तव मएणं ॥३॥ अह उवघातोत्ति मतं संघासेण उमता विसोही ते । णणु ते इच्छामेत्तं न य इच्छामित्तओ सिद्धी ॥४॥ उवघातो विसोही वा णत्थि य जीवस्सभावओ एसो । उवघातो विसोही वा परिणामवसेण जीवस्स ॥५॥ तस्सेव पसत्थस्स उ परिणामस्स अह रक्खणट्ठाए । कीरइ संभोगविही गच्छपसत्तीइ मा गच्छे ॥६॥ संभोगकप्पदारं एवं खलु वण्णियं मए एवं । आलोयणकप्पविहिं एवो वोच्छं समासेणं ॥७॥ दुविहपडिसेवणाए दाट्ठाण दुयागताण ठाणाणं । जस्सेव उ अभिमुहओ आलोएज्जा तदट्ठाए ॥१२७॥८॥ दप्पिया कप्पिया चैव, दुविहा पडिसेवणा । दप्पियाए उ दोट्ठाणा, मूले तह उत्तरे चैव ॥९॥ कप्पियाएवि एमेव, दो ठाणा उ वियाहिया । जयणा अजयणा चैव, एक्केक्का य वियाहिया ॥१९३०॥ जस्सेव अभिमुहोत्ती जं चैव य काउ विहरते पुरतो । आयरियउवज्झाया तस्सेव उ तं तु आलोए ॥१॥ अहवा जं जह सेवित मूलगुणे चैव उत्तरगुणे य । पाणतिवातादीसु य वएसु तं तं तहाऽऽलोए ॥२॥ अहवा मोक्खाभिमहो मोक्खट्ठाए उ अट्टकम्माणं । अणलोइए ण मुंचति कम्हा ? इणमो निसामेहिं ॥३॥ जइविय तवगुणजुत्तो होइ मणुस्सो अणुद्धरियसल्लो । ण करेति दुक्खमोक्खं सल्लुद्धरणे पततियव्वं ॥४॥ तं पुण केरिसगस्स उ वियडेयव्वं तु ? जाणतो जो तू । अविजाणते ण कप्पति अजाणतो जो अगीयत्थो ॥५॥ पायच्छित्तमयाणंतो, ठाणे ठाणे अहाविहिं । आलोयणाए उवसंपयाए ण हु होति पाउग्गो ॥६॥ किं कारणं ? ण याणति सोहिं साहुस्स सोहिकामस्स । ठाणे ठाणे पुडवादिएसु मूलुत्तरे वावि ॥७॥ पाणतिवातादीसु य कारण णिक्कारणे य जयणाए । आलोयणगुणदोसदरिसणेणं हु पाउग्गो ॥८॥ गुण अणिगुहियमादी दोसा पुण गूहणादिया होंति । एते ण याणे अगीतो तम्हा उ इमस्स णालोए ॥९॥ पायच्छित्तं वियाणंतो, ठाणे ठाणे अहाविहिं । आलोयणाए उवसंपयाए सो होइ पाउग्गो ॥१९४०॥ पडिसेवणकालोऽविय दुविहे काले पबंधवोच्छेदे । एक्केक्के छक्कएणं आलोयण मा पडिच्छाहिं ॥१२८॥१॥ पडिसेवणाऽतियारा दुविहा मूलगुण उत्तरगुणे य । पडिसेवणकालोऽविय दुविहो उउबद्ध वासे य ॥२॥ अव्वोच्छिन्न पबंधं तव्विवरीयं तु होइ वोच्छिन्नं । वयछक्ककायछक्काकप्पादी छक्कमेक्केक्कं ॥३॥ अक्कप्पादिछक्कमिणं अकप्प गिहिभायणं च पलियंको । तत्तो य गिहिणिसिज्जा होइ सिणाणं च सोभा य ॥४॥ एतेसि छक्कगाणं एक्केक्कं जं तु होइ आवण्णो । तं तं आलोएँ तहा पच्छित्ते यावि आयरिओ ॥५॥ आलोयणववहारो संवासिपवासिया ऊ अवराहा । संवासिया उ गच्छे पवासिता कारणगतस्स ॥६॥ अहवा जा अणवट्ठो ता संवासी तु होंति अवराहा । पारंची य पवासी पवसति गच्छाओ जेणं तु ॥७॥ पंचविहो सज्झाओ दाणग्गहणम्मि भइओ संवासे । पावासिए ण दिज्जति ण य गहणं होइ कायव्वं ॥८॥ आवन्नगपरिहरिए अणवट्ठे चैव दोणहऽवेतेसिं । णवि दिज्जति णवि घेप्पति सेसाणं दाणं गहणं च ॥९॥ आलोयणाएँ कप्पो एसो भणिओ मए समासेणं । उवसंपयाएँ कप्पं एत्तो उ समासओ वोच्छं ॥१९५०॥ दुविहम्मि आगमम्मि उ परूवणा चैव आयरणया य । पणवणगहणअणुपालणाएँ उवसंपया होइ ॥१॥ आगमहेउं उवसंपदा उ स य आगमो भवे दुविहो । सुत्तं अत्थो य तहा पारगए तत्थ उवसंपा ॥२॥ दो आयरिया पारग कत्थ उ उवसंपदा तहिं कुज्जा ? । जो णिउणतरं भासति अह निउणं दोवि

भासंति ॥३॥ सामायारी पडिलेहणादि जो तत्थ आयरावेति । दोसुवि समुज्जतेसू जो तहियं धम्मकहिओ उ ॥४॥ तावि य हु सिक्खियव्वा सज्झायस्सेव जे ण तं अंगं । दोसुवि धम्मकहीसु जो तहियं गाहगो होइ ॥५॥ गाहणसत्तिजुतेसुं दोसु अवी कत्थ होति उवसंपा ? अतरंतअसहुवगं विसेसओ जो उ पालेति ॥६॥ एतेसु विसिद्धतरा अण्णाहितोऽरिहाइ उवसंपे । इतरो होइ अज्जोग्गो जइविय सो होइ गीयत्थो ॥७॥ जो उ उसंविगं पुण पण्णवाकोविदोत्तिकाऊणं । उवसंपज्जइ बालो तस्स इमे होंति दोसा उ ॥८॥ सीहमुहं वग्घमुहं उयहिं व पलित्तगं व जो पविसे । असिवं अवमोयरियं धुवं सि अप्पा परिच्चत्तो ॥९॥ तह चरणकरणहीणे पासत्थे जो पविसते भिक्खु । जयमाणे उ पजहिउं सो ठाणे परिचयति तिण्णि ॥१०॥ एमेव अहाछंदे कुसील ओसन्नमेव संसत्ते । जं तिन्नि परिचयंती नाणं तह दंसण चरित्तं ॥१॥ कं पुण उवसंपज्जे ? तत्थ इमे गच्छ होंति चत्तारि । एगो देइ लएइ य बितियो देईन गेणहइ उ ॥२॥ ततिओ न देति गिण्हइ ण य देइ ण गेणहती चउत्थो उ । पढमे उवसंपज्जइ सेसा उ तओ णुऽणुण्णाया ॥३॥ बितिए णिज्जरलाभं न लभति गेलन्नमादिकज्जेसु । ततिए गिलाणकारण अट्टवसट्टे मरणदोसा ॥४॥ दोण्णिऽवि चउत्थे दोसा होइ अवत्थू य तेण सो तम्हा । पढमम्मि जे गुणा खलु हवंति ते मे निसामेह ॥५॥ भत्तोवहिसयणासण दाणग्गहणे (लो) य एक्कमेक्कस्स । हट्टगिलाणे कयकारिते य अणइक्कमो ज (जोऽ) त्थ ॥६॥ जो पुण ते दुसंती करेइ उवसंपद असुद्धेसु । तिट्ठाणगाभिलासी हवइ तु वोसट्टतिट्ठाणो ॥७॥ किं ण ठिओ सि तहिं चिय ? पुट्ठो जंपेइ तस्सिमे दोसा । अप्पियसज्झायादी णत्थि य ते यावि जतितस्स ॥८॥ जं दोसं आभासति तं दोसं अप्पणा समावज्जे । जो वि पडिच्छइ तं तु सोऽविय तं चेव आवज्जे ॥९॥ गच्छस्स जोवसंपे असुद्धमावज्जती तगं सोउं । जो पुण पडिच्छामाणो अविणीयादीहिं दोसेहिं ॥१०॥ दूसेउं ण पडिच्छति न संति ते यावि तस्स जदि दोसा । ताहे जं सो वदती तं दोसं अप्पणाऽऽवज्जे ॥१॥ जं च असुद्ध पडिच्छति रागेणं तस्स जे भवे दोसा । वोसट्टतिगट्ठाणादि ते उ स अप्पणा पावे ॥२॥ अरूहा अणरूह उवसंपदा य भणिया उ होंति दोऽवेते । अयमण्णो उ अणरिहो सूरी उवसंपदाते उ ॥३॥ आहारे उवहिम्मि य पगासणा होइ अणरिहमसट्टे । एगंतणिज्जरट्टा संविग्गजणम्मि उद्देसा ॥४॥ आहारउवहिसेज्जा लभिहामी तेण संगहं कुणति । होहामि वा पगासो लोए ण ऊ निज्जरट्टाए ॥५॥ एए होंति अणरिहा तित्तिणिचलचित्तमादिणो जे य । अहवावि मंदसट्टे आकट्टिविकट्टिए वावि ॥६॥ जो पुण इमेहिं पंचहिं ठाणेहिं वादे सो भवे अरूहो । संगहुवग्गहणिज्जरसुतपज्जवजातऽवोच्छित्ती ॥७॥ तस्स पुण णिज्जरट्टा वाइंतस्स नियमेण सूरिस्स । आहारोवहिपूजापगासणा चेव भवती तु ॥८॥ विणएणांहारादी उक्कोसा तस्स होंति दायव्वा । काले कालणुरूवा जे वावि सभावअणुरूवा ॥९॥ उच्छूढसरीरो उ जइविय सो मंडलीय भुंजति ऊ । तहविय मत्तगहणं सीसपडिच्छेहिं कायव्वं ॥१०॥ एस अणुधम्मता ऊ जह गोतमसामि सामिणो गेण्हे । हिंडंतस्स पुण इमे तस्स उ दोसा भवंती उ ॥१॥ वाए पित्ते गणालोए, कायकिलेसे अचिंतता । मेढी अकारए वाले, गणचिंतावट्टी वादिणो ॥२॥ एतेसिं दाराणं वक्खाणुवरिं बितिज्जउद्देसे । ववहारे भण्णिहिती वित्थरओ इह समासेणं ॥३॥ भत्तीए तु गुणाणं पगासणा तस्स तेहिं कायव्वा । एयारिसो महप्पा उज्जुत्तो अणज्जकालीओ ॥४॥ थामावहारविज्जो तवसंजमसुट्टिओ जियकसाओ । बहुसुय आगमिओ भत्तीए पगासए एवं ॥५॥ एसुवसंपदकप्पो वोच्छं उद्देसकप्पमहुणा उ । उद्दिसण वायणत्ति य पाढणया चेव एगट्टा ॥६॥ सुत्तत्थतदुभयाइं पवायते तावजाव संधा (सट्टा)णं । बहुपच्चवाययाए विजढे भजियं तु संधा (सट्टा) णं ॥७॥ संधाणमंतगमणं असिवाई पच्चवादऽणेगविहा । विजढेती निक्खित्ते जोगे भइओ पुणुक्खेवो ॥८॥ जइ कारणेण केणई निक्खित्तो तो सि उक्खित्तो तो सि उक्खिव पुणोवि । अह दप्पा णिक्खित्तो तो ण उ उक्खिप्पती भुज्जो ॥९॥ उद्दिट्टम्मि य अंगे सुयखंधम्मि य तहेव अज्झयणे । आसज्ज पुरिस कारण तिट्ठाणे होइ पडिसेहो ॥१०॥ अंगादी उद्दिट्टे पुरिसं दट्टुण अपरिणामादी । अच्छति वसट्टरा (या) दिहि अविणीयादी व णाऊणं ॥१॥ ताहे निक्खिप्पति ऊ तिट्ठाणे जं तु भणिय पडिसेहो । तं सुत्तमत्थतदुभय एतेसिं तिण्ह पडिसेहो ॥२॥ एतद्देसरकप्पो अहुणा वोच्छं अणुणकप्पं तु । कम्ही काले गहणं वत्थादीणं अणुण्णातं ? ॥३॥ वत्थंपादग्गहणे वासावासेसु निग्गमो सरदे । तिगपणगसत्तयदुगाउयम्मि अप्पोदगं जाणे ॥४॥ वत्थादीणं गहणं

णाणुणातं तु होइ वासासु । वासादीँ परेणं दुमासे अण्णे उ गेण्हंति ॥५॥ तेसिं पुण गेंताणं सरदे जइ दोण्ह गाउयाणंतो । दगसंघट्ट्य जहण्णेण तिण्णि पंचेव मज्झिमगा ॥६॥ सत्तेव उ उक्कोसा गिम्हम्मी तिण्णि पंच हेमंते । वासासु य सत्त भवे परेण खित्तं णऽणुणातं ॥७॥ अप्पोदगत्ति मग्गा जं तं रीयासु वण्णियं पुव्वि । तं अब्द्धे जोयण दगघट्टा जाव सत्तेव ॥८॥ वत्थंपायग्गहणे णवसंथरणम्मि पढमठाणम्मि । एत्तो वइक्कमम्मि उ सट्ठाणासेवणा सुद्धी ॥१३३॥९॥ पढमं ठाणुस्सग्गो तेणं तू नवसु होइ खित्तेसु । वत्थादीणं गहणं तत्थेव य होइ उ विहारो ॥२०००॥ णवठाणाइकमे पुण हवती सट्ठाणओ विसुद्धो उ । किं पुण तं सट्ठाणं अववादे असति तो होइ ? ॥१॥ अववादेणं गहणं उस्सग्गो चेव होइ सो ताहे । गेण्हंतस्स उ कारणे सुद्धी तह चेव बोद्धव्वो ॥२॥ जह गिण्हंतुस्सग्गे सुद्धी उवहिस्स एव बित्तिणं । गेण्हंतस्स विसुद्धी सट्ठाणं एवमक्खातं ॥३॥ अहवावि इमे अण्णे, णव उ ट्ठाणा वियाहिया । दव्वाईया उ इणमो, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥४॥ दव्वे खेत्ते य काले य, वसही भिक्खमंतरे । सज्झाइए गुरु जोगी, एते ठाणा वियाहिया ॥५॥ दव्वाणाहारादिणि जादि तु सुलभाइं तम्मि खेत्तम्मि । खित्तं विच्छिन्नं खलु वत्तेतसुणेंतगणस्स ॥६॥ वत्तण परियट्ठंती सुणेंति अत्थं गणो उ बालादी । तस्स पट्टुच्चति खेत्तं आहारादीहिं संथरणं ॥७॥ काले ततियाँ वेला वसही जोग्गाओ भिक्ख सुलभंति । ण विगिट्ठमंतराविय सज्झाओ सुज्झति जहिं च ॥८॥ सुलभं आयरियाणं जोग्गं जोगीण सुलभ पाउग्गं । एते ते नव ठारा जहिं उस्सग्गेण गहणं तु ॥९॥ उस्सग्गेण विहारो संथरमाणाण णवसु खित्तेसु । तो सव्वुग्घादुवही नवि पेल्ले यावि दगघट्टे ॥२०१०॥ णवि दूरे गच्छंती णवगस्स असंभवे बित्तिथठाणं । दगघट्टे बहुएवी पेल्ले दूरंपि गच्छेज्जा ॥१॥ दुलभम्मि वत्थ पाए ऊणहिंएंसुं पि नवसु गच्छिज्जा । एमेव विहारोवि हु खेत्ताणऽसती मुणेयव्वो ॥२॥ आलंबणे विसुद्धे दुगुणं तिगुणं चउग्गुणं वावि । खेत्तं कालातीते समणुणातं पकप्पम्मि ॥३॥ एस अणुणाकप्पो अहुणा अब्धानकप्प वोच्छामि । जेहिं च कारणेहिं अब्धानं गम्मए इणमो ॥४॥ असिवे ओमोयरिए रायट्टे भए व आगाढे । देसुट्ठाणे अपरक्कमे य अब्धानओ पणगं ॥५॥ उददरे सुभिकखे अब्धानपवज्जणं तु दप्पेणं । दिवसादी चउलहुगा चउगुरूगा कालगा होंति ॥६॥ उग्गमउप्पायणएसणाएँ जे खलु विराहते ठाणे । तंनिप्फन्नं तस्स ऊ पायच्छित्त तु दायव्वं ॥७॥ पुढवी आऊ तेऊ चेव वाऊ वणस्सति तसा य । णंतिसु परित्तेसु य जं जहिं आरोवणा भणिया ॥८॥ लहुओ गुरूओ लहुगा गुरूगा चत्तारि छच्च लहुया य । छगुरूय छेदो मूलं अणवट्टप्पो य पारंची ॥९॥ असिवे ओमोदरिए रायट्टे भए व आगाढे । गीयत्था मज्झत्था सत्थस्स गवेसणं कुज्जा ॥२०२०॥ कालमकाले भोती णाऊण य अहिवत्तिं अणुणवणा भिच्छुयमिच्छादिट्ठी धम्मकहाए निमित्ते य ॥१॥ सुत्तयसमए संखडि पत्थय (रिच्छ) णे खलु तहेव पोग्गलिए । धम्मकहनिमित्तेणं वसहा पुण दव्वलिंगेणं ॥२॥ सत्थे पंथे तेणे पंचविहो उग्गहो य दव्वाणं । सुन्नग्गामे दव्वग्गहणं जयणाए गीयत्था ॥३॥ तुवरे फले य पत्ते गोमाहिसे सूयरा य हत्थी य । आतवमणायवे च्विय जयणाए जाणगे गहणं ॥४॥ पिप्पलगसूतियारिगणक्खच्चणतलियपुडगवज्जे य । कत्तियकत्तरियसिक्कग संवट्थ्यग लाउए चेव ॥५॥ वाइयपेत्तियसिंभियगुलिगांण अगदसत्थकोसे य । जं चऽणुणवगहकरगं गिण्हह अब्धानकप्पम्मि ॥६॥ सीहाणुगा य पुरतो वसभाणू मग्गतो समण्णिंति । पंथे तंपियजंता धरेंति जा अब्धपज्जती ॥७॥ दंडियमिच्छदिट्ठी समुदाननिवारणं च निव्विसए । सारूविसन्निभद्दग वसभा पुण दव्वलिंगेणं ॥८॥ उवकरणचरित्ताणं विलोवणा सरीरलोयऽरागाढे । धम्मकहनिमित्तेणंपुलागकज्जेण आगाढे ॥९॥ असिवादिकारणेहिं अब्धानपवज्जणं अणुणातं । उवकरणपुव्वपहिलेहिण सत्थेण गंतव्वं ॥२०३०॥ वच्चंताणं असहू कोई ण तरिज्ज गंतु पादेहिं । अपरक्कमो हु ताहे तवियं तु इमे विमग्गेज्जा ॥१॥ एगक्खुरे य दुक्खुरे दुपए अणुबंधे तह य अणुरंगा । अह भद्दएऽभिजायति असती अणुसट्ठिमादीहिं ॥१३४॥२॥ एगखुरा आसाती दुक्खुरा उट्थादि दुपय जड्ढादी । अरुबंधी सकडादी अणुरंग पिसी उ (सिविय) बोद्धव्वा ॥३॥ एतेसिं पुव्वुवट्ट खुरादि जाइत्तु सिद्धपुत्तादी । असतीय खुड्डतो वा लिंगविवेगेण कड्ढति तु ॥४॥ आवासियम्मि सत्थे तस्सेव तगंपि अप्पिणंति पुणो । अह भणइ गता संता अप्पेज्जाहत्ति मम एयं ॥५॥ ताहे पच्छकडादी चारेती तेसि असइ उ खुड्डो । लिंगविवेगं काउं चारेति जा गतट्ठाणं ॥६॥ एवं दुक्खुरादीसुवि जयणा जा जत्थ सा उ कायव्वा । सुत्तत्थजाणएणं अप्पाबहुयं तु णायव्वं ॥७॥ एतेसामन्नतरं अणगालंबणे णिसेविज्जा । तट्ठाणगावराहे संवट्ठियामोऽवराहणं ॥८॥ संवट्ठियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा । आयारपकप्पे जं पमाण णिम्माण

चरिमम्मि ॥९॥ अब्धाणकप्पो एसो अहुणा अणुवासराए कप्पं तु । वोच्छामि गुरूवएसा अणुगहट्ठा सुविहियाणं ॥२०४०॥ अणुवासम्मि उ कप्पे पण्णवग पडुच्च बहुविहा अत्था । अणुवासियाएँ पगयं सुब्बा यतहा असुब्बा य ॥१॥ अणुवासत्थो बहुहा उडुवासे वसण अहव असिवादी । वुड्ढादीवासो वा अहवा अणुवसणमणुवासो ॥२॥ वसिउं पुणोवि वसती अणुवासिग वसहि सामइगी सत्ता । तीयहिगारो एत्थं सा हुज्जा सुब्बऽसुब्बा वा ॥३॥ पट्टविंसादीहिं वंसगकडणादिएहिं तह चेव । होइ असुब्बा वसही मूलगुणे उत्तरगुणे य ॥४॥ कालहुयातिरित्तं अवि सुब्बासुं च तासु वसमाणो । पावति पायच्छित्तं मोत्तूणं कारणमिमेहिं ॥५॥ असिवे ओमोयरिए रायद्दट्ठे भए व आगाढे । गेलत्ते उत्तिमट्ठे चरित्त सज्जातिते असती ॥६॥ बाहिं सव्वत्थऽसिवं तत्थ सिवं तेण कालदुयगम्मि पुण्णेवि ण णिगच्छे अणु पच्छाभाव अणुवासी ॥७॥ आलंबणे विसुब्बे सुत्तदुयं परिहरे पयत्तेणं । आसज्ज उ परिभोगं भयणा पडिइवसंकमणे ॥१३५॥८॥ असिवादीहिं वसंते सुब्बाए वसहीएँ वसे साहू । सुब्बासतीए जतती विसोहिकोडीएँ पुव्वं तु ॥९॥ भयणत्तियं जं भणितं पुव्वऽप्पतराऽत्थ जे उ जे दोसा । ते ते पुव्वं सेवे संकमणेऽवी इमा भयणा ॥२०५०॥ अप्पाबहुं तुलेतुं जत्थ गुणा तू भविज्ज बहुतरगा । गच्छे गच्छंताण व तं चेव तहिं करेज्जा उ ॥१॥ असिवादिणिट्ठिए पुण अव (पुव्वऽ) कखेवेण संकमे तत्तो । सत्थं तु पडिच्छंतो जइ अच्छे तत्थ सुब्बो उ ॥२॥ एतन्नतरविहूणं अणुवासिय जे उ अणुवसे कप्पं । कालहुयावराहे संवट्टियमोवराहाणं ॥३॥ संवट्टियावराहे तवो व छेदो तहेव मूलं वा । आयापकप्पे जं पमाण णिम्माण चरिमम्मि ॥४॥ अणुवासियाए कप्पो एमेसो वणिणो समासेणं । ठिइकप्पमो उ तत्तो वोच्छामि गुरूवएसेणं ॥५॥ गच्छाणुकंपयाए सुत्तत्थविसारए य आयरिए । आगाढे पढमसंजत ओवग्गहिए पकप्पदुए ॥६॥ गच्छो जदी हीरेज्जा आयरियं वावि वायते कोई । एरिसए आगाढे जस्स उ जा होइ लद्धी उ ॥७॥ सो तं न पमाएई पढमनियंठो पुलागलद्धीओ । गच्छोवग्गहहेउं कारण पकप्पट्ठिअऽणुणा ॥८॥ दुपएत्ति साहुसाहुणि तदट्ठहेतुं तु एव मूलगुणे । भणिया सेवा एसा सीसो पुच्छइ उ अंह इणमो ॥९॥ जह कारणम्मि भणिया मूलगुणेषुं तु एव पडिसेवा । तह होज्ज कारणम्मी पडिसेवा उतरगुणेवि ? ॥२०६०॥ गुरूयतरएसु एवं मूलगुणेषुं तु जइ भवेऽणुणा उत्तरगुणेषु तत्तो लहुयतरेसुं ततोऽणुणा ॥१॥ ठितकप्पेसो भणिओ अहुणा वोच्छामि अट्ठितं कप्पं । संखेवपिडितत्थं जह भणियमणंतनाणीहिं ॥२॥ वत्थे पादग्गहणे उक्कोसजहण्णगम्मि अठिओ उ । ठितमट्ठिते विसेसो परूवितो संपकप्पम्मि ॥३॥ वत्थाणि य पायाणि य मज्झिमत्तित्थंकराण कप्प म्मि । बहुमोल्लाणिवि गिण्हइ अट्ठियकप्पो समक्खाओ ॥४॥ मोल्लगरूयंपि वत्थं अट्ठारसपणितरूवग जहण्णं एत्तो य सयसहस्सं उक्कसमोल्लं तु णायव्वं ॥५॥ ऊणगअट्ठारसगं वत्थं पुण साहुणो अणुणातं । एत्तो वइरित्तं पुण णाणुणातं भवे वत्थं ॥ल० १४२॥६॥ जिणथेराणं कप्पं अहुणा वोच्छामि आणुपुव्वीए । जं जत्थ जहा निवयति समासतो तं तहा सुणसु ॥७॥ जिणथेराणं कप्पो जम्हा उ ठितम्मि अट्ठिए चेव । ठितअट्ठितकप्पाणं जम्हा अंतग्गता एते ॥८॥ जो उ विसेसो एत्थं तं तु समासेण णवरि वक्खामि । जिणथेराणं कप्पे जिणकप्पे ता इमं वोच्छं ॥९॥ दुयसत्तए तियचउक्कगस्स अब्बद्धएगच्छेदेणं । अवि होज्ज कालकरणं पुणरावत्ती णविय तेसिं ॥१३६॥२०७०॥ पिंडेसणा उ सत्त उ हवंति पाणेसणा दुसत्तेए । चउ सेज्जवत्थपाए तिण्णेते चउक्कगा होंति ॥१॥ दोण्णादिमा उ सत्तसू अवणेउं सेस उवरिमा पंच । अब्बद्ध होंति छेदे दो दो अवणे चउक्केसु ॥२॥ गेण्हंति उवरिमासु तत्थ अवि घेतु अण्णतरियाए । हेट्टिल्लासु ण गेण्हति जइवि करे कालकिरियं तु ॥३॥ अणभिग्गहेण णवि ता गेण्हति विही उ एस जिणकप्पे । अहुणा उ थेरकप्पे वोच्छामि विहिं समासेणं ॥४॥ गहणे चउव्विहम्मिं बितिए गहणं तु परमजत्तेणं । जं पाणबीयरहितं हविज्ज तरमाणए सोही ॥१३७॥५॥ गहणं चउव्विहंती वत्थं पायं च सेज्ज आहारो । एतेसिं असतीए गहणं पढमं तु बीयस्स ॥६॥ बितियं पातं भन्नति किं कारण तस्स गहण पढमं तु ? । तेण विण बोडिपडिमे गिहिभायणभोगो हाणी य ॥७॥ अहवा चउव्विहं तू असणादी तत्थ होज्ज गहणं तु । तत्थ उ बितियं पाणं तस्स उ गहणं पढमताए ॥ल० १४३॥८॥ असतीय फासुयस्स तस्सहिए कंदबीयसहिए वा । किं कारण ? तेण विणा आसुं पाणक्खओ होज्जा ॥ल० १४४॥९॥ तरमाणो गेण्हती सुब्बं, अतरो पेल्ले तह संथरे । संथरतो उ गेण्हंतो, पावति सट्ठाणपच्छित्तं ॥२०८०॥ सत्तदुए दसए वा अणेगठाणेण वा भवे गहणं । एत्तो

तिगातिरित्तं गच्छे गहणं तु भइयव्वं ॥१॥ पिंडेसण पाणेसण सत्तदुगे तं तु होइ णायव्वं । दसगं एसणदोसा णेगट्ठा (हा) णुग्गमे दोसा ॥२॥ एत्तो तिगातिरित्तं उग्गमउप्पायणेसणाऽसुद्धं । भजियंति कप्पतित्ती तस्सऽसतीए असुद्धंपि ॥३॥ एसो उ थेरकप्पो वोच्छं अणुपालणाए कप्पं तु । अणुपालेति सुविहिया गच्छं विहिणा उ जेणं तु ॥४॥ परियट्ठी परियट्ठंतओ य दुविहो पुणोवि एक्केक्को । उवसग्गखेत्तकालावसेण अज्जाण परिवट्ठी ॥१३८॥५॥ परियट्ठियव्वयं खलु परियट्ठी चेव होइ एगट्ठं । समणा समणीओ वा दुविहं परियट्ठियव्वं तु ॥६॥ समणपरियट्ठ दुविहो आयरिओ बीयओ उवज्झाओ । संजइपरियट्ठो पुण तिविहो तु पवत्तणी तइया ॥७॥ समणपरियट्ठि दुविहा विहिपरियट्ठी य अविहिए चेव । जतिणि य परियट्ठियव्वा नियमेणं कारणेणिमिणा ॥८॥ ताओ बहूवसग्गा तेणादिदुसंचराणि खेत्ताणि । कालवसेण य संपति जायति लोगस्स पंतत्त ॥९॥ तम्हा सव्वपयत्तेण रक्खियव्वा उ ताओ नियमेणं । णवि सतिरा मोत्तव्वा मा होज्जा तासि उ विणासो ॥२०९०॥ संविग्गीयपरिणओ तासिं परियट्ठओ अणुण्णाओ । होइ पुण अणरिहो खलु परियट्ठी ऊ इमो तासिं ॥१॥ अबहुसुए अगीयत्थे, तरूणे मंदधम्मिए । कंदप्पी सीलणट्ठाए, अविही दाणे य गहणे य ॥१३९॥२॥ बहुसुयगीय जहन्नो आवासगमादि जाव आयारो । ते अग्गीतऽबहुस्सुत तिण्ह समाणारतो तरूणो ॥३॥ जो उज्जोगं ण कुणति चरणे सो होइ मंदधम्मो उ । अणिहुयउल्लावादी सरीरकुवि (रूइ) ओ य कंदप्पी ॥४॥ निक्कारणे अण्डा संजतिवसही उ वच्चे जो उ । निक्कारणमविहीए जो देती गिण्हती वावि ॥५॥ एयारिसो उ अज्जाणं, परियट्ठी उ ण कप्पति । कारणेहिं इमेहिं तु, गम्मइ अज्जाणुवस्सयं ॥६॥ उवस्सए य गेलण्णे उवही संघ पाहुणे । सेहट्ठवण उद्देसे, अणुण्णा भंडणे गणे ॥७॥ अणप्पज्झ अगणी आऊ, वी (ती) यारे पुत्तसंगमे । संलेहणे वोसिरणे, वोसट्ठाणे ठिते तहिं ॥८॥ अरिहो अणरिहो यावि, परियट्ठी एवमाहिओ । अंहुणा पवित्तिणी तासिं, अजोगा उ इमा भवे ॥९॥ वासग्गामविहारेसु, वीयारादेक दीहिया । अजुत्तोवहि अणाउत्ता, अप्पच्छंदा य काहिता ॥१४०॥२१००॥ पडिणीयथद्धसुहसीला, गिहिवेयावच्चकारिता । संसत्तठवियभत्ता य, बाउसी अप्पणट्ठिता ॥१॥ अणायतणगवेसा य, छण्णंगाणं पलोइया । जा यऽण्ण एवमादी य, अज्जा सा णाणुकुट्ठिता ॥१४१॥२॥ आहारे उवहिंमि य गतीएँ सयणासणे सरीरे य । भासाएँ बाउसाणं जा जहिं आरोवणा भणिया ॥३॥ वासावासं वसति तु एक्किया तह गामअणुगामं । दूइज्जती वियारं विहार भिक्खादि एक्का य ॥४॥ दीहं करेइ गोयर दोच्चमुक्कससगाणि मग्गंती । चित्तलियादिनियंसण अजुत्तउवही भवति एसा ॥५॥ इरियभासेसणादानिक्खेवे निसिरणे अणाउत्ता । अणपुच्छाए गच्छइ जत्थिच्छाए य सच्छंदा ॥६॥ गेहेसु गिहत्थाणं गंतूणं कहा कहेति काहीया । तरूणादी अहिवडंते अणुजाणति जा उ सा पडिणी ॥७॥ थद्धा जच्चाइमयाइएहिं सुहसील दुट्ठसीलत्ति । सिव्वणबंधणमादिसु वेयावच्चं गिहीण करे ॥८॥ उक्कस्सवत्थपत्तादिएहिं संसत्तभाव संसत्ता । अहवावि गिहत्थेसुं पाउरणादीसु अविभत्ती ॥९॥ भत्तं वा पाणं वा निक्खिवती बाउसा उ जा धुवति । अभिक्खं तु हत्थपादे कक्खंतरगुज्झमादीणि ॥२११०॥ सण्णिहिंसनिचए चेव कुणइ जा अप्पणो अणट्ठाए । अप्पं वावि अणट्ठा संचयं जा य करणं तु ॥१॥ जंतादिसाल तह वट्ठकोट्ट एमेव सोल ठाणाणि । जा गच्छइ एतेसुं अणायतणगवेसिता सा उ ॥२॥ गुज्झंगाणि पलोए अप्पणो अहवावि जा उ पुरिसाणं । उक्कोसगमाहारं एसति उवहिं च उक्कोसं ॥३॥ गच्छति सविलासगती सयणिज्ज सतूलियं सबिब्बोयं । उव्वट्ठेइ सरीरं सिणाणमादी व जा कुणति ॥४॥ भमुहुक्खेवादीहिं सविकारं भासति य सविलासं । एमादि अणरिहा तू पच्छित्तं वावि सट्ठाणं ॥५॥ तत्थ पुण ताव इणमो पच्छित्तं भण्णई समासेणं । देंतगधरेंतगाणं अगीतमादीण दोण्हंपि ॥६॥ अबहुसुते अगीयत्थे णिसिरेज्ज गणं तु अहव धारेज्जा । तद्देवसितं तस्स उ मासा चत्तारि भारियया ॥७॥ सत्तरत्तं तवो होइ. ततो छेदो पधावती । छेदेण छिन्नपरिताए, ततो मूलं ततो दुगं ॥८॥ एक्केक्कं सत्त दिणे दाउ तवेऽतिच्छिए ततो छेदो । जत्तो तवो आरद्धो पणगादिकडो व जहिं केइ ॥९॥ तुल्ला चेव य ठाणा तवछेदाणं व्हं (हवं) ति दोण्हंपि । पणगादिपणगवट्ठी दोण्हवि छम्मास निट्ठवणा ॥२१२०॥ किं कारणं न कप्पति गणहरो अबहुस्सुतो अगीयत्थो ? भण्णइ से पच्छित्त जयणं च ण जाणए काउं ॥१॥ दिट्ठतो णट्ठेणं अजाणमाणेण जाणएणं च । कायव्वो इत्थ इणमो परूवणा तस्सिमा होइ ॥२॥ गेयम्मि अहिणवम्मि य सरसंचाराण कुहरणासुं च । कुणइ विवच्चासं खलु जह

णट्टमसिक्खितो णट्टो ॥३॥ तह कुणति विवच्चासं अग्गीतो सव्वकरणजोगेसु । सुत्तथमजाणंतो नाणे तह दंसण चरित्ते ॥४॥ जह नट्टगीयवाइयविजाणओ जुंजए समं तालं । सुत्तं तु विजाणंतो तह कुणती सम्मकरणं तु ॥५॥ किं पुण सो नवि जाणइ जं कुणती सव्वहिं विवच्चासं ? भण्णइ सुणसू इणमो जं कुणती सो विवच्चासं ॥६॥ ठाणणिसीयतुयट्टणपेहणपप्फोडणे तहा सयणे । भासा सुद्धग्गहणे जे अण्णे परूबिया ठाणा ॥७॥ उवदिसिउं णवि जाणइ सामायारिं तु ठाणमादीयं । अज्जावि जा अगीता ण जाणए सावि तह चेव ॥८॥ अप्पच्छंदिओ लुद्धो, परिभूओ य पत्थिओ । बहुलोहमोहसण्णो, अज्जावग्गो दुरणुकद्धो ॥१४२॥९॥ पाएणमप्पंछंदा महग्घदाणेण लोभित अकिच्चं । कुव्वंति छगलियाविव परिभूताआ य सव्वस्स ॥२१३०॥ मंसादिपेसियाविव संजतिवग्गो हु पत्थणिज्जो उ । धिज्जाइयदिट्ठीसुं बहुसुं बहुमोहसण्णाओ ॥१॥ मज्जायविप्पहूणे मज्जायाए य संपउत्तम्मि । पडिसेहोऽणुण्णा ऊ मग्गधर विलोमता चउरो ॥२॥ जम्हा उ दुपरियट्टो अज्जावग्गो उ तेण पडिसेहो । परियट्टणे अज्जाणं मज्जायाविप्पहूणस्स ॥३॥ मज्जायसंपउत्तो अज्जापरियट्ट्यओ अणुण्णाओ । परियट्टए अजोगे उवट्टिए चउगुरू सोही ॥४॥ मग्गधरो आयरिओ सो पुण सिढिलेइ जो मज्जायं । तस्सुवदेसो कीरइ मज्जायाए दढो होस ॥५॥ उवदेससार पडिसारणा य तेण पर तिण्णि मास लहू । छंदे अवट्टमाणं अप्पच्छंदं विवज्जए ॥६॥ दिट्ठंता य इमेसिं पढमा मासलहुगावि दिज्जंति । छगणोल्लपट्थरूंचणअवराहे सूरिसु कमेणं ॥७॥ आयरणे उवदेसो अकप्पपडिसेवणे य उवदेसो । विकहादिपमाएसु य मा वट्टह एस उवदेसो ॥८॥ णिद्दाइपमादाइसु सइं तु खलियस्स सारणा होइ । णणु कहिय ते पमाया मा सीदसु तेसु जाणंतो ॥९॥ तद्विवसं बीए वा सीदंतो वुच्चए पुणो तइयं । अण्णं वेल ण सज्झं भिक्खण्णादीहिं संमत्तं ॥२१४०॥ फुडरक्खे अचियत्तं गोणो उ दितो व मा हु पेल्लिज्जा । सज्झं अओ ण भन्नइ पसन्नचित्ते ततो सारे ॥१॥ भण्णति दिण्णुवदेसो तुब्भं बितियं च सारित्तमहेहिं । एगवराहो ते सृ बितियं पुण ते णवि सहामो ॥२॥ ताहे पुणोऽवराहे कयम्मि पच्छित्तं देति मासलहुं । भण्णइ य सुणेहेत्थं दिट्ठतो तेणएणं तु ॥३॥ गोणादिहरणगहिओ मुक्को य पुणो सहोढ संगहिओ । उल्लोल्लछगणहारी न मुच्चती जायमाणोऽवि ॥४॥ पुणरवि कतावराहे मासलहुं चेव देति से सोही । भन्नति घट्टिज्जंतं च (त) क्कंत्थं दुट्ट तह तुमंपि ॥५॥ पुणरवि अवरद्धम्मिं मासो चिय तेसि दिज्जते दंडो । पाणो सो संपत्तो अइरूचियकुंकुमं तइयं ॥६॥ तेण पर णिच्छुभवं कुलगणथेरादि तस्स कुव्वंति । अयमण्णोऽवि णियमो भण्णइ तू जस्सिमे दोसा ॥७॥ अप्पच्छंदियलुद्धं, गिलाणं दुपडिजग्गं । वामं सगव्वितं णच्चा, संवासोऽवि ण कप्पति ॥१४३॥८॥ उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छायाणाए मग्गस्स । मग्गधरउवालंभे मासा चत्तारि भारियया ॥९॥ आयरियाणं छंदे ण वट्टती अप्पच्छंदिओ सो उ । आहारादुक्कोसं लद्धं अत्तट्टि लुद्धो उ ॥२१५०॥ जो उ गिलाणो अपत्थं मग्गइ सो होइ दुपडिज्जग्गो उ । ठाइसु भणिओ वच्चइ वच्चति य ठाइ वामो सो ॥१॥ जच्चादिमादिएहिं करेति गव्वं तु परिभवति अन्नं । नाणादीया मग्गो परूवणा अन्नहा तेसिं ॥२॥ नाणादिसु सीदंतो न सुद्धमग्गं तु जो परूवेति । एसो मग्गच्छदो वड्ढती दीहसंसारं ॥३॥ एतेसिं तु विवेगो मग्गधरा खलु कुलादिया थेरा । तेहिं उवलद्धाणं उवट्टियाणं गुरू चउरो (मासा) ॥४॥ बालाणं बुद्धाणं भिक्खुमाईणं चेव सव्विसिं । संखेवेण महत्थो उवएसो कीरई इणमो ॥५॥ कप्पे सुत्तथविसारएण थामावहारविजढेण । भत्तादिलंभडलंभे सक्कारजढेण होयव्वं ॥१४४॥६॥ कप्पेति थेरकप्पे सुत्तथविसारएण साहूण । सव्वत्थेसू सबलं ण गूहियव्वं समत्थेण ॥७॥ आहारमादिएहिं दद्धं धायारमादि पुज्जंते । साहू अपुज्जमाणे ण एव मणसा विचिंतंज्जा ॥८॥ पूइज्जंती अजया वयं तु सव्वण्णुमग्गमोइण्णा । हा कह णु न पुज्जामो ? न करे मणदुक्कडं एवं ॥९॥ सक्कारपुरक्कारे परीसहे उ अहियासऊ एवं । जूरंते णऽहियासिओ तम्हा सुमणेण हायव्वं ॥२१६०॥ वीसइविहकप्पो ऊ एसो खलु वण्णिओ समासेणं बायालकप्पमहुणा गुरूवएसेण वोच्छामि ॥१॥ दव्वे भावे तदुभय करणे वेरमणमेव साहारो । निव्वेस अंतर णयंतरे य ठिय अट्टिए १० चेव ॥१४५॥२॥ ठाण जिण थेर पज्जुसणमेव सुत्ते चरित्तमज्झयणे । उद्वेस वायण पहिच्छणा य २० परियट्टणुप्पेहा ॥१४६॥३॥ जायमजाए चिण्णमचिण्णे संधा (ठा) णमेव चयणे य । उववाय णिसीहे या ३० ववहारे खेतकाले य ॥१४७॥४॥ उवही संभोगे लिंगकप्प पडिसेवणा य अणुवासे । अणुपालणा अणुण्णा ४० ठवणा कप्पे ४२ य बोद्धव्व ॥१४८॥५॥ एतेसि तु पयाणं पत्तेय परूवणं पवक्खामि । तहियं तु दव्वकप्पो इणमो उ समासओ होति ॥६॥ पंचणहं असणादीण पणुवीसति हि भवे विसोहीओ । अहवावि उ

चउदसया एत्तो तिगवद्धिया सोहि ॥७॥ असणं पाणं वत्थं पायं सिज्जा य पंच एतेसिं । सुद्धी पणुवीसइया उग्गम तह एसणाए य ॥८॥ सुरणाणपमाणेण उ गहिय असुद्धेऽवि होइ सुद्धो उ । अहवावि उ छद्दसया सोलस उप्पायणादोसा ॥९॥ एएसिं सव्वेसिं हणपयणकिणादिणवहिं कोडींहिं । कयकारियाणुमोदित एसा तिगवद्धिया सोही ॥२१७०॥ दंसणनाणचरित्ते तवपवयणसव्व (च्च) समिति तिहिं गुत्तो । हतरागदोसनिम्ममखमदमनियमट्ठिओ निच्चं ॥१॥ तदुभयकप्पो अहुणा एते चिय दव्वभावकप्पा उ । दोण्णिवि मिलिया एते तदुभयकप्पो इमो सो य ॥२॥ आहारे अट्ठविहे सेज्जोवहिं पंच पंचग विसोही । दंसणचरित्तगुत्तो तवसमितिगुणेहिं सोहे (हो) ति ॥३॥ असणादीओ चउहा उवकारि चउव्विहो य तस्सेव । एसऽट्ठविहाहारो परूवणा तस्सिमा होइ ॥ल० १४५॥४॥ असणं तु ओदणादी तदुवकारी उ खीरकुसणादी । पाणं तु पाणमेव उ कप्पूरादी उ उवकारी ॥ल० १४६॥५॥ खाइम फलाइयं तू सुत्ता (ण्ठा) दी होति तदुवकारी उ । साइम तंबोलादी चुण्णादी तदुवकारी उ ॥ल० १४७॥६॥ एवं आहारादी उग्गमउप्पायणेसणासुद्धे । उप्पाए दंसणादीहिं जुत्तो अहवा तदट्ठाए ॥७॥ विरती य अविरती या विरयाविरती य तिविह करणं तु । एक्केक्कं होइ दुहा आहे य अभिग्गहे चव ॥१४९॥८॥ विरतीकरणं ओहे पंचेव महव्वया भवंती उ । होति अभिग्गहकरणं पिंडविसुद्धादि णेगविहं ॥९॥ अहवा ओहे संजमो विभागओ होइ सत्तरसभेदो । अविरति असंजमोहे अट्ठारस अभिग्गहे इणमो ॥२१८०॥ पाणइवाए मोसे अदत्त मेहुण परिग्गहे चव । कोहमाण (मय) मायलोभे पेज्जे दोसे तहा कलहे ॥१॥ अब्भक्खाणे पेसुन्न अरति रई चव मायमोसे य । मिच्छादंसणसल्ले अट्ठारस अभिग्गहे एस ॥२॥ विरताविरतीए पुण ओहेण अणुव्वया भवे पंच । उत्तरगुणा अभिग्गह हवंति सिक्खावता सत्त ॥३॥ एत्थं पुण अहियारो विरतीकरणेण होइ दविहेणं । जह तेसु अतीयारो न होति तह ऊ पयतियव्वं ॥४॥ उज्जामरक्खियाणं महव्वयाणं कओ हवति पीला ? । भन्नति आहारादिहिं तिहिं पीडा होतऽसुद्धेहिं ॥१५०॥ल० ॥१४८॥५॥ उज्जम उज्जोओ खलु एतेणं रक्खियाण उ वयाणं । पीला उवघाओ खलु भवति कहं पुच्छती सीसो ॥६॥ भण्णति आहारोवहिसेज्जा एतेहिं तिहिं असुद्धेहिं । उग्गमदोसादीहिं उ पीला संजायति वयाणं ॥७॥ तम्हा उ उग्गमादीहिं विसुद्धाऽऽहारमादिया कज्जा । वेरमणकप्प एसो एत्तो साहारणं वोच्छं ॥८॥ सेज्जुवहिज्झाय आहारमेव साहार तह य अणुकंपा । आदिपणं तु तुल्लं भइयं अणुसासणाए उ ॥१५१॥९॥ सेज्जुवहिज्झायआहार पसिद्धा एते होंति चत्तारि । साहारणकप्पो पुण मूलगुणा उत्तरगुणा य ॥२१९०॥ साहारणत्ति किं पुण सेज्जादुप्पादगाण सव्वेसिं । सामण्णगुणा ते ऊ तम्हा साहारणं जाण ॥१॥ आदिपणं तु तुल्लंति जाण सेज्जाति जाव साहारं ठियमट्ठियाण दोण्हवि एए खलु होंति तुल्ला उ ॥२॥ अहवा तिपणग मूलगुण पंचेते होंति दोण्ह तुल्ला उ । समणाण व समणीण व तम्हा साहारणं जाणे ॥३॥ भइयमणुसासणंती अणुकंपऽणुसासणन्ति एगट्ठा । कोइ कदाइ अणुउणो ण तरति अणुसासणं काउं ॥४॥ सुहभारियत्तणेणं होति विसुद्धो य अंतरप्पा से । तस्सवि होंति वताइं पंचवि साहाराणं तु ॥५॥ आणा तित्थगराणं सामण्णा संजयाण सव्वेसिं । सुहुमेवि तप्पमाए अणुसासणं कुणइ जो उ ॥६॥ तेण अणुकंपिया णिच्छएण जम्हाणुस (उ उ) ट्ठिता होंति । तेणऽणुकंपऽणुसट्ठी (सऽणुसट्ठऽकंपा) एगट्ठा होंति नायव्वा ॥७॥ साहारकप्प एसो अहुणा वोच्छामि णिव्विसणकप्पं । जह निव्विसंति समणा सम्मं तु गुरूवएसेणं ॥८॥ नाणं च दंसणं वा तहा चरित्तं च समितिगुत्तीओ । क्कासीतिपदेहिं निव्विस निव्वेसणाकप्पो ॥९॥ छव्विहकप्पादीया बायालंता उ पंचवी एते । मेलीणा उ भवंती एक्कासीयं भवे भेदा ॥२२००॥ नवरं छव्विहकप्पे वीसतिकप्पे य णामठवणाओ । मोत्तुं सेसा सव्वे एक्कासीइं तु मेलीणा ॥१॥ एए सव्वे सम्मं निव्विसमाणस्स निव्विसणकप्पो । एतेसिं पुण कतरा महिद्धिओ होइ सव्वेसिं ? ॥२॥ सव्वेऽवि हु चरणविसोहिकारगा तहवि अत्थि हु विसेसो । सद्दहणाचरणाए भइत्तं पुण पालणाए उ ॥३॥ सद्दहणाकप्पो या आचरणा चव दो पहाणतरा । अहवा सद्दहण च्चिय सद्दहिउं जो ण आयरति ॥४॥ भइयमणुपालणत्ति य सद्दहिऊणंपि ण तरई कोई । अणुपालेउं अज्जा तम्हा खलु सो ण पव्वावे ॥५॥ णिव्विसणकप्पो एसो एत्तो वोच्छामि अंतराकप्पं । संखेवपिंडियत्थं गुरूवएसं जहाकमसो ॥६॥ पंचट्ठाणमसंखा बारसगं चव तिण्णिवि तियाणं । अज्झत्थनाणकरणट्ठयाएँ सो अंतराकप्पो ॥१५२॥७॥ सामादिसंजतादी पंचह चरणं तु

तेसि एक्केक्संजमंठारमसंखा एक्केक्के तत्थ ठाणम्मि ॥८॥ होंति अणंता चारित्तपज्जवा ताणऽसंखगुणियाणि । एक्कं संजमकंडग कंडगसंखा य छट्टाणा ॥९॥
छट्टाणाऽसंखेज्जा संजमसेढी उ होइ बोद्धव्वा । सामादिछेदसंजमठाणा गंतुं असंखेज्जा ॥२२१०॥ परिहरिसंजमठाणा ताहे लग्गंति तेऽवि उ असंखा । गंतूण होंति
छिन्ना ताहे तत्तो पुणो परओ ॥१॥ वड्ढंति जा असंखा सामाइयछेदसंजमट्टाणा । सामादिछेदटाणा ताहे छिन्ना भवंती उ ॥२॥ तो सुहुमरागठाणा तेऽवि असंखेज्ज गंतु
वोच्छिन्ना । तस्स अपच्छिमठाणं अणंतगुणवड्ढियं नियमा ॥३॥ एक्कं परमविसुद्धं होइ अहक्खायसंजमट्टाणं । पंचमसंखत्ति गतं बारसगं बार पडिमाओ ॥४॥
सुद्धपरिहार चउरो अणुपरिहारीवि णवम कप्पठितो । एते तिन्नि तिया खलु एतेसिं एक्कमेक्कस्स ॥५॥ अंतरसंजमठाणा होंति असंखा उ तेसि सव्वेसिं । होइ दुविहा उ
सोही करणे अज्झत्थओ चैव ॥६॥ ता दोवि य कायव्वा नाणट्टाए सुतोवउत्तेण । एसो अंतरकप्पो णयकप्पमियाणि वोच्छामि ॥७॥ सव्वेसिंपि णयाणं आदेसणयंतरंति
सट्टाणे । एस नयंतरकप्पो पुव्वगतविसालमादीसु ॥१५३॥८॥ सव्वेवि णेगमादी आदिस्सति जो णयो उ साऽदेसो । णयतो अन्नेवि णओ णयंतरं होइ नायव्वं ॥९॥
सट्टाणे सट्टाणे सव्वे बलिया हवंति सव्विसते । एसो णयकप्पो ऊ पुव्वगतम्मी समक्खाओ ॥२२२०॥ उप्पदपुव्व विसालं तं आदिं काउ सव्वपुव्वेसु । भणिओ य
णचविभगो एत्थं चोदेति अह सीसो ॥१॥ कम्हा कालियसुत्ते न नपावि समो परंति उ ? कहं वा । णचविगलहोति साहण मोक्खस्स उ ? भण्णति सुणाहि ॥२॥
णयवज्जिओवि हु अलं दुक्खयकारओ जइजणस्स । चरणकरणाणुओगो तेण उ पढमं कयं दारं ॥३॥ आयारपकप्पधरो कप्पव्ववहारधाओ अज्जो ! णयसुत्तवज्जिओऽवि
हु गणपरियट्टी अणुण्णाओ ॥१५४॥४॥ पच्छित्तकरण अणुपालणा य भणिया उ कप्पव्ववहारे । एण अत्थधारी गणधारी जो चरणधारी ॥५॥ अज्जोत्ती आमंतण
निद्वेसे वा णयस्स सुत्ताइं । जाइं तु दिट्ठिवाते पच्छित्तं दिज्जए तह उ ॥६॥ तेहिं विणावि जाणइ आयारपकप्पधारओ जम्हा । तम्हा उ अणुत्ताओ गणपरियट्टी उ सो
नियमा ॥७॥ करणाणुपालगाणं तु पज्जवकसिणं समासओ णाणं । करणाणुपालणदुत्तं पज्जवकसिणं भवे तिविहं ॥१५५॥८॥ दुत्तिपणछक्ककणयंतरेसु सोलस हवंति
ठाणाइं । करणट्टाण पसत्था करणट्टाणा उ अपसत्था ॥१५६॥९॥ एयाइं ठाणशइं दोहिंवि गाहिहिं जाइं भणियाइं । तेसिं परूवणमिणमो समासओ होइ बोद्धव्वं
॥२२३०॥ करणं तु किया होई पडिलेहणमादि सामयारी उ । तं पालिज्जइ नाणेण तं च दुविहं मुणेयव्वं ॥१॥ पज्जवकसिणसमासो पज्जवकसिणं तु चोदस उ पुव्वा ।
सामाइयं पकप्पो होइ समासो मुणेयव्वो ॥२॥ पज्जवकसिणं तिविहं सुत्ते अत्थे व तदुभए चैव । एमेव समासोऽवि हु तेहिं उ पालिज्जए चरणं ॥३॥ तस्स णएहिं मग्गण
ते उ समासेण होंति दुविहा उ । दव्वट्ठिपज्जवट्ठित णया तु अविसेसितविसिट्ठा ॥४॥ वण्णादिसमुदियं तू दव्वट्ठी दव्वमिच्छए णियमा । तं चैव पज्जवणओ दव्वाइवि
सेसियं इच्छे ॥५॥ अहवावि तिन्निवि णया दव्वट्ठित पज्जवट्ठित गुणट्टी । पज्जायविसेसच्चिय सुहुमतारागा गुणा होंति ॥६॥ एगगुणकालगादिसु परिसंख गुणठिओ उ
णायव्वो । दव्वाओ गुणाऽणणे गुणा विसेसत्ति एगट्टा ॥७॥ आदिल्ला तिण्णि णया एक्को बितिओ य होइ अज्जुसुओ सट्टादि तिण्णि वेक्को तिण्णि णया होंति एवं वा
॥८॥ अहवावि णिगमसंगहव्वहारूज्जुसुए होंति चउरेते । सट्टणय तिण्णि एक्को पंच णया होंति एवं तु ॥९॥ अहवावि होज्ज छक्कं णिगमो संगहिओ असंगाही ।
संगाहितो संगहं तू ववहार पविट्ठुऽसंगाही ॥२२४०॥ तम्हा उ संगहणओ ववहारो चैव होइ उज्जुसुओ सट्टो य समभिरूढो एवंभूओ य छक्क णया ॥१॥ एते पुण
सव्वेऽवी दुग तिग पण छक्क मेलिया संता । सोलस णयंतराइं समासओ होंति एयाइं ॥२॥ जइ कुणइ दवियकप्पं एतेहिं णयंतरेहिं तु विसुद्धं । करणट्टाण पसत्था ते
खलु होंती मुणेयव्वा ॥३॥ अकरेते अपसत्था कप्पे सणयंतरे समक्खाओ । कप्पे ठितमठिते पुण वोच्छामऽहुणा समासेणं ॥४॥ संघयणवज्जिओवि हु दुक्खक्खयकारओ
पणग जाओ । संघयणसमग्गस्सवि अजाय चउरो अमोक्खाए ॥५॥ पंच उ महव्वयाइं पणगं तेसिं तु जो करे पयत्तं । जाओ जो निप्फन्नी अजाओ णियमा अनिप्फण्णो
॥६॥ ठितमठिते व कप्पे संघयणेणावि जो विहीणो उ । सो कुणइ दुक्खमोक्खं जो पुण ण करे पयत्तं तु ॥७॥ पंचसु महव्वएसुं संघयणेणं तु जइवि संपन्ने । सो
चउगइसंसारे भमई ण व पावई मोक्खं ॥८॥ अहुणा उठाणकप्पो उद्धट्टाराइओ मुणेयव्वो । ठियकप्पसंजयस्सविऽणण्णाओ अट्ठितस्सावि ॥९॥ एवं जिणकप्पोवि उ
ठितकप्पे अट्ठिए यऽणुण्णाओ । एमेव थेरकप्पो ठितमठिते होतिऽणुण्णाओ ॥२२५०॥ पज्जूवासणकप्पो सुत्ते कप्पो तहा चरित्ते य । अज्झयणुद्वेसम्मि य कप्पो तह

वायणाए य ॥१॥ कप्पो पडिच्छणाए परियट्टणुपेहणाएँ कप्पो य । ठियमट्टिएसु दोसुवि एते सव्वे भवे कप्पे ॥२॥ जातमजाओ अहुणा दोणिवि एते समं तु वच्चंति । जायं निप्फन्नंतिय एगट्ठं होइ नायव्वं ॥३॥ जातमजातं करणं जाते करणे गती तिहा छिण्णा । अज्जाते करणम्मि उ अन्नतरीतं गतीं जाइ ॥४॥ जाय खलु निप्फन्नं सुत्तेणऽत्थेण तदुभएणं च । चरणेण य संजुत्तं वइरित्तं होइ अज्जातं ॥५॥ जातकरणेण छिन्ना नरगतिरिक्खा गती उ दोन्नी भवे । अहवा तिहा उ छिन्ना णरगतिरिक्खा मणुस्सगती ॥६॥ देवेसुवि तिण्णि गती छिन्ना वेमाणिएसु उववत्ती । चउसुवि गतीसु गच्छति अन्नतरि अजातकरणेणं ॥७॥ एसो आतमजाए कप्पोऽभिहितो इदाणि वक्खामि । आइणमणाइन्ने कप्पं तु गुरुवएसेणं ॥८॥ आहारचउक्के करण फासणे खेत्तकालउवगरणे । आइण्णे आइन्नं तव्विवरीए अणाइण्णं ॥१५७॥१॥ आहारचउक्कं खलु असणादीयं तु होइ णायव्वं । करणं आयरणं तू तस्स उ जं जत्थ आइण्णं ॥२२६०॥ पिसित्तं सिंधूविसए डाइं (यं) पुण उत्तरावहाइण्णं । तंबोलं दमिलेसुं एमादी खेत्तमाइण्णे ॥ल० १४९॥१॥ काले दुब्भिक्रवादिस पलंबमादी तु सव्वमाइण्णं । उवगरणे आइण्णं वोच्छंमि अओ समासेणं ॥ल० १५०॥२॥ सिंधू आउलियाइं काला कप्पा सुरट्टविसयंमि । दुगुल्लादि पुंडवद्धाणि महरट्टेसुं च जलपूरा ॥ल० १५१॥३॥ एवं जत्थाइण्णं तहियं तू कप्पती उ आयरिउं । इतरतथ कारणम्मी फासण गहणं च परिभोगो ॥ल० १५२॥४॥ आइण्णे चउवग्गे ण य पीलाकारओ पवयणे य । ण य मइलणा पवयणे णाइण्णं आयरे कप्पं ॥५॥ आहार उवहि सेज्जा सेहा चउवग्गो होइ णायव्वो । पवयणपीलुवघाओ पिसियाई मज्जपाइत्ति ॥६॥ चोदेइ का मइलणा ? भण्णइ पडिसेहियारि जं सेवे । सा होइ मइलणा ऊ जो पुण सुपरिट्ठिओ चरणे ॥७॥ तण्णा सलाहेइ वण्णेइ गुणेहिं एस जुत्तोत्ति । सुट्टु करे अप्पहितं जो पुण करणे अजुत्तो उ ॥८॥ तं दट्ठं संहो उप्पज्जइ किण्णु एस सच्छंदो । आओ णं उवएसो एरिसओ देसिओ समए ? ॥९॥ आह जिणकप्पियाणऽवि आइण्णं किंचि अत्थि अह नत्थि ? । भण्णइ न अत्थि किं पुण आयरे जिणकप्पियाइण्णं ॥२२७०॥ आहारउवहिदेहे निरवेक्खो नवरि निज्जरापेहि । संघयणाविरियजुत्तो आइण्णं आयरइ कप्पं ॥१॥ दंसणनाणचरित्ते तवे य तह भावणासु समितीसु । छण्हंपि तिप्पगारं सद्दह संधाण साहणता ॥२॥ सद्दहति सम्मदंसण आयरति परूवणं च कुणमाणो । संधाणकप्प एसो एवं सेसाणवी णेयं ॥३॥ संधाणकप्प एसो भणिओ उ समासओ जिणक्खाओ । संखेवसमुद्धिट्ठं एत्तो वोच्छं चरणकप्पं ॥४॥ आहार उवहि सेज्जा तिकरणसोहीएँ जाहिंह परितंतो । परिगहितविहाराओ तो चवती विसयपडिबद्धो ॥१५८॥५॥ कोई विसेसं बुज्झति पसत्थठाणा अहं परिब्भट्टो । अंधत्तेण कोई ण बुज्झए मंदधम्मत्ता ॥६॥ दव्वे भावे अंधो दव्वे चक्खुहिं भावें ओसण्णो संविग्गत्तं ण रोयति णितियाण पहाणमिच्छंतो ॥७॥ जुत्तो जुत्तविहारी तं चेव पसंसए सुलहबोही । ओसन्नविहारं पुण पसंसए दीहसंसारी ॥८॥ आहार उवहि सेज्जा नीयावासेऽवि तिकरणऽविसोही । तह भावंधा केई इमं पहाणंति घोसंति ॥९॥ नीयाइविहारम्मिवि जइ कुणती निग्गहं कसायाणं । तस्स हु भवते सिद्धि अवितहसुत्ते भणियमेयं ॥२२८०॥ बहुमोहेवि हु पव्विं विहरेत्ता संवुडे करे कालं । सो सिज्झइ अविय इमे पुरिसज्जाया भवे चउरो ॥१॥ नाणेणं संपण्णो णो उ चरित्तेण एत्थ चउभंगो । तेणेसेव पहाणो एवं भासंति निद्धम्मा ॥२॥ तम्हा उ ण एयाइं कुज्जा आलंबणाइं मइमं तु । कुज्जाहिं पसत्थातिं इमासं आलंबणाइं तु ॥३॥ तित्थगराणं चरियं चरियं कसिणंगपारगाणं च । जो जाणइ सद्दहती ओसन्नं सो न रोएइ ॥१५९॥४॥ धुवसिज्झियव्वगम्मिवि तित्थगरो जइ तवम्मि उज्जमति । किं पुण तवउज्जोगो अवसेसेहिं ण कायव्वो ? ॥५॥ चोद्वसपुव्वी कसिणंगपारगा तेसि जो उ उज्जोगो । तं जो जाणइ सो खलु संविग्गविहार सद्दहतो ॥६॥ एमादी आलंबण काउं संविग्गत्तं न रोएति । को पुण ओसन्नत्तं रोएति ? भन्नइ इमो तु ॥७॥ सुत्तत्थतदुभए अकडजोगि ओसन्नरोयओ होज्जा । अहवा दुग्गहियत्थो अहवावी मंदधम्मत्ता ॥१६०॥८॥ अन्नाणियऽकडजोगी दुग्गहियत्थो उ जेण अववादो । गहिओ णवि उस्सग्गो गहिते वा मंदधम्मो उ ॥९॥ सो रोए ओसण्णे इति एसो वन्निओ चयणकप्पो । उववादकप्पमहुणा वोच्छामि जहक्कमेणं तु ॥२२९०॥ पंचहिं ठाणेहिं वियट्टिऊण संविग्गसङ्ख्याजुत्तो । अब्भुज्जत्तं विहारं छवेइ उववायकप्पो सो ॥१६१॥१॥ उववयणं उववातो पासत्थादी य पंच ठाणाओ । तेसु विविहं तु वट्ठितो वियट्ठीतो होइ णायव्वो ॥२॥ संवेगसमावण्णो पच्छा उ उवेइ उज्जयविहारं । एस

उववायकप्पो णिसीहकप्पं अओ वोच्छं ॥३॥ चउहा निसीहकप्पो सद्वह अणुपालणा गहण सोही । सद्वहणाविय दुविहा ओहे निसीहे विभागे य ॥१६२॥४॥ ओहेति हत्थकम्मं कुणामाणे रागमूलिया दोसा । गिण्हणमादि विभागे अहवोहो होइ उस्सग्गो ॥५॥ अववादो हु विभागो सव्वंऽपेयं तु सद्वहंतस्स । सद्वहणाए कप्पो होइ अकप्पो पुण इमो हु ॥६॥ मिच्छत्तस्सुदएणं ओसन्नविहारताएँ सद्वहणा । गणहरमेइं ओहं ण सद्वहती णो णिसीहं तु ॥७॥ ओसन्नाण विहाइं सद्वहति सुविहियाण गणमेइं । न उ सद्वहती णो खलु हस अकप्पो उ ॥८॥ जाणि भणियाणि सुत्ते पुव्वावरबाहियाणि वीसाए । ताणि अणुपालयंतो सव्वाणि णिसीहकप्पो उ ॥९॥ सुत्तत्थतदुभयाणं गहणं बहुमाणविणयमच्छेरं । चोद्वसपुव्विनिबद्धे कप्पे गहियम्मि गणहारी ॥२३००॥ तिविहो य पकप्पधरो सुत्ते अत्थे य तदुभए चेव । सुत्तधर मोत्तु तइओ बितिओ वा होइ गणहारी ॥१॥ तिग पणग पणग छक्कं अट्टग णवगं च जस्स उवलद्धं । ठवणाकरणं दाणं च सो हु वियाणाहि ॥१६३॥२॥ नाणाईणं तियगं पणगं ववहारो होइ पंचविहो । बितिय पणग पंच वता छक्कं पुण होंति छक्काया ॥३॥ आलोयणारिहगुणे अट्ट उ अहवावि सोहि अट्टविहा । आलोयणतादीयं मूलंतं जाणती जो तू ॥४॥ आलोयणमादीयं अणवट्टतं तु णवविहं होति । पारंचितंतमहवा दसविहे होती चसद्वेणं ॥५॥ ठवणारो वणकरणं सफला मासा करेतु जो जाणे । सो होति दाणअरिहो तव्विवरीओ अणरिहो उ ॥६॥ किह पुण तं दायव्वं पायच्छित्तं तु ? पुच्छए सीसो । भण्णइ इमेण विहिया दायव्वं तं जहाकमसो ॥७॥ ओहेण उ सट्टाणं सट्टाणविभागता पवित्थारो । पच्छित्तपुरिसहेऊ किंति ? ण संती चरणमादी ॥८॥ ओहे सट्टाणंति य जह चउगुरू होइ रायपिंडम्मि । सट्टाणविभागे पुण ईसरमादी मुणेयव्वो ॥९॥ जह वा करकम्मम्मि य ओहेणं होइ मासगुरूयं तु । होइ विभागपसंगो दिट्ठादीओ मुणेयव्वो ॥२३१०॥ पुरिसज्जातं णाउं च दिज्जए जं च जारिसं वत्थुं । गुरूमादिबलियदुब्बलहट्टलिगाणादि जं जोग्गं ॥१॥ हेऊ कारण निक्कारणे य जंयणादिसेवियं जह उ । चोदेति किंनिमित्तं पच्छित्तं दिज्जए ? सुणसु ॥२॥ पायच्छित्ते असंतम्मि, चरित्तं तु न चिट्ठए । चरित्तम्मि असंतम्मि, तित्थे णो सचरित्तया ॥३॥ तित्थम्मि य असंतम्मि, णेव्वाणं तु न गच्छती । णेव्वाणम्मि असंतम्मि, सव्वा दिक्खा निरत्थिया ॥४॥ एवं निसीहकप्पो चउहा तू वण्णिओ समासेणं । ववहारकप्पमहुणा गुरूवएसेण वोच्छामि ॥५॥ ववहारे कोइ भिक्खू सच्चित्तनिवातनिद्धमहुरेहिं । ववहरती ववहारं वितहं सो संघमज्झम्मि ॥६॥ कोइ बहुस्सुय भिक्खू अपुव्वनगरम्मि कंचि ववहारं । णाएणं छिंदिता वत्थव्वेहिं पमाणकतो ॥७॥ अह पच्छा सच्चित्तं खुड्डाई तस्स केणई दिण्णं । वसही पाउरणं वा वरऽम्ह पक्खं ववहरेउ ॥८॥ घयतिल्लादी णिद्धं खंडगुलादीहिं वावि संगहितो । सव्वाहि (अच्चालि) एहिं ताहे ववहरए पक्खवाएणं ॥९॥ दुट्टववहारिणं को उ णिसेहिज्ज ? तो वदे संघो । एयट्ट संघमेलो कीरइ इणमो सयं (य सं) पत्तो ॥२३२०॥ अण्णो तहिं तु गीतो संघसमत्तीए तिण्णि वारा उ । उच्चारे सिद्धपुत्तो तत्थ य मेरा इमा होइ ॥१॥ घट्टम्मि संघसद्वे घुलीजंघोऽवि जो ण एज्जाहि । कुलगणसंघसमाए लग्गइ गुरूए व चउमासे ॥२॥ जं काहिंति अकज्जं तं पावति सति बले अगच्छंतो । अण्णा (आणा) इया व ओहावणादि तेसिं च जं कुज्जा ॥३॥ सोऊणं संघसद्वं धूलीजंघेवि होति आगमणं । धूलीजंघनिमित्तं ववहारो उवट्टितो होइ ॥४॥ सोऊण संघसद्वं धूलीजंघो उ आगओ संतो । वितहं ववहारमाणे साहू समएण वारेइ ॥५॥ निद्धं महुर निवातं कितिकम्म विजाणएसु जंपंतो । सच्चित्त खेत मीसे अत्थधर णिहोड दिसहरणं ॥६॥ भिक्खू य मुसावादी ववहारे तइयगम्मि उद्वेसे । सुत्तं उच्चारती अह बहु पक्खा इमं होइ ॥७॥ रागेण व दोसेण व पक्खग्गहणम्मि एक्कमिक्कस्स । कज्जम्मि कीरमाणे किं अच्छइ संघ मज्झत्थो ? ॥८॥ रागेण व दोसेण व पक्खग्गहणेण एक्कमेक्कस्स । कज्जम्मि कीरमाणे अण्णोऽवि भणेउ ता कोई ? ॥९॥ कुलगणसंघट्टवणं इहं ण याणामि देसिओ मि अहं । अण्णेणवि ता केणइ कप्पइ इह जंपिउं किंचि ? ॥२३३०॥ संघेण अणुण्णाते अह जंपति सो ताहें गुणसमिद्धो । ववहारनीइकुसलो अणुमाणंतो तयं संघं ॥१॥ संघो महाणुभावो अहं च वेदेसिओ इहं भंते ! संघसमितिं ण जाणे तं भे सव्व (व्वे) खमावेमि ॥२॥ देसे देसे ठवणा अन्ना अन्नाय होइ समिती य । गीयत्थेहऽभिणातं विदेसिओऽहं ण जाणामि ॥३॥ अणुमाणेत्ता एवं ताहेऽणुण्णाए जंपए इणमो । परिसाववहारिण य इमे गुणे ऊ समासेणं ॥४॥ परिसा ववहारी वा मज्झत्था रागदोसणिहुयावि । जति होंति दोवि पक्खा ववहरिउं तो सुहं होति ॥५॥ वुत्तेवऽत्थधरेणं जति

उ ववहारिणा उ जंपेजा । नूनं तुम्हें मण्णइ मज्झं सव्विक्कवयणांति ॥६॥ सेसा उ मुसावादी सच्चपरिब्भट्टगा उ किं सव्वे ?। भण्णइ सुणेह एत्थं भूतत्थमिणं समासेण ॥७॥ ओसन्नचरणकरणे सच्चववहारता दुसद्धिया । चरणकरणं जहंतो सच्चववहारयंपि जहे ॥८॥ जइया अणेण चत्तं अप्पणयं नाणदंसणचरित्तं । तइया तस्स परेसु अणुकंपा नत्थि जीवेसुं ॥९॥ भवभयसहस्सदुलहं जिणवयणं भावओ जहंतस्स । जस्स ण जातं दुक्खं न तस्स दुक्खं परे दुहिए ॥२३४०॥ आयारे वट्टंतो आयारपरूवणे असंकियओ । आयारपरिब्भट्टो सुद्धचरणदेसणे भइओ ॥ल० १५४॥१॥ तित्थगरे भगवंते जगजीववियाणए तिलोगगुरु । जो उ करेति पमाणं सो उ पमाणं सुयधराणं ॥२॥ तित्थयरे भगवंते जगजीववियाणए तिलोगगुरु । जो उ करेति पमाणं सो उ पमाणं सुयधराणं ॥ल० १५५॥३॥ संघो गुणसंघातो संघो य विमोयओ य कम्माणं । रागद्वोसविमुक्को होइ समो सव्वसाहूणं ॥ल० १५६॥४॥ परिणामियबुद्धीए उव्वेओ होइ समणसंघो उ । कज्जे णिच्छित्तकारी सुपरिच्छयकारओ संघो ॥५॥ एक्कसि दुवे व तिण्णि व पेसविते ण एइ परिभवेणं तु । आणाइक्कमणिज्जूहणाउ आउट्टववहारो ॥६॥ आसासो वीसासो सीतघरसमो य होति मा भाती (हि) । अम्मापीतिसमाणो संघो सरणं तु सव्वेसिं ॥७॥ सीसो पडिच्छओ वा आयरिआ वा न सोग्गइं णेति । जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥८॥ सीसो पडिच्छओ वा आयरिओ वावि ते इहं लोगं । जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥९॥ सीसो पडिच्छओ वा कुलगणसंघा ण सोग्गइं णेति । जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥२३५०॥ सीसो पडिच्छओ वा कुलगणसंघो व एति इहलोए । जे सच्चकरणजोगा ते संसारा विमोएंति ॥ल० १५७॥१॥ सीसे कुलिच्चाएँ गणिच्चए व संघिच्चए य समदरिसी । ववहारसंथवेसु य सो सीतघरोवमो संघो ॥२॥ गिहिसंघातं जहिउं संजमसंघाततं समुवगम्म । नाणचरणसंघातं संघाएन्तो हवइ संघो ॥३॥ णाणचरणसंघातं रागद्वोसेहिं जो विसंघाते । सो संघाए अबुहो गिहिसंघातम्मि अप्पाणं ॥४॥ नाणचरणसंघातं रागद्वोसेहिं जो विसंघाए । सो भमिही संसारं चउरंतं तं अणवयग्गं ॥५॥ दुक्खेण लभति बोहिं बुद्धोवि य न लभते चरित्तं तु । उम्मग्गदेसणाए तित्थगरासायणाए य ॥६॥ उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छादणाए मग्गस्स । बंधइ कम्मरयंमलं जरमरणमणंतरगं घोरं ॥ल० १५८॥७॥ पंचविहं उवसंपद नाऊणं खेत्तकालपव्वज्जं । तो संघमज्झयारे ववहरियव्वं अणिस्साणं ॥८॥ निदरिसणं तत्थ इमे तगराणगरीय सोलसायरिया । अण्णायणायकारी तत्थऽव्ववहारि अट्ट इमे ॥९॥ मा कित्ते कंकडुयं कुणिमं पक्कुत्तरं च चव्वा (वच्चा) इं । बहिरं च गुंठसमणं अबिलसमणं च निद्धम्मं ॥२३६०॥ कंकडुओविव मासो सिद्धिं ण उवेति तस्स ववहारो । कुणिमणिहो व ण सुज्झइ दुच्छिज्जो एव बितियस्स ॥१॥ पक्कुल्लाव भयाओ कज्जंपि ण सेसतं उदीरेति । पादेणं आउत्तिय उत्तरसोवाहणेणंति ॥२॥ रोमंथयते कज्जं चव्वा (वच्चा) दी नीरंविवऽसणेत्ति । कहिए कज्जे संते बहियो व भणाति ण सुतं मे ॥३॥ मरहट्टलाडपुच्छा केरिसया लाड ? गुंठ ! साहिस्सं । पावारभंडिछुभणं दसियागणणं पुणो दाणं ॥४॥ गुंठादी एवमादीहिं हरति मोहित्तु तं तु ववहारं । अंबफरूसेहिं अप्पो ण णेति सिद्धिं च ववहारो ॥५॥ एते अकज्जकारी तगराए आसि तम्मि उ जुगम्मि । जेहि कता ववहारा खोडिज्जंतऽण्णरज्जेसु ॥६॥ इहलोगमि अकित्ती परलोए दुग्गई धुवा तेसिं । अण्णाएँ जिणिंदाणं जे ववहारं ववहरंति ॥ल० १५९॥७॥ बत्तीसं तु सहस्सा गच्छो उक्कोसओ य उसभंमि । बहुगच्छुवग्गहकरा इत्तियमित्ताण जत्थ संथरणं ॥ल० १६०॥ कित्तेऽहं पूसमित्तं धीरं सिवकोट्टुत्तिं च अज्जा (ज्झा) सं । अहरण्णग धम्मण्णग खंदिल गोविंददत्तं च ॥८॥ एते उ कज्जकारी तगराए आसि तम्मि उ जुगम्मि । जेहिं कता ववहारा अक्खोभा अन्नरज्जेसु ॥९॥ इहलोगम्मिवि कित्ती परलोगे सुग्गई धुवा तेसिं । आणाएँ जिणिंदाणं जे ववहारं ववहरंति ॥२३७०॥ तहियं पुण केरिसएण जंपियव्वं तु होइ समणेण ?। भण्णइ सुणसू इणमो जारिसएणं तु वोत्तव्वं ॥१॥ पारायणे समत्ते थिरपडिवाडी पुणोवि संविग्गो । जो निग्गओ विदिण्णे गुरुहिं सो होति ववहारी ॥१६४॥२॥ मूल पारायणं पढमं, बितियं च दु (बहु) भेतिमं । ततियं च निरवसेसं, जइ सुज्झेति गाहगो ॥३॥ सुत्तत्थो खलु पढमो बितिओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ । ततियो य निरवसेसो एस विही होइ अणुओगे ॥४॥ पडिणीय मंदधम्मो जो निग्गओ अप्पणो सकम्महिं । ण हु होइ सो पमाणं असमत्तो दसनिग्गमणे ॥५॥ आयरियादेसाऽवारिएण सत्थेण गुणितइ (स) रिएण । तो संघमज्झयारे ववहरियव्वं अणिस्साए ॥६॥ आयरियअणादेसा वारिएण सच्छंदबुद्धिरतिएणं । सच्चित्तखित्तमीसे जो ववहरती ण सो धण्णो ॥७॥ सो अभिमुहेइ लुद्धो संसारकडिल्लगम्मि

अप्पाणं । उम्मग्गदेसणाए तित्थगरासायराए य ॥८॥ उम्मग्गदेसणाए संतस्स य छायाणाए मग्गस्स । उम्मग्गदेसग्गस्स मासा चत्तारि भारियया ॥९॥ परिवार वुह्ठ धम्मकह वादि खमए तहेव नेमिती । विज्जा राइणिया इडिढगारवो अट्टहा होइ ॥२३८०॥ एमादिगारवेहिं अकोविया जे उ तत्थ भासिज्जा । ते वत्तव्वा इणमो न तुज्झ भागो इहं वोत्तुं ॥१॥ बहुपरिवारो भन्नति जय परिवारेण होज्ज कज्जं तु । तह (य) परिवारं दिज्जसु वुह्ठो पुण भण्णई इणमो ॥२॥ लोणेण जत्थ समयं ववहारयं तु तत्थ हुज्जाहि । तत्थ तुमं जंपिज्जसु धम्मकही भण्णइ इमं तु ॥३॥ जहियं धम्मकहाए कज्जं तहियं तुमं भणिज्जासि । वादी जत्थ उ वादिप्पओयणं तत्थ भासिज्जा ॥४॥ खमगो भन्नइ इणमो देवयकज्जं जहिं भविज्जाहि । असिवादिकारणेहिं तत्थ तुमं तं करिज्जासि ॥५॥ विज्जासिद्धो भण्णइ विज्जाए जत्थ संघकज्जम्मि । कज्जं होज्ज करेज्जसु रायणिओ भण्णइ इमं तु ॥६॥ वेले कितिकम्मस्स उ अणुवट्टंताण वंदणं अमहं । कु (लि) ज्जाहिं तुमं गंतुं इह पुण गीयस्स विसओ उ ॥७॥ ण हु गारवेण सक्का ववहरिउं संघमज्झयारम्मि । णासेई अगीयत्थो अप्पाणं चव गच्छं च ॥८॥ णासेई अगीयत्थो चउरंगं सव्वलोगसारंगं । णट्टम्मि य चउरंगे ण हु सुलभं होइ चउरंगं ॥९॥ थिरपरिवाडीहिं बहुसुएहिं संविग्गणिस्सियकरेहिं । कज्जम्मि भासियव्वं अणुओगे गंधहत्थीहिं ॥२३९०॥ मादी य मुसावादी बितियं ततियं वयं च लोवेति । मायी य पावजीवी असुतीलित्ते कणगदंडे ॥१॥ आभवते पच्छित्ते ववहारो समासतो भवे दुविहो । दासु य पणगं पणगं आभवन्ते अहीकारो ॥२॥ सच्चित्तो य मीसओ खेत्तकालनिप्फण्णो । पंचविहो ववहारो आभवन्तो उ णायव्वो ॥१६५॥३॥ सेहम्मि उ सच्चित्तो अच्चित्तो हवति वत्थमादीओ । मीसो सभंडगाणं खेत्तम्मि उ गाममादीहिं ॥४॥ नगरादसखित्ते पुण वसहीए तत्थ मग्गणा होइ । काले उदु वासासु य आभवणा होइ णायव्वा ॥५॥ अहवाऽऽभवन्तमण्णो उवसंपयखेत्तकालपव्वज्जा । नाऊण संघमज्झे ववहरियव्वं अणिस्साणं ॥६॥ सुत सुहदुक्खे खित्ते मग्गे विणए य पंचहा होइ । सव्वावि य एयाओ सुयणाणमणुप्पवत्तीओ ॥७॥ जत्थ उ सुओवसंपद तत्थ उ सव्वा हवंति (वि होन्ति) एयाओ । अहवा सुओवदिट्ठा । ण तु सेच्छाए हवंतेया ॥८॥ गुरूसीसपडिच्छाणं तिणहवि के कस्स किंचुवकरेइ ? । वेयावच्चगमागम काले चिंतादि दव्वे य ॥९॥ सीसो आयरियस्स उ वेयावच्चं तु कुणइ जाजीयं । जहिं गच्छइ तहिं वच्चति पेसेइ व जत्थ तहिं जाइ ॥२४००॥ कज्जं समाणइत्ता ई लब्धं च सव्वमप्पेति । कायव्वुवग्गहो ऊ नाणादीएहिं गुरूणाऽवि ॥१॥ दव्वे सच्चित्तादीलाभो सीसस्स जो तहिं होति । सोवि य जावज्जीवं सव्वो गुरूणो उ आभवति ॥२॥ कुणती पाडिच्छोवि उ वेयावच्चं तु असणमादीहिं । वच्चइ य पमाणेणं कालेणं रोयती जाव ॥३॥ गेणइ वा जव सुतं ता कुणई सव्वमेव पाडिच्छो । एत्तो दव्वे वोच्छं जं आभवती उ पाडिच्छे ॥४॥ जं होइ नालबद्धं अभिसंधारेतंगं तंगं एति । संदेसदिण्णगं वा णामे चिंधे य काले य ॥५॥ वल्लीऽणंतर संतर अणंतरा छज्जणा इमे होंति । माता पिता त भाता भगिणी पुत्तो य धूया य ॥६॥ मातुं माया य पिया भाता भगिणी य एव पिउणोऽवि । भाउभगिणीणऽवच्चा धूतापुत्ताणवि तहेव ॥७॥ पारंपरवल्लि एसा जइ तं धारे पडिच्छगस्सेव । अह णो अभिधारेती सुयगुरूणो तो उ आभव्वा ॥८॥ संगारो पुव्वकओ पच्छा पाडिच्छओ उ सो जाओ । तेण णिवेदेयव्वं उवट्ठिता पुव्वसेहा मे ॥९॥ एवइएहिं दिणेहिं उब्भ सगासं अवस्स एहामो । संगारो एव कतो चिंधाणि य तेसिं चिंधेइ ॥२४१०॥ कालेण य चिंधेहि य अक्सिंवादीहिं तस्स गुरूणिहरा । कालम्मि विसंवदिए पुच्छिज्जति किं न आओ सि ? ॥१॥ संगारिददिवसेहिं जइ गेलणादि दीवयति तो उ । तस्सेव अह तु भावो विपरिणओ पच्छ पुण जाओ ॥२॥ ता होइ गुरूस्सेव तु एवं सुयसंपदाए भणितं तु । सुहदुक्खुवसंपन्ने एत्तो लाभं पवक्खामि ॥३॥ वट्टसु मम सुहदुक्खे अहंमवि उब्भे तु एवमुवसंपे । पुरपच्छसंथुया ऊ सो लभती जे य बावीसं ॥४॥ सुहदुक्खसंपएसा एत्तो खेत्तोवसंपदं वोच्छं । खेत्तोग्गहो सकोसं वाघाए वा अकोसं तु ॥५॥ पत्ते उग्गह साहारणे य वासे तहेव उदुबद्धे । सव्वदिसासु सकोसं निव्वाघाएण पत्ते उ ॥६॥ अडविजलतेणसावतवाघाते एगदुत्तिचउसुं वा । होज्ज अकोसो उग्गहो अहुणा साहारणं वोच्छं ॥७॥ साहारण होज्जाहि पडिलेहणपुव्वपच्छनिग्गमणे । पुव्वं पच्छा पत्ते आयरिए वसभअज्जासु ॥१६६॥८॥ दुगमादीगच्छाणं पडिलेहणिग्गयाण समगं तु । पत्ता खेत्तं एसो पढमगभंगो मुणेयव्वो ॥९॥ समगंनिग्गम एक्के पच्छा पत्ता य बितियओ भंगो । पच्छा निग्गय पुव्वं पविट्ठ पच्छा य दुहत्तोवि ॥२४२०॥ पढमभंगे जो खलु पुव्विं तु अणुन्नवेति ते खेत्ती । समगं पुणऽणुन्नविए सामन्नं होइ दोणहंपि ॥१॥ बितियभंगे दप्पेण पुव्वि पत्ता उ जइ णुऽणुणवंति ।

इयरेसिं असढाण य अणुन्नवेताण खेत्तं तु ॥२॥ पुरनिग्गता कहां पुण पच्छा पत्ता उ ते हविज्जाहि ?। गेलण्णखमगपारणवाघातो अंतर हविज्जा ॥३॥ गेलण्णवाउलाणं तु, खेत्तमण्णस्स णो दए । निसिद्धो खमओ चैव, तेण तस्स न लब्भती ॥४॥ अंतरवाघाएणं पच्छा पत्ताण पुव्वि जे पत्ता । असढेहि अणुन्नवितं पुव्विं पत्ताण तं खित्तं ॥५॥ अह समगमणुन्नविए काउ पमादंपि ता उ साहारं । एवं तु बितियभंगो अहुणा ततियम्मि वोच्छामि ॥६॥ पच्छावि अत्थियाणं सभावसिग्घगतिणो भवे खेत्तं । एमेव य आसन्ने दूरद्धाणा व पत्ताणं ॥७॥ भंगे चउत्थगम्मी पुव्वाणुण्णाएँ असढभावणं । पढमगभंगसरिच्छा आभवणा तत्थ नायव्वा ॥८॥ पुव्वगहिअेवि उग्गहो होति गिलाणहुताए जहियव्वो । अह होज्जा संथरणं कालक्खेवो दुपक्खवि ॥९॥ पुव्वट्ठितखेत्तीणं जइ आगच्छे गिलाणइत्तऽण्णे । जइ दोण्ह असंथरण तो निग्गमो खेत्तियाणं तु ॥२४३०॥ अह दोण्हवि संथरणं दोण्हिवि इच्छंति जा गिलाणो उ । एते य दुन्नि पक्खा अहवा समणा य समणीओ ॥१॥ गिलाण उवहीकिच्चा भत्तोवहिलुद्धताऽविह्गहितं । पेल्लंती परखेत्तं साहम्मियतेणिया तिविहा ॥२॥ उवही णियडी माया गिलाणणिस्साएँ विज्जमाणेवि । छट्टेतु एंति खित्ते भत्तोवहिलुद्धताए उ ॥३॥ लब्भंति सुंदराइं गिलाणणियडीएँ एंति तो तत्थ । इरेवि गिलाणोत्तीकाउं तओ णेति खेत्ताउ ॥४॥ तेसुं तु निग्गएसुं सच्चित्तादी उ तिविहं जं गेण्हे । तं तेसि होति तेण्णं पच्छित्तं चैव तिविहं तु ॥५॥ जे पुण असंथरंता एंति तहिं तेमिसा भवे मेरा । आयरियवसभअज्जाण चैव वोच्छं समासेणं ॥६॥ अच्छंति संथरे सव्वे, वसभो नीई असंथरे । जत्थ तुल्ला भवे दोवि, तत्थिमा होति मग्गणा ॥७॥ निप्फण्ण तरूण सेहे जुंगियपातच्छिणासकरकण्णा । एमेव संजईणं णवरं वुड्ढीसु णाणत्तं ॥१६७॥८॥ परिवार अणिप्फन्नो अच्छति निप्फण्णतो उ निग्गच्छे । अच्छंति वुड्ढ तरूणा य णिंति सहे असेहिल्ले ॥९॥ (निंति) अच्छंति जुंगिता तु णिंतियरे अहव जुंगिता दोवि । तत्थाइल्ला अच्छे समणीण तरूणीओ ॥२४४०॥ समणाण य समणीण य अच्छंती संजईउ नियमेणं । जेण बहुपच्चवाता अणुंकंपा तेण समणीणं ॥१॥ संथारे भत्तसंतुट्ठा, तस्स लाभम्मि अप्पभू । जुंगितमादीएसुं, वयंति खित्ती ण ते जेसिं ॥२॥ दुयमादीगच्छाणं खित्ते साहारणम्मि वसियव्वे । अप्पत्तियपडिसेहत्थया (इ ता) ए मेरा इमा तत्थ ॥३॥ अत्थि बहु वसभगामा कुदेसनगरोवमा सुहविहारा । बहुगच्छुवग्गहकरा सीमच्छेदेण वसियव्वं ॥४॥ आयरियउवज्झाया दुहिं तिहिं सहिया उ पंचओ गच्छो । एव तु गच्छा तिन्नि उ उदुबद्धे संथरे जत्थ ॥५॥ वासासुं तिचउजुया आयरियउवज्झ सत्तओ गच्छो । एव तु गच्छा तिन्नि उ वासासुं संथरे जत्थ ॥६॥ कालदुयंमिवि एवं जहण्णयं होइ वासखेत्तं तु । बत्तीसं तु सहस्सा गच्छो उक्कोस उसभम्मि ॥७॥ बहुगच्छुवग्गहकरा एत्तियमेत्ताण जत्थ संथरणं । ऊणा अणुवग्गहिता सीमच्छेदं अओ वोच्छं ॥८॥ तुभंऽतो मह बाहिं तुभ सचित्तं ममेतरं वावि । आगंतुयवत्थव्वा थीपुरिसकुलेसु व विसेसो ॥९॥ वेगो सकोसजोयण मूलनिबंधे अणुम्मयंतेण । सच्चित्ते अच्चित्ते मीसेऽविय दिण्णकालम्मि ॥२४५०॥ सेसत्ती निस्साहारणंमि मूलक्खेत्त अणुंमुयंतेणं । होइ सकोसं जोयण दिसविदिसासुं तु सव्वत्तो ॥१॥ एवं खेत्तओ एसो कालओ उदुबद्धि होइ मासो उ । वासासु चउम्मासो एवतिकालो विदिण्णो उ ॥२॥ एवइकाल विदिण्णं पुण्णे निक्कारणम्मि तेण परं । ण उवग्गहो विदिण्णो मोत्तूणं कारणमिमेहिं ॥३॥ असिवादिकारणेहिं दुविहऽतिरेगेऽवि उग्गहो होइ । जा कारणं तु छिण्णं तेण परं उग्गहो ण भवे ॥४॥ जइ होइ खेत्तकप्पो असती खेत्ताण होज्ज बहुगावि । खेत्तेण य कालेण य सव्वस्सवि उग्गहो णगरे ॥५॥ सति लंभे खेत्ताणं जोग्गाणं जो उ जत्थ संथरति । सो तहियं संचिक्खे खेत्ताण असती पुण बहुंपि ॥६॥ एगत्थ उ गामादिसु जहियं तू संथरंति तहिं अच्छे । सव्वेसिं तहिं उग्गहो साहारण होति जह णगरे ॥७॥ एसा खेत्तवसंपद पुरपच्छासंथुए लभति एत्थ । तह मित्तवयंसा या जं च लभ सुतोवसंपन्ने ॥८॥ मग्गोवसंपदाए मग्ग देसेइ जाव सो तस्स । लभती दिट्ठाभट्ठादि जो य लाभो पुरिल्लाण ॥९॥ विणओवसंपदा पुण कुव्वति विणयं तु जो उ रायणिए । सव्वं तस्साभवती जो उ उवट्ठायती तस्स ॥२४६०॥ उवसंपद इच्चेसा पंचविहा वन्निया समासेणं । खेत्तम्मि परे खित्ते णिक्खमिओ जो उ होज्जाहि ॥१॥ काले उदु वासं वा वसिऊणं निग्गयाण जो अण्णो । पढमबितियदिवसेसू निक्खामे कालओ एसो ॥२॥ इच्चेसो पंचविहो ववहारो आभवंतिओ णांमं । पच्छित्ते ववहारो जह दस (पढ)मुद्देस ववहारे ॥३॥ अहुणा उ खेत्तकाला तेवि उ तत्थेव भणित ववहारे जं तत्थ उ तस्सेसं तम्हं

वोच्छं समासेण ॥४॥ दुविहे विहारकाले तिविहा सोही उ उवहिभत्ताणं । दिण्णे जतंत सोही अविदिण्णट्टाएँ आवण्णे ॥१६८॥५॥ उदुबद्धे वासासु य विहारकालो उ होइ दुविहेसो । उग्गम उप्पायण एसणा य एसा तिविह सोही ॥६॥ उदुबद्ध मास वासासु होंति चउरो विदिन्नकालो उ । एत्थ जयंता जइवि हु आवज्जे तहवि सुद्धा उ ॥७॥ मासा चउमासा पुण संवसमाणा उ तत्थ अतिरित्तं । म (ल) ञ्गंति जयंतावि हु किमु अजयंता उ ? किंचउण्णं ॥८॥ उदुबद्धवासवासं अणुवसमाणो असुद्धभत्तुवही । आयरियप्पमाणा गुणप्पमाणं च समणाणं ॥९॥ उग्गममादी दोसा असेवमाणोवि सो उ आवण्णशे । जम्हा दोसायतणं उरम्मि थावेत्तु संवसति ॥२४७०॥ कत्थेयं भणियंतिय ? भन्नति आयरिएण किमायारे ?। आयारपकप्पे ऊ आयारि भवंतु आयारी ॥१॥ जे भिक्खु णितियवासं वसंइत्ती एत्थ भणिय सुत्तम्मि । एयं पमाण उभये अइरित्ते यावि जे दोसा ॥२॥ जदि पुण बहिया हाणी तहिं वड्ढि गुणाण तत्थ अच्छंति । के पुण गुणादि भणिया ? भन्नति नाणादिया होंति ॥३॥ कालातीते दोसा दव्वक्खओ होइ अच्छमाणाणं । तम्हा उ ण चिट्ठिज्जा अतिरित्तं दुविहकालम्मि ॥४॥ निद्वय अणुकंपाए गिहिणं तो णाम ण वसहा तुब्भे भण्णति ण होति एवं मा साहूणं चरणभेदो ॥१६९॥५॥ चोदेताहारादिसु सुज्झंतेसूडवि णाम जं तीए । तत्थ ण चिट्ठइ तण्णाम णिद्वयत्तेण गहियाणं ॥६॥ मा पाविहिंति धम्मं गिहिणो साहूण फासुदाणेणं । इय णिद्वयता अहवाइहलोगणुकंपया तेसिं ॥७॥ मा दव्वक्खओ होही अणुवासे णिच्चसाहुदाणेणं । इय अणुकंपिहलोए भण्णइ ण उ एवमादीहिं ॥८॥ मा होज्ज चरणभेदो पुण्णातीतंमि संवसंताणं । अतिचिरसंवासेणं सिणेहमादीहिं दोसेहिं ॥९॥ एसो उ कालकप्पो एवं वक्खाणिओ समासेणं । अहुणा उ उवहिकप्पं गुरूवएसेण वोच्छामि ॥२४८०॥ उवगेण्हति उवकारं करेइ उवहीयतेण उवही उ । किं कारणं तु उवही उद्विसिओ ? भण्णती सुणसु ॥१॥ जीवाणउणुग्गहट्टा एवं खलु वन्निओ इहं तित्थे । काऊणउणुग्गहपदं पडिणीयपदे अभावो उ ॥२॥ रसयादणुकंपट्टा अगणीमादीण चेव रक्खट्टा । असहूणउणुकंपट्टा य उवहीयगहणं जिणा बेंति ॥३॥ आह जहउणुग्गहट्टा वत्थादीगहण देसियं समए । तो असहूणं कम्हा थीपरिभोगो णउणुण्णाओ ? ॥४॥ भण्णइ पवित्ति कम्हिउवि कम्हिउवि पुण होति अपवित्ती उ । संजमपडिणीयत्ता मेहुणमादीण नाणुण्णा ॥५॥ नाणचरणट्टियाणं उवग्गहं कुणति नाणचरणाणं । आहारउवहिसेजजा तेण उ उवहित्तणं बेंति ॥६॥ जस्स पुणोवहि गहिता उवघातकरी उ तस्स उवघातो । कह उवघात करेती ? अइरित्तगहो य मुच्छा य ॥७॥ संथरमाणो गेण्हति अतिरित्तं उवहि जो भवे समणो । वण्णादिजुते मुच्छति इट्टाहारे धुवस्सेवं ॥८॥ एतेसु अणिट्टेसु य जो दुस्सति से करेस उवघातं । नाणादीणं तिण्हं तम्हा ते वज्जिए हेतु ॥९॥ जो जत्थ जदा जहियं उवही परिभोगओ अणुण्णाओ । सो तत्थ अणइचारो अणुण्णाते चरणभेदो ॥२४९०॥ जह सिंधूओ कप्पो ओराला उण्णिया अणुण्णाता । पिसियादीण य गहणं खीरादीणं चउणुण्णातं ॥१॥ अतिहिमदेसे य तहा कारणितगताण सिसिरकालम्मि । परिभुंजंताण य को विवाद ? चरणे अणुवघातो ॥२॥ लाडविसयादिएसुं एतेसिं चेव भोत्तुं पडिसेहो । पडिसिद्धे परिभोगं कुणमाणो भंजती चरणं ॥३॥ नाणंपि उ सो भिंदइ उवदेसं जेण ण कुणती तस्स । जं नाणपुव्व दंसण दंसणभेदावि तो तेणं ॥४॥ निवदिक्खितमतरंतादिएसु कज्जेसु होइ परिभोगो । समणुन्नाओ कसिणादियाण इहरा अणुवभोगो ॥५॥ एसो उ उवहिकप्पो अहुणा संभोगकप्प वोच्छामि । तस्स पसाहणहेंउ गाहासुतं इमं आह ॥६॥ णवि राया णवि दोसा संभोगविही उ वण्णिओ सुत्ते । नाणचरणट्टियाणं भणियं सुयनाणपुरिसेहिं ॥१७०॥७॥ रागेणं संभुंजति सिणेंहओ तेहिं सद्धिं मम पीती । जच्चादणुवसमे (गे) ण व दोसेणेवं ण संभुंजे ॥८॥ नाणचरणे रयाणं एसुवदेसो उ वण्णिओ सत्था । तं गणहरेहिं गहियं तो ते सुतनाणपुरिसा उ ॥९॥ किं कारणं अणुण्णा ? संभोगविही उ एस साहूणं । भण्णइ नाणादीणं परिवड्ढी एव होहिति तु ॥२५००॥ अण्णोउण्णस्स सगासे नाणमहींहिंति जं च तं गहिता । होहिंति थिरा चरणे काहिंति गिलाणकिच्चं च ॥१॥ जति संभोगगुणा ते ता सव्वे कीस ण परिभुंजंति ?। भण्णति सरिसउहिगेहिं व संभोगो ण पुण हीणेहिं ॥२॥ अत्थि पुण केइ पुरिसा तिगंतिगेणं पमाय कुव्वंति । आहारउवहि सेज्जा जुत्तो संभुंजणाबंधो ॥१७१॥३॥ आहारादीतियं उग्गममादीअसुद्धगहणेणं । जे कुव्वंति पमादं तेसिं संवासदोसेणं ॥४॥ अणुमोदणपच्चतिओ मा बंधो होहिति ति तेणं तु । णवि कीरइ संभोगो तेवि य चगि (विग) ता वरं होंता ॥५॥ णणु

रागदोसियत्तं संभुंजण एग एगऽसंभोगे ?। भण्णति ण रागदोसा सुणसू जं कारणं एत्थं ॥६॥ संभुंजणा विसुद्धा उवग्गहं कुणइ नाणचरणणं । संभुंजणा असुद्धा चरित्तभेदं वियाणाहि ॥७॥ भोगेण पमाएणं तदोसाणं तु होइ समणुण्णा । एवं चरित्तभेदो किं पुण सो कुव्वति पमादं ? ॥८॥ पूयारसपडिबद्धो सुद्ध असुद्धं करोइ संभोगं । अहवावि अजाणंतो संभोगविहीएँ गुणदोसे ॥१७२॥९॥ पूजाहेतु पमादी सेवति रसहेउगं च तस्सेवी । नाणादिसुद्धकप्पं कुणइ असुद्धं तु सो एवं ॥२५१०॥ बारस मूलपदा खलु संभोगविहीय वण्णिया सुत्ते । जत्तो पावादाणं भणितं दुट्ठणं उक्खेवो ॥१॥ उवहिसुतभत्तपाणे, अंजलीपग्गहे इय । वायणाय णिकाए य, अब्भुट्ठणेतियावरे ॥ल० १६१॥२॥ किइकम्मस्स य करणे, वेयावच्चकरणेइय । समोसरण सन्निसेज्जा, कहाए य पबंधणे ॥ल० १६२॥३॥ एते बारस भेदा संभोगविहीय तू समक्खाया । पावादाणं तेसु य इमेहिं ठाणेहिं णायव्वं ॥ल० १६३॥४॥ रागदोसाणुगओ जो संभोगं तु पालए पत्तं । सो दुट्ठो णायव्वो तस्सुक्खेवो विसंभोगो ॥५॥ अहव इमेहिं तु कारणेहिं नियमा भवे विसंभोगो । संभोगोविहिं जो तू विवरीयं आयरिज्जाहि ॥६॥ उवरिम मज्झिम हेट्ठिम संभोगट्ठणणं तिहा विभए । पडिसेहे पडिसेहे समणुण्णे होइ समणुण्णो ॥१७३॥७॥ उवरिमएत्ति अहागड मज्झिमगा होंति अप्पपरिकम्मा । सपरिकम्मा हिट्ठिम संभोगविहि तिहा एसो ॥८॥ अहाकडा मिलति अहाकडेसु, भत्तं च पाणं तह धोवणं वा । अहाकडा गच्छति हिट्ठिमेसुं, ण हिट्ठिया छुब्भ अहाकडेसुं ॥९॥ मज्झिमिता हिट्ठिमते छुब्भइ न तु हिट्ठिमा उवरिमेसुं । एसो तिविहो उ भवे संभोगविही समासेणं ॥२५२०॥ पडिसेहे पडिसेहो सपरिकम्मं तु होइ पडिबद्धं । तस्स पुणो पडिसेहो उवरिल्ले मेलणा जा उ ॥१॥ पडिसेहो हेट्ठवरिं उवरिल्लो हिट्ठिमे अणुण्णाओ । अह पडिसेहि अणुण्णा होंति इमा तू मुणेयव्वा ॥२॥ जो पडिसिद्धं एयं आयरती तस्स होइ पडिसेहो । पडिसेहो विवेगुत्ती अवितहकरणे अणुण्णा उ ॥३॥ केरिसएणं तु समं संभोगो तेसि होइ कायव्वो ?। अहवावि ण कायव्वो ? भण्णइ इणमो निसामेहिं ॥४॥ णवि एस मंदधम्मे ण गिहत्थेसुं न चे अज्जासु । बावत्तरीविभत्तोऽवितरे पडिसेहणं जाणे ॥१७४॥५॥ दिज्जइ घेप्पइ य तहा केसिवी ण दिज्जए ण घेप्पइ य तहा केसिवी ण दिज्जए ण घेप्पइ उ । णवि दिज्जति घेप्पति तू णवि दिज्जति णवि उ घेप्पइ तू ॥६॥ संविग्गसंजयाणं दिज्जइ घेप्पइ य पढमभंगो उ । संजतिवग्गे दिज्जति णवि घेप्पइ कारणे बितिओ ॥ल० १६४॥७॥ गिहिअन्नतिथियाणं णवि दिज्जइ घेप्पई उ नवरं च । नवि दिज्जति नवि घेप्पइ पासत्थादीण सव्वेसिं ॥ल० १६५॥८॥ बावत्तरीविभत्तत्ति एस बारसविहो उ संभोगो । छहिं गुणिओ बावत्तरिं संभोगाणं मुणेयव्वा ॥९॥ बावत्तरी उ एसा दुगतिगचउपंचछक्कसंगुणिया । जावइय होंति भेदा विसुद्धेसु संभोगो ॥२५३०॥ पडिसेहो असुद्धेसु कप्पो संभोग एस वक्खाओ । अहुणा उ लिंगकप्पं वोच्छामि अहाणुपुवीए ॥१॥ जो पुव्विं वक्खाओ जिणथेराणं तु दोणहवी कप्पो । रूढणहकक्खमादी सो चेव इहंपि णायव्वो ॥२॥ इति एस लिंग कप्पो वोच्छं पडिसेवणाएँ कप्पं तु । जारिसयं सेविज्जति सुद्धमसुद्धं समासेणं ॥३॥ गहणपरिभुंजणाए निव्वाघाए तहेव वाधाए । वाधाए दुयगहणं निव्वाघाए य तियगहणं । १७५॥४॥ पडिसेपणा उ दुविहा गहणे परिभुंजणे य नायव्वा । एक्केक्कावि य दुविहा निव्वाघाते य वाघाते ॥५॥ वाघातम्मी सुद्धं गेणह असुद्धं च एतदुयगहणं । परिभुंजंतीवि एवं निव्वाघातम्मि वोच्छामि ॥६॥ उग्गममादीसुद्धं गेणहति परिभुंजती य तियमेयं । अहं पुण को वाघातो ? परूवणा तस्सिमा होइ ॥७॥ असिवे ओमोदरिए रायदुट्ठे भए व आगाढे । छक्कायदुगमुवादाय वाघाते निव्वघाते य ॥८॥ सुद्धमसुद्धं च जहिं अहवा सच्चित्तमीसंगं वावि । एतेसिं दोणहं तू वाघाते गहण भोगे य ॥९॥ णिव्वाघाए छण्हवि अच्चित्ताणं तु गहण कायाणं । गहियंस्स य परिभोगो तस्सेव य होइ कायव्वो ॥२५४०॥ परिभोगे वाघाते गहिए पच्छा तु होज्ज तं णातं । जह आहाकम्मंती ताहे य तयं ण परिभुंजे ॥१॥ वाघाते सेवंतो अकिच्चमेयं तु चिंतए साहू । होइ तहा निज्जरतो जे पुण इणमो समायरति ॥२॥ पूजारसपडिबद्धो ओसण्णाणं च आणुयत्तीया चरणकरणं निगुहति तं जाणऽणुयत्तियं समणं ॥१७६॥३॥ पूजारसहेउं वा बेई जह किच्चमेव एयं तु । मा मेण देहिति पुणो जह एसोऽकिच्चकारित्ति ॥४॥ अहवा ओसन्नाणं तु अणुयत्तीय बेति को दोसो । आहाकम्मादीसुं ? णवरं मा कीरउ सयं तु ॥५॥ सो गूहति चरणादी एवं तुच्छं खु तस्स सामन्नं । तम्हा उ परूवेज्जा सुद्धं मग्गं तु किंचऽण्णं ॥६॥ णिस्साणपदं पीहइ अणिस्सविहरंतयं ण रोएति । तं जाण मंदधम्मं इहलोगगवेसगं समणं

॥७॥ अहवा उम्मगो खलु णिस्साणं तं तु पीहए जो उ । तस्स उ छेदसुतत्थं ण कहे दोसा इमे तहियं ॥८॥ पंचमहव्वयभेदो छक्कायवहो य तेणऽणुण्णओ । सुहसीलचि (ऽवि) यत्ताणं कहेइ जो पवयणरहस्सं ॥९॥ पडिसेवकप्प एसो अहुणा वोच्छमणुवासणाकप्पं । अणुवास मासकप्पो वासावासो इमेसिं तु ॥२५५०॥ जिण थेर अहालंदे परिहरिते अच्च मासकप्पो उ । खेत्ते कालमुवस्सय पिंडग्गहणे य णाणत्तं ॥१॥ एएसिं पंचणहवि अण्णोण्णस्स उ चउपदेहिं तु । खेत्तादीहिं विसेसो जह तह वोच्छं समासेणं ॥२॥ णत्थि उ खित्तं जिणकप्पियाण उदुबद्ध मासकालो उ । वासासुं चउमासा वसही अममत्तअपरिकम्मा ॥३॥ पिंडो तु अलेवकडो गहणं तू एसणाहुवरिमाहिं । तत्थवि काउमभिग्गह पंचणहं अण्णतरियाए ॥४॥ थेराण अत्थि खेतं तु उग्गहो जाव जोयण संकोसं । णगरे पुण वसहीए विकाले उदुबद्धि मासो उ ॥५॥ उस्सग्गेणं भणिओ अववाएणं तु होज्ज अहिओवि । एमेव य वासासुवि चउमासो होज्ज अहिओवि ॥६॥ अममत्तअपरिकम्पो उवस्सओ एत्थ भंग चउरो उ । उस्सग्गेणं पढमो तिण्णि उ सेसाऽववादेणं ॥७॥ भत्तं लेवकडं वाऽलेवकडं वावि ते उ गेण्हंति । सत्तहिवि एसणाहिं साविक्रखो गच्छवासोत्ति ॥८॥ अहलिंदयाण गच्छे अप्पडिबद्धाण जह जिणाणं तु । णवरं कालविसेसो उदुवासे पणगचउमासो ॥९॥ गच्छे पडिबद्धाणं अहलंदीणं तु अह पुण विसेसो । उग्गहो जो तेसिं तू सो आयरियाण आभवति ॥२५६०॥ एगवसहीएँ पणगं छव्वीहीओ व गाम कुव्वंति । दिवसे दिवसे अण्णं अडंति वीहीइ नियमेणं ॥१॥ परिहारविसुद्धीणं जहेव जिणकप्पियाण णवरं तु । आयंबिल तु भत्तं गिण्हंती वासकप्पं च ॥२॥ अज्जाण परिग्गहियाण उग्गहो जा उ सो तु आयरिए । काले दो दो मासा उड्ढुबद्ध तासि कप्पो उ ॥ल० १६६॥३॥ सेसं जह थेराणं पिंडो व उवस्सओ य तह तासिं । सो सव्वोविय दुविहो जिणकप्पो चेव थेरकप्पो य ॥४॥ जिणकप्पियऽहालंदियपरिहारविसुद्धियाण जिणकप्पो । थेराणं अज्जाण य बोद्धव्वो थेरकप्पो उ ॥५॥ दुविहो य मासकप्पो जिणकप्पो चेव थेरकप्पो य । निरणुग्गहो जिणाणं थेराण अणुग्गहपवत्तो ॥६॥ उदुवासकालतीते जिणकप्पीणं तु गुरूग गुरूगा य । होंति दिणम्मि थेराणं ते च्विय लहुओ (थिराण ते च्विय लहुगलहुगा) ॥७॥ तीसं पदावराहे पुट्टो अणुवासियं अणुवसंतो । जे जत्थ पदे दोसा ते तत्थयगो समावण्णे ॥८॥ पण्णरसुग्गमदोसा दस एसणदोस एते पणुवीसं । संजोयाणादि पंच य एते तीसं तु अवराहा ॥९॥ एएहिं दोसेहिं जइ असंपत्ति लग्गती तहवि । दिवसे दिवसे सो खलु कालातीते वसंतो उ ॥२५७०॥ वासावासपमाणं आयारे उ प्पमाणितं कप्पं । एयं अणुम्मयंतो जाणसु अणुवासकप्पं तु ॥१॥ आयारपकप्पम्मी जह भणिंत तीति संवसतोवि । होइ अणुवासकप्पो तह संवसमाणऽदोसा उ ॥२॥ दुविहे विहारकाले वासावासे तहेव उदुबद्धे । मासातीते अणुवहि वासातीते भवे उवही ॥३॥ उदुबद्धिएसु अट्टसु तीतेसु तत्थ वास ण उ कप्पे । घेत्तूणं उवही खलु वासातीतेसु कप्पति तु ॥४॥ वासउदुअहालंदे इत्तरि साहारणे पुहुत्ते य । उग्गहसंकमणं वा अण्णोण्णसकासऽहिज्जंते ॥१७७॥५॥ वासासु चउम्मासो उदुबद्धे मासो लंद पंच दिणा । इत्तरिउ रूक्खमूले वीसमणट्ठा ठिताणं तु ॥६॥ साहारणा उ एते समट्ठि (मगट्ठि) याणं बहूण गच्छाणं । एक्केणं परिग्गहिया सव्वे वोहित्तिया होंति ॥७॥ संकमणमण्णमण्णस्स सकासे जइ उ ते अधीयंते । सुत्तत्थतदुभयाइं संधे अहवावि पडिपुच्छे ॥८॥ ते पुण मंडलियाए आवलियाए व तं तु गिणहेज्जा । मंडलियमहिज्जंते सच्चित्तादी उ जो लाभो ॥९॥ सो उ परंपरणं संकामति ताव जाव सट्ठाणं । जहियं पुण आवलिया तहियं पुण अंतरे ठाति ॥२५८०॥ ते पुण ठित एक्काए वसहीए अहव पुप्फकिण्णा उ । अहवावि उ संकमणे दव्वस्सिणमो विही अण्णो ॥१॥ सुत्तत्थतदुभयविसारयाण थोवे अ संतईभेदे । संकमणदव्वमंडलिआवलियाकप्पअणुवासा ॥२॥ पुव्वट्ठिताण खित्ते जदि आगच्छेज्ज अण्ण आयरिओ । बहुसुय बहुआगमिओ तस्स सगासम्मि जइ खेत्ती ॥३॥ किंचि अहिज्जेज्जाही थोवं खेतं च तं जदि हविज्जा । ताहे असंथरंता दोण्णिऽवि साहू विसज्जंति ॥४॥ अण्णोण्णस्स सगासे तेसिंपिय तत्थ विज्जमाणाणं । आभवणा तह चेव य जह भणियमणंतरे सुत्ते ॥५॥ एवं निव्वाघाते मासे चउम्मसिओ उ थेराणं । कप्पो कारणओ पुण अणुवासो कारणं जाव ॥६॥ एसऽणुवासणकप्पो अहुणा अणुपालणाएँ कप्पं तु । संखेवसमुद्धिं वोच्छामि अहं समासेणं॥७॥ मोहतिगिच्छाएँ गते णट्टे खेत्तादि अहव कालगते । आयरिए तम्मि गणे पीलादिरक्खणट्ठाए ॥१७८॥ ल० १७६॥८॥ को उ गणी ठवणिज्जो ? भण्णइ

जइ तस्स कोति सीसो उ । सुत्तत्थतदुभएहिं णिम्माओ सो ठवेयव्वो ॥ल० १६८॥९॥ असतीय तस्स ताहे ठवेयव्वा कमेणिमेंणं तु । पव्वज्ज कुले नाणे खेतते सुहदुक्खि सुत सीसे ॥ल० १६९॥२५९०॥ गुरूगुरू गुरूणं तू वा गुरूसज्जिलओ व तस्स सीसो वा पव्वज्जएगपक्खी एमादी होइ णायव्वो ॥१॥ असतीए कुलिच्चो वा तस्सऽसतीए सुएगपक्खीओ । खेत्ते उवसंपण्णे तस्सऽसतीए ठवेयव्वो ॥२॥ सुहदुक्खियस्स असती तस्सऽसतीए सुओवसंपण्णो । एवं तु बियाण तहिं सीसम्मि उ मग्गणा नत्थि ॥३॥ पाडिगच्छगणधरे पुण ठविए तहियं तु मग्गणा इणमो । सुत्तत्थमहिज्जंते अणहिज्जंते धर्मे विभागा ॥४॥ साहारणं तु पढमे बितिए खेत्तम्मि ततिए सुहदुक्खे । अणहिज्जंते सीसे सेसे एक्कारस विभागा ॥५॥ पुव्वद्धिद्वगणस्स उ पच्छुद्धिद्वं पवाययंतस्स । संवच्छरम्मि पढमे पडिच्छए जं तु सच्चित्तं ॥६॥ पुव्वंपच्छुद्धिद्वे पडिच्छए जं तु होइ सच्चित्तं । संवच्छरम्मि बितिए तं सव्व पवाययंतस्स ॥७॥ पुव्वंपच्छुद्धिद्वे सीसम्मि उ जं तु होइ सच्चित्तं । संवच्छरम्मि पढमे तं सव्व गणस्स आभवति ॥८॥ पुव्वद्धिद्वगणस्सवि पच्छुद्धिद्वं पवाययंतस्स । संवच्छरम्मि बितिए सीसम्मि तु जं तु सच्चित्तं ॥९॥ पुव्वंपच्छुद्धिद्वे सीसम्मि तु जं तु होति सच्चित्तं । संवच्छरम्मि ततिए तं सव्व पवाययंतस्स ॥२६००॥ पुव्वद्धिद्वे गच्छे पच्छुद्धिद्वं पवाययंतस्स । संवच्छरम्मि पढमे सिस्सिणीए जं तु सच्चित्तं ॥१॥ पुव्वंपच्छुद्धिद्वे सिस्सिणीए जं तु होइ सच्चित्तं । संवच्छरम्मि बितिए तं सव्व पवाययंतस्स ॥२॥ पुव्वंपच्छुद्धिद्वे पडिच्छियाए उ जं तु सच्चित्तं । संवच्छरम्मि पढमे तं सव्व पवाययंतस्स ॥३॥ खेत्तवसंपायरिओ सुहदुक्खी चेव जंति तु संठविओ । कुलगणसंधिच्चो वा तस्स इमो होति उ विवेगो ॥४॥ संवच्छराणि ति(दु)न्नि उ सीसम्मि पडिच्छयम्मि तद्विसं । एव कुलिच्चगणिच्चे संवच्छर संघ छम्मासा ॥५॥ तत्थेव य णिम्माए अनिग्गए निग्गए इमा मेरा । सकुले तिन्नि तियाइं गणदुग संवच्छरं संघे ॥६॥ ओमादिकारणेहिं दुम्मेहत्तेण वा ण णिम्माए । काऊण कुलसमायं कुलथेरे वा उवट्ठंति ॥७॥ णव हायणाइं ताहे कुलं तु सिक्खावए पयत्तेणं । ण य किंचि तेसि गिण्हइ गणो दुगं एग संघो ॥८॥ एवं तु दुवालसहिं समाहिं जति तत्थ कोइ निम्माओ । ता णंति अणिम्माए पुणो कुलादी उवट्ठणा ॥९॥ तेणेवकमेणं तू पुणो समाओ हवंति बारस उ । निम्माए विहरंती इहर कुलादी पुणोवट्ठा ॥२६१०॥ तहविय बार समाओ निम्माओ सो सि गणहरो होइ । तेण परमनिम्माए इमा विही होइ तेसिं तु ॥१॥ छत्तीसाइक्कंते पंचविहुवसंपदाएँ तोह पच्छा । पत्तं तुवसंपादे पव्वज्ज तु एगपक्खम्मि ॥२॥ पव्वजाएँ सुतेण य चतुभंगो होति एगपक्खम्मि । पुव्वाहितवीसरिए पढमासति ततियभंगेणं ॥३॥ सव्वस्सवि कायव्वं निच्छयओ किं कुलं व अकुलं वा ? । कालसभावमत्ते गारवलज्जाएँ काहितिं ॥४॥ एसऽणुपालणकप्पो अहुणाऽणुण्णातो णंदिसुत्तेहिं । सिद्धो अणुन्नकप्पो णवरेगट्ठाणि वोच्छामि ॥५॥ किमणुन्न ? कंस्सऽणुन्ना ? केवतिकालं पवत्तियाऽणुन्ना ? । आयरियत्त सुतं वा अणुणवइ जं तु साणुन्ना ॥१७९॥६॥ कस्सत्ती सीसस्स उ गुरूगुणजुत्तस्स होयऽणुण्णा उ । केवइकालपवित्ती आदिकरेणुसभसेणस्स ॥७॥ एगट्ठियाणि तीय उ गोन्नाइं हवंति नामधिज्जाइं । वीसं तु समासेणं वोच्छामी ताणिमाइं तु ॥८॥ अणुण्णा उण्णामणा णमण णामणि ठवणा पभावणो विदा(ता)रे । तदुभयहिय मज्जाता कप्पे मग्गे य णाए य ॥१८०॥९॥ संगह संवर निज्जर थिरकरणमच्छेद जीव(त) वुद्धिपयं । एपवरं चेव तहा वीस अणुणाइ णामाइं ॥१८१॥२६२०॥ अणुणव्वइत्तऽणुण्णा उण्णामिय ऊसियंति उण्णमणी । गिहिसाहूहिं णमिज्जइ तम्हा ऊ होइ नमणित्ति ॥१॥ सुतधम्मचरणधम्मे णामयती जेण णामणी तम्हा । ठविओ आयरियत्ते जम्हा उ तेण ठवणत्ति ॥२॥ ठविओ गणाहिवत्ते होइ पभू तेण पभवो सव्वेसिं । नाणादीणं होती पभवो पभुइत्ति एगट्ठा ॥३॥ आयरियत्ते पभविए तेण वियारो उ दिज्जइ गणो से । तदुभयहियंति भन्नइ इहपरलोगे य जेण हियं ॥४॥ गणधरमेर धरेती जम्हा ऊ तेण होति मज्जादा । करणिज्जो कप्पोत्ति य कप्पे गणकप्प समणे(करणा)णं ॥५॥ नाणादि मोक्खमग्गो सुत्तो(सो त)म्मि ठितोत्ति तो भवति मग्गो । जम्हा उ णायकारी णाओ वा एस तो णातो ॥६॥ दव्वे भावे संगहो दव्वे आहारवत्थमादीहिं । भावे नाणादीहिं उ संगेण्हति संगहो तेण ॥७॥ दुविहेण संवरेणं इंदियनोइंदिएहिं जम्हा उ । अप्पाण गणं च तहा संवरयति संवरो तम्हा ॥८॥ गणधारणमगिलाए कुणमाणो निज्जरेइ कम्माइं । अन्ने य निज्जरावे तम्हा ऊ निज्जरा होइ ॥९॥ वाएरिता लता इव पकंपमाणेण तरुणमादीणं । होइ थिरावट्ठंभो तरुव्व थिरकरण तेणं तु ॥२६३०॥ जम्हा उ अवोच्छित्ती सो कुणई नाणचरणमाईणं । तम्हा खलु अच्छेदं गुणप्पसिद्धं हवति णामं ॥१॥ तित्थकरेहिं कयमिणं गणधारीणं

तु तेहिं सीसाणं । तत्तो परंपरेणं आयमिणं तेण जीयं तु ॥२॥ वड्डइ य नाण चरणे गणं तु जम्हा उ तेण वुड्ढिपदं । पवरं पहाणमेयं सव्वेसिं रायदेवाणं ॥३॥ इति एसऽणुन्नकप्पो जहाविही वन्निओ समासेणं । ठवणाकप्पं एत्तो वोच्छामि । अहाणुपुव्वीए ॥४॥ तिविहो ठवणाकप्पो कुले गणे चव तह य संघे य । एतेसिं परूवणयं वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥५॥ कुलथेरेहिं गणेण व जा मेरा ठाविता भवे नियमा । सो कुलठवणाकप्पो एव गणे होइ संघे य ॥१८२॥६॥ केरिसया पुण थेरा कुलगणसंघाण होंति उ पमाणं ? भण्णइ सुणसू इणमो जेहिं गुणेहिं तु ते जुत्ता ॥७॥ कप्पा कप्पविहिणू सुत्तत्थविसारया सुतरहस्सा । जे चरणकरणजुत्ता ते सुद्धनयाण उ पमाणं ॥८॥ कप्पाकप्प विहिणू सुत्तत्थविसारया सुयरहस्सा । जे चरणकरणहीणा ते सुद्धणयाण भइयव्वा ॥९॥ नेयव्वा खलुक (अ) ज्झा असती चरणट्टियाण थेराण । हीणोवि सुयसमिद्धो मज्झत्थो होइ उ पमाणं ॥२६४०॥ कह पुण ठाविज्जंते ते उ पमाणं तु तेसु ठाणेसु । कुलगणसंघा थेरा ? भण्णइ इणमो निसामेहि ॥१॥ इच्छंकारनिउत्तो पियधम्मो तिण्ह कोइ एक्कतरो । सो होति तिगत्येरा तिगचरित्तवियाणओ वी(थी)रो ॥२॥ नाऊण गुणसमिद्धं जोगं तु कुलादिथे रठाणस्स । काऊणिच्छाकारं कुलादिणो बेंति तो इणमो ॥३॥ उब्भे होह पमाणं कुलथेरा थेरठाणजोगं तु । एवं तु कुलादीहिं तिगत्येरा ऊ ठविज्जंति ॥४॥ तिगचरितं जाणइत्ति चरित्त मज्जायमेव एगट्ठा । तं तु तहाविहि जाणइ तिण्हंपि कुलादिठाणाणं ॥५॥ पासत्थोसन्नकुसीलठाणपरिक्खतो दुपक्खेवि । सो होति तिगत्येरो तिगत्येरगुणेहिं उवउत्तो ॥६॥ पासत्थादीठाणे ण वट्ठती एस रक्खओ होइ । अहवा सति सद्धा(यसत्ती)ए पासत्थादरवि पालेइ ॥७॥ परिहुज्जंते रागादि रक्खिते साहु साहुणिदुपक्खे । अहवा अप्पाण परे तिगत्येरो संघथेरो उ ॥८॥ एसो ऊ तिगत्येरो तिगत्येरगुणेहिं होति संपन्नो । अहुणा वीसुं वीसुं कुलादिथेरे पवक्खामि ॥९॥ चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा कुलप्पहाणो उ । सो होइ कुलथेरो कुलचरियवियारओ धीरो ॥२६५०॥ पासत्थोसन्नकुसीलठाणपरिक्खतो दुपक्खेवि । सो होइ कुलथेरो कुलथेरगुणेहिं उवउत्तो ॥१॥ चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा गणप्पहाणो उ । सो होइ गणत्थेरो गणचरियवियाणओ वी(धीरो) ॥२॥ पासत्थोसन्नकुसीलठाणपरिक्खओ दुपक्खेवि । सो होइ गणत्थेरो गणथेरगुणेहिं उवउत्तो ॥३॥ चरणकरणे समग्गो जो जत्थ जदा जुगप्पहाणो उ । से होइ संघथेरो सीतघरसमो पुरिससीहो ॥४॥ एसो उ मूलसंघो आपुच्छणगमणकरणकज्जेसु । हितसुहनिस्सेसकडो कुलगणसंघऽप्पणो चव ॥५॥ दंसणनाणचरित्ते जा पुव्व परूवणाऽऽयरणा य । एसो उ मूलसंघो तिविहा थेरा करणजुत्ता ॥६॥ पुव्विंपि परूविज्जा आयारादीसु वन्नियचरित्ते । तं सम्ममायरंतो हवति तु संघो तहा थेरो ॥७॥ जो सो हीणचरित्तो अण्णस्स असतीत पुव्वभणितो उ । कुलथेराति ठविज्जति तस्सुवदेसो इमो होइ ॥८॥ होज्ज वसणसंपत्तो सररीरमायंकता असहुओ वा । चरणकरणे असत्तो सुद्धं मग्गं परूविज्जा ॥१८३॥९॥ वसणं वाजीमादी सूलजरादी तु होइ आतंको । धितिसारीरबलेणं हीणो असहू मुणेयव्वो ॥२६६०॥ एएहिं कारणेहिं अकप्पपडिसेवणं करंतो उ । सुद्धं मग्गपरूवे अप्पाहणिया अओ एत्तो ॥१॥ कप्पपणयस्स भेदा सोच्चा णच्चा तहेव घेत्तूणं । चरणकरणे विसुद्धे आयरणपरूवणं कुणह ॥२॥ आयरियसगासाओ सोच्चा णच्चा य घेत्तुमत्थेणं । हियए ववत्थवेउं आयरण परूवणा कुज्जा ॥३॥ कप्पपणगस्स भेदो परूविओ मोक्खसाहणट्ठाए । जं चरिऊण सुविहिया करंति दुक्खक्खयं धीरा ॥४॥ पंचविहसुत्तकप्पाण विभासा पमोत्तूणं । गहिया सीसहियट्ठा अव्वोच्छित्तट्ठया चव ॥२६६५॥ (सव्वसुयसमूहमयी वामकरग्गहियपोत्थया देवी । जक्खकुहंडीसहिया देतु अविग्घं भणताणं ॥१५०॥

सौजन्य :- स्टेड्स अल